# 1. श्रावण

## कृष्ण पक्ष

**पंचमी** – नाग पंचमी

**नवमी** – निडरी नवमी
(नेवले की पूजा)

**अमावस्या** – हरियाली अमावस्या

**मेले :–**

1. कल्पवृक्ष मेला – मांगलियावास (अजमेर)
2. फतेहसागर झील मेला (उदयपुर)
3. बुढ्ढा जोहड़ मेला (श्रीगंगानगर)

## शुक्ल पक्ष

**तृतीया** – छोटी तीज

- जयपुर में छोटी तीज की सवारी प्रसिद्ध है
- यह पति पत्नि के प्रेम का त्यौहार है।
- यह प्रकृति प्रेम का त्यौहार है।
- इसमें महिलाएँ ''लहरिया'' ओढ़नी ओढती है।
- सिंजारा : नवविवाहिता के लिए ससुराल पक्ष से आने वाले उपहार।

**पूर्णिमा** – रक्षाबन्धन (नारियल पूर्णिमा)
इस दिन ''श्रवण कुमार'' की पूजा की जाती है।

# 2. भाद्रपद (सबसे ज्यादा त्यौहार)

## कृष्ण पक्ष

**तृतीया** – बडी तीज

बूढी तीज

सातुडी तीज

कजली तीज

- बूँदी में बडी तीज की सवारी प्रसिद्ध है।

**षष्ठी (छठ)** :– ऊब छठ (लडकी पूरे दिन खडी रहती है अच्छे वर के लिए व्रत करती है।)

हल छठ (बलराम जयन्ती)

**अष्टमी** :– कृष्ण जन्माष्टमी

**नवमी** :– गोगानवमी (इस दिन किसान 'हल' को 9 गाँठ वाली राखी बाँधता है। )

**मेले** :– 1. ददरेवा (चुरू)

2. गोगामेडी (हनुमानगढ)

**द्वादशी/बारस** :– बछबारस (इस दिन साबूत अनाज का प्रयाग होता है, चाकू का प्रयोग नहीं होता)

**अमावस्या** :– सती अमावस्या (झुन्झूनू में रानीसती मेला लगता है।)

रानीसती का वास्तविक नाम नारायणी देवी था। इनके पति का नाम तनधन दास अग्रवाल था।

इन्हे दादीसती भी कहा जाता है।

## शुक्ल पक्ष

**द्वितीया**– ''बाबे री बीज'' (रामदेव जयन्ती)

- रूणीचा (रामदेवरा) में रामदेवजी का मेला लगता है जो द्वितीया से लेकर एकादशी तक चलता है।
- इस मेले को ''मारवाड का कुम्भ'' कहा जाता है।

**चतुर्थी** :– गणेश चतुर्थी , शिव चतुर्थी, कलंक चतुर्थी, चतरा चौथ।

**मेले** :– 1. त्रिनेत्र गणेश मेला – रणथम्भौर

2. चुंघी तीर्थ मेला – जैसलमेर

**पंचमी** :– ऋषी पंचमी (सप्त ऋषि की पूजा की जाती है।) 'माहेश्वरी समाज का रक्षाबन्धन'।

**मेले :–**

1. भोजन थाली मेला– कामां (भरतपुर)
2. हरिरामजी का मेला– झोरडा (नागौर)

**अष्टमी** :– राधाष्टमी

- सलेमाबाद (अजमेर) में निम्बार्क सम्प्रदाय का मेला होता है। (इस सम्प्रदाय के लोग राधा को कृष्ण की पत्नि मानते है।)

**दसमी** :– तेजादसमी

**एकादशी** :– जलझूलनी/देवझूलनी एकादशी (इस दिन भगवान कृष्ण को नहलाया जाता है)

**चतुर्दशी** :– अनन्त चतुर्दशी (इस दिन गणेश विसर्जन किया जाता है।)

**पूर्णिमा** :– श्राद्ध प्रारम्भ

# 3. अश्विन

## कृष्ण पक्ष

**श्राद्ध पक्ष** (16 दिन) :– (कोई मंगल काम नहीं होता है 16 दिन)

- साँझी की पूजा की जाती है। गोबर और मिट्टी की गोल आकृति की पूजा की जाती है।
- उदयपुर के 'मत्स्येन्द्र नाथ मन्दिर' को 'साँझी का मन्दिर' कहा जाता है।
- नाथद्वारा में केले की साँझी बनाई जाती है।
- श्राद्ध पक्ष के अन्तिम दिन ''थम्बुडा व्रत '' किया जाता है।

## शुक्ल पक्ष

**एकम** :– शरद नवरात्र प्रारम्भ

**अष्टमी** :– दुर्गाष्टमी / होमाष्टमी

**दशमी** :– विजयादशमी

- कोटा (राज.), मैसूर (कर्नाटक) के दशहरे प्रसिद्ध है।
- हथियारों की पूजा की जाती है।
- खेजडी की पूजा की जाती है।
    - 5 जून 1988 को खेजडी पर डाक टिकट जारी हुआ था।
- इस दिन ''लीलटांस'' को देखना शुभ माना जाता है। (कन्हैयालाल सेठिया ने लीलटांस नामक कविता लिखी।)

**पूर्णिमा** :– (शूरद पूर्णिमा, रास पूर्णिमा )

मारवाड महात्सव / मांड महोत्सव – जोधपुर

मीरा महोत्सव :– चित्तौड

# 4. कार्तिक

## कृष्ण पक्ष

**चतुर्थी** :– करवा चौथ

**अष्टमी** :– अहोई अष्टमी (सन्तान की लम्बी उम्र की कामना के लिए व्रत)

**त्रयोदशी** :– धनतेरस (धन्वन्तरी जयन्ती)

**चतुदर्शी** :– रूप चतुर्दशी

**अमावस्या** :–दीपावली

(भगवान महावीर तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस)

## शुक्ल पक्ष

**एकम** :– गोर्वधन पूजा

- नाथद्वारा में इस दिन अन्नकूट महोत्सव मनाया जाता है, तथा भील जनजाति बडी संख्या में भाग लेती है।

**द्वितीया** :– भैया दूज/यम द्वितीया

**अष्टमी** :– गोपाष्टमी

**नवमी** :– आंवला नवमी/अक्षयनवमी

**एकादशी** :– देवउठनी एकादशी/प्रबोधिनी एकादशी/तुलसी एकादशी

इस दिन ''पुष्कर मेला'' प्रारम्भ होता है।

**पूर्णिमा** :– सत्यनारायण पूर्णिमा

इस दिन कार्तिक स्नान होता है।

**मेले** :– पुष्कर मेला

कोलायत मेला (बीकानेर)

चन्द्रभागा मेला (झालरापाटन झालावाड)

रामेश्वरम मेला (स. माधोपुर)

(चन्द्रभागा मेला में मालवी नस्ल के पशुओं का क्रय–विक्रय किया जाता है)

(कोलायत में कपिल मुनि रहते थे जिन्होने सांख्य दर्शन दिया था।)

रामेश्वरम में चम्बल बनास तथा सीप नदियों का संगम है।

# 7. माघ

## कृष्ण पक्ष

**चतुर्थी** :– तिल चतुर्थी / संकटकरण चतुर्थी

**मेला** :– चौथ का बरवाडा (स. माधोपुर)

**एकादशी** :– षटतिला एकादशी (6 प्रकार के तिल का दान)

**अमावस्या** :– मौनी अमावस्या

- (इस दिन मौन रहा जाता है।)
- इस दिन ''कुंभ मेले का शाही स्नान'' होता है।

## शुक्ल पक्ष

**एकम** :– गुप्त नवरात्र प्रारम्भ

**पंचमी** :– बसन्त पंचमी (सरस्वती पूजा की जाती है।)

- इस दिन गार्गी पुरस्कार दिया जाता है।

**पूर्णिमा** :– ''नवाटापरा गाँव'' (डूँगरपुर) में वेणेश्वर मेला भरता है। इसकी स्थापना संत मावजी ने की थी।

- यहाँ पर ''सोम, माही जाखम' नदियाँ आकर मिलती है।
- यहाँ पर खण्डित शिवलिंग की पूजा की जाती है।
- वेणेश्वर को ''आदिवासियों का कुम्भ'' तथा ''वागड का पुष्कर'' कहा जाता है।

# 8. फाल्गुन

## कृष्ण पक्ष

**त्रयोदशी** :– महाशिवरात्रि

- शिवाड (स. माधोपुर) में ''घुश्मेश्वर महादेव जी का मेला'' भरता है।

## शुक्ल पक्ष

**द्वितीया** :– फुलेरा दूज

**पूर्णिमा** :– होली

- भिनाय (अजमेर) – कोडामार होली
- महावीर जी (करौली) – लठ्ठमार होली
- बाडमेर – पत्थर मार होली
- (भिनाय में राज. की पहली सहकारी समिति 1904 में बनाई थी।)
- इस दिन बाडमेर में इलोजी की बारात निकाली जाती है।
- इस दिन ब्यावर (अजमेर) में ''बादशाह की सवारी'' निकाली जाती है।
- (इस दिन टोडरमल बादशाह होता है।)
- सांगोद (कोटा) – ''न्हाण की झाँकियाँ निकलती है।
- जयपुर में ''जन्म–मरण–परण'' का त्यौंहार होता है।

# 9. चैत्र

**कृष्ण पक्ष**

**एकम** :– धुलण्डी

**अष्टमी** :– शीतला अष्टमी (बास्योडा)

इस दिन चाकसु (जयपुर) में ''गधों का मेला'' लगता है। (शीतला माता का वाहन)

**शुक्ल पक्ष**

**एकम** :– विक्रमी नव वर्ष प्रारम्भ (हिन्दुओं का नव वर्ष ) (अंग्रेजी कैलेण्डर से + 57 वर्ष आगे)

- बसन्त नवरात्रा प्रारम्भ

**तृतीया** :– गणगौर

- जयपुर व उदयपुर की गणगौर की सवारी प्रसिद्ध है।
- जेम्स टॉड ने उदयपुर की गणगौर का वर्णन किया है।
- यह सर्वाधिक लोकगीतों का त्यौहार है।
- इस दिन लडकियों अपने लिए अच्छे पति तथा अपने भाई के लिए अच्छी पत्नि के लिए व्रत करती है।
- जैसलमेर में ''चतुर्थी'' को केवल गवर की सवारी निकलती है। नाथद्वारा में पंचमी को 'गुलाबी गणगौर या 'चुनडी गणगौर' मनाई जाती है।

**अष्टमी** :– अशोकाष्टमी
**नवमी** :– रामनवमी
**पूर्णिमा** :– हनुमान जयन्ती
**मेले** :– सालासार (चुरू)

मेहन्दीपुर (दौसा)

# 10 वैशाख

## कृष्ण पक्ष

**तृतीया** :– धींगा गवर (जोधपुर में धींगा गवर मेला होता है)

## शुक्ल पक्ष

**तृतीया** :– अक्षय तृतीया

**पूर्णिमा** :– बुद्ध पूर्णिमा

पीपल पूर्णिमा (भगवान बुद्ध को पीपल के नीचे ज्ञान मिला था।)

**मेले** :–

1. बाणगंगा मेला (विराटनगर जयपुर)
2. गेमतीसागर मेला (झालरापाटन) (मालवी नस्ल के पशुओं) का क्रय विक्रय
3. नक्की झील मेला :– माउन्ट आबू
4. मातृकुण्डिया मेला :– चित्तौड
5. गोतमेश्वर मेला अरणोद (प्रतापगढ)
   इस दिन 'पोकरण में' परमाणु परीक्षण किया गया था

## 11 ज्येष्ठ

| कृष्ण पक्ष | शुक्ल पक्ष |
|---|---|
| **अमावस्या** :– बडमावस (वट वृक्ष अमावस्या) | **दसमी** :– गंगा दसमी (कामां) भरतपुर में गंगा दशमी मेला होता है।<br>**एकादशी** :– निर्जला एकादशी<br>• इस दिन उदयपुर में पतंगे उडाई जाती है। |

## 12. आषाढ

| कृष्ण पक्ष | शुक्ल पक्ष |
|---|---|
| | **एकम** :– गुप्त नवरात्रा प्रारम्भ<br>**नवमी** :– भडल्या नवमी<br>**एकादशी** :– देवशयनी एकादशी<br>**पूर्णिमा** :– गुरू पूर्णिमा/व्यास पूर्णिमा |

## मुस्लिम त्यौहार

- पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्म ''570 ई.'' में ''मक्का (स. अरब)'' से हुआ था। 622 ई. में मोहम्मद साहब मक्का छोड़कर मदीना चले गये थे। इस घटना को '' हिजरत'' कहा जाता है तथा इस दिन से हिजरी संवत् (हिजरी कैलेण्डर) की शुरूआत होती है।
- यह चन्द्रमा आधारित कैलेण्डर होता है (लेकिन अधिकमास नहीं जोडा जाता)।
- 632 ई. में मदीना में ही मोहम्मद साहब की मृत्यु हो गई थी।

## मोहर्रम

- 10 तारीख :– मोहम्मद साहब के दोहिते ''हुसैन'' कर्बला के मैदान (ईराक) में लड़ते हुए शहीद हो गये थे। इनकी याद में इस दिन ''ताजिये'' निकाले जाते है।
- 27 तारीख :– ''गलियाकोट (डूँगरपुर)'' में ''सैय्यद फखरूद्दीन का उर्स'' आयोजित होता है। यह ''दाउदी बोहरा सम्प्रदाय'' का प्रमुख स्थान है।

## सफर

- 20 तारीख :– चेहल्लम–हुसैन के मृत्यु के चालीस दिन पूरे हुये थे।

## रबी–उल–अव्वल

- 12 तारीख
  - ईद मिलादुल नबी (पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्म)
  - बारावफात (पैगम्बर मोहम्मद साहब की मृत्यु)

## रबी उस सानी

- इस महीने में कोई त्यौहार नहीं होता है।

## जमात उल अव्वल

- इस महीने में कोई त्यौहार नहीं होता है।

## जमात उस सानी

- 8 तारीख :– फारस (ईरान) के 'संजरी गाँव' में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का जन्म हुआ था। पृथ्वीराज चौहान के शासनकाल में भारत आये थे, तथा अजमेर को अपना मुख्य केन्द्र बनाया था।

## रज्जब

- 1–6 तारीख :– ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का ''अजमेर में उर्स'' आयोजित किया जाता है। भीलवाडा का गौरी परिवार झण्डा चढ़ाकर उर्स की शुरूआत करता है। 6 तारीख को "कुल की रस्म" तथा 9 तारीख को बडे कुल की रस्म मनाई जाती है।
- 27 तारीख :–शब–ए–मेराज :–इस रात को पैगम्बर मोहम्मद साहब की खुदा से मुलाकात हुई थी।

## शाबान

- 14 तारीख :– शब–ए–बरात
- इस रात मुस्लमान अपने पापों का प्रायश्चित करते है।

## रमजान

- मुसलमानों का सबसे पवित्र महीना।
- इस महीने में रोजे रखे जाते है।
- 27 तारीख :– शब–ए–कद्र–इस रात्रि को कुरान का अवतरण हुआ था।

## शव्वाल

- 1 तारीख :– ईद उल फितर (मीठी ईद, सिवैयों की ईद)
- भाईचारे का त्यौहार

## जिल्काद

- इस महिने में कोई त्यौहार नहीं होता है।

## जिल्हिज

- इस महिने में मुसलमान हज यात्रा के लिए जाते है।
- 10 तारीख :– ईद–उल–जुहा (बकर ईद)
- कुर्बानी का त्यौहार

## जैनों के त्यौहार

➢ **ऋषभ जयन्ती :–** चैत्र कृष्ण नवमी (धुलेव में मेले का आयोजन किया जाता है।)

➢ **महावीर जयन्ती :–** चैत्र शुक्ल त्रयोदशी।

➢ **दसलक्षण पर्व** 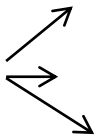 चैत्र (शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक)
भाद्रपद (शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक)
माघ (शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक)

- भाद्रपद के दसलक्षण पर्व को ''पर्यूषण पर्व (महा पर्व) '' कहा जाता है।

**पर्यूषण**

| **दिगम्बर** | **श्वेताम्बर** |
|---|---|
| पर्यूषण :– भाद्रपद शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी<br>अश्विन कृष्ण एकम् – पडवा ढोक (क्षमा याचना पर्व ) | पर्यूषण :– भाद्रपद कृष्ण द्वादशी– शुक्ल चतुर्थी<br>भाद्रपद शुक्ल पंचमी – संवत्सरी पर्व या क्षमा याचना पर्व |

➢ **रोट तीज** :– भाद्रपद शुक्ल तृतीया

➢ **सुगन्ध दसमी/धूप दसमी** :– भाद्रपद शुक्ल दसमी

## सिक्खों के त्यौहार

- गुरू नानक जयन्ती :– कार्तिक पूर्णिमा

✓ मेले :– कोलायत (बीकानेर)
साहवा (चुरू)

- गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती :– पौष शुक्ल सप्तमी

- लोहडी :– 13 जनवरी
- वैशाखी :– 13 अप्रैल
  - ✓ 13 अप्रैल 1699 को गुरू गोविन्द सिंह ने आनन्दपुर साहिब में ''खालसा पंथ'' की स्थापना की थी।
  - ✓ 13 अप्रैल 1919 – जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड

## सिन्धीयों के त्यौहार

1. चेटीचण्ड/झूलेलाल जयन्ती :– चैत्र शुक्ल एकम् (झूलेलाल जी को वरूण का अवतार माना जाता है।)
2. असूचण्ड :– आश्विन शुक्ल एकम (झूलेलाल जी का निर्वाण दिवस)
3. थदडी सातम :– भाद्रपद कृष्ण सप्तमी
4. चालीहा महोत्सव :– 16 जुलाई से 24 अगस्त तक।

## ईसाईयों के त्यौहार

1. **क्रिसमस** :– 25 दिसम्बर
   - इस दिन ईसामसीह का जन्म हुआ था।
2. **नववर्ष :–** 1 जनवरी
   - 4 वर्ष की आयु में ईसामसीह को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इस घटना को प्रबोधन कहा जाता है। इस दिन से ईस्वी कैलेण्डर की शुरूआत मानी जाती है। 1583 ई. में पोप गिग्रेरी XIII ने इस कैलेण्डर को व्यवस्थित किया था। यह सूर्य आधारित कैलेण्डर है।
3. **गुड फ्राइडे :–**
   - इस दिन ईसा मसीह को फांसी पर चढाया गया था।
   - गुड फ्राइडे ईस्टर से ठीक पहला फ्राइडे होता है।
4. **ईस्टर :–**
   - इस दिन ईसा मसीह पुनर्जीवित हुये थे। यह रविवार का दिन था। 22 मार्च के ठीक बाद जो पूर्णिमा आती है। उसके बाद वाला रविवार, ईस्टर कहलाता है।
5. **असेन्शन डे :–** ईस्टर के 40 दिन बाद आता है। इस दिन ईसामसीह वापस स्वर्गलोक चले गये थे

# राजस्थान में लोक देवता

**''पाबू हडबू रामदे, मांगलिया मेहा।**

**पाँचू पीर पधारजयो, गोगाजी जेहा ।।**

➢ पाबू हडबू रामदेवजी, मेहाजी, गोगाजी :– ये 5 पीर है जिन्हे हिन्दु व मुस्लमान दोनों मानते है।

## पाबूजी राठौड

❖ पिता :– धाँधल जी

❖ माता :– कमला दे

❖ जन्म स्थान :– कोलुमण्ड (बाडमेर)

❖ पत्नी :– फूलमदे/सुप्यार दे (अमरकोट के सूरजमल सोढा की राजकुमारी)

❖ घोडी :– केसर कालमी (देवल नामक चारण महिला की घोडी)

❖ सहयोगी :– चाँदा तथा डामा (दोनो भील भाई थे)

❖ मेला :– कोलुमण्ड में चैत्र अमावस्या को आयोजित किया जाता है।

- देवल नामक चारण महिला की गायों की रक्षा के लिए अपने विवाह के दौरान तीन फेरों के बाद उठकर आ गये थे तथा ''देचू (जोधपुर)'' में ''जींदराव खींची'' (जायल) के खिलाफ लडते हुये मारे गये थे।
- पाबूजी को ''लक्ष्मण का अवतार'' माना जाता है।
- पाबूजी को ''ऊँट रक्षक देवता'' कहा जाता है।
- राईका/रैबारी/देवासी (ऊँट पालने वाली जाति) पाबूजी को अपना प्रमुख देवता मानते है।
- पाबूजी को ''प्लेग रक्षक देवता'' भी कहा जाता है।
- पाबूजी ने गुजरात के 7 थोरी (जाति) भाइयों को शरण दी थी।
- पाबूजी की फड ''सबसे लोकप्रिय फड है।'' भील जाति के भोपे (पुजारी) फड को गाते समय ''रावणहत्था'' वाद्य यंत्र बजाते है।
- पाबूजी के वीरगाथा गीत पवाडे (भजन) माट वाद्य यंत्र द्वारा गाये जाते है।

- पाबूजी से सम्बन्धित पुस्तके :–

1. पाबू प्रकाश :– आशिया मोडजी (इनके अनुसार पाबूजी का जन्म बाडमेर जिले के जूना ग्राम में हुआ था।)
2. पाबूजी रा दूहा :– लघराज
3. पाबूजी रा छन्द :– बीठू मेहा जी
4. पाबूजी रा रूपक :– मोतीसर बगतावर
5. पाबूजी के सोरठे :– रामनाथ

पाबूजी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ :–

| | |
|---|---|
| 1. गौरक्षक | 5. वीरता |
| 2. ऊँट रक्षक | 6. त्यागशील |
| 3. प्लेग रक्षक | 7. वचनबद्धता |
| 4. अछूतोद्धारक | 8. शरणागत रक्षक |

## रामदेवजी तँवर

- ❖ जन्म स्थान :– उण्डू काश्मीर (बाडमेर)
- ❖ पिता :– अजमाल जी (पोकरण के सामन्त)
- ❖ माता :– मैंणादे
- ❖ पत्नी :– नेतल दे (अमरकोट के दलेलसिंह सोढा की राजकुमारी)
- ❖ मन्दिर :– रूणीचा/रामदेवरा (जैसलमेर)
- ❖ गुरू :– बालीनाथ जी (इनका मन्दिर जोधपुर की मसूरिया पहाडी पर स्थित है।)
- ❖ घोडा :– लीलो
- ❖ झण्डा :– नेजा
- ❖ जागरण :– जमो
- ❖ मेघवाल भक्त :– रिखिया

- रामदेवरा में ''परचा बावडी'' है।
- रामदेव जी पुस्तक – ''चौबीस बाणियाँ''
- रामदेव जी ने ''कामडिया पंथ'' की शुरूआत की थी।
- कामडिया पंथ की महिलाओं द्वारा ''तेरहताली नृत्य'' किया जाता है।
- ''भाद्रपद शुक्ल एकादशी'' को रामदेव जी ने रामदेवरा में जीवित समाधि ली थी।
- ''भाद्रपद शुक्ल दसमी'' को ''डालीबाई'' मेघवाल ( रामदेव जी की धर्म बहिन) ने रामदेवरा में समाधि ली थी।
- रामदेवजी के मन्दिर में ''पगल्ये'' पूजे जाते है।

- रामदेवजी ने पोकरण क्षेत्र में भैरव नामक अत्याचारी का दमन किया था।
- रामदेवजी को विष्णु (कृष्ण) का अवतार तथा पीरों का पीर कहा जाता है।
- रामदेव जी ने सामाजिक भेदभाव कम करने तथा साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाने का प्रयास किया।

➢ प्रमुख मन्दिर :–

1. रूणीचा – जैसलमेर
2. पोकरण – जैसलमेर
3. मसूरिया पहाडी – जोधपुर
4. हलदिना – अलवर
5. छोटा रामदेवरा – गुजरात

रामदेव जी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ :–

1. अछूतोद्धारक
2. सांप्रदायिक सौहर्द्ध के प्रेरक
3. प्रजारक्षक
4. कष्ट निवारक देवता (कुष्ठ रोग)
5. कवि

रामदेव जी के आध्यात्मिक उपदेश :–

1. मूर्तिपूजा का विरोध किया था।
2. तीर्थयात्रा का विरोध किया था।
3. गुरू की महत्ता पर बल दिया था।
4. कर्मवाद पर बल दिया।
5. नाम स्मरण पर बल दिया।
6. सत्संग पर बल दिया।
7. मनुष्य को अपने भ्रम तथा अहं का त्याग करना चाहिए।
8. हर प्राणी में ईश्वर का वास होता है।

## गोगाजी :– (गोगाजी चौहान)

- जन्म स्थान :– ददरेवा (चुरू)
- पिता – जेवर सिंह
- माता – बाछल दे
- गोगाजी ने महमूद गजनवी के साथ युद्ध किया था तथा गजनवी ने इन्हे "जाहिर पीर" (साक्षात देवता) कहा था।
- अपने मौसेरे भाईयों अरजन व सरजन के खिलाफ गायों की रक्षार्थ युद्ध करते हुये मारे गये थे।
- ददरेवा (चुरू) के मन्दिर को "शीर्ष मेडी" (सिर कट कर गिरा था) कहते हैं।
- गोगामेडी के मंदिर को "धुर मेडी" कहते हैं।
- गोगामेडी का मन्दिर "मकबरा शैली" में बना हुआ है। मन्दिर में "बिस्मिल्लाह" लिखा हुआ है। (गोगाजी के मन्दिर को मेडी कहते है।)
- खिलेरियों की ढाणी (सांचौर, जालौर) में गोगाजी की ओल्डी बनी हुई है।
- "सर्प रक्षक देवता" के रूप में पूजे जाते है।
- गोगाजी के मन्दिर खेजडी के नीचे बनाये जाते है।
- कवि मेह ने इन पर "गोगाजी रा रसावला" नामक पुस्तक लिखी।

## हडबू जी सांखला

- जन्मस्थान – भूंडेल (नागौर)
- ये रामदेवजी के मौसेरे भाई थे।
- अपने पिता की मृत्यु के बाद हरभमजाल (जोधपुर) में रहने लगे।
- इनके गुरू बालीनाथ जी थे।
- हडबूजी "शकुनशास्त्र" (भविष्य वक्ता) के ज्ञाता थे।
- इन्होंने जोधा को मण्डोर जीतने का आशीर्वाद दिया तथा उसे एक कटार भेंट की थी।
- मण्डोर जीतने के बाद जोधा ने इन्हें बेंगटी (जोधपुर) गाँव दिया जहाँ पर ये बूढी तथा विकलांग गायों की सेवा करते थे।

- जोधपुर महाराजा अजीतसिंह ने यहाँ मन्दिर का निर्माण करवाया। मन्दिर में "हडबूजी की बैलगाडी की पूजा" की जाती है।
- हडबूजी की सवारी / वाहन सियार था।

## मेहाजी मांगलिया

- मुख्य मंदिर – बापीणी (जोधपर)
- इनका मेला "कृष्ण जन्माष्टमी" को लगता है।
- जैसलमेर के "राणगदेव भाटी" के खिलाफ युद्ध में लड़ते हुए मारे गये थे।
- इनके घोडे का नाम – किरड काबरा
- इनके भोपों के वंश वृद्धि नहीं होती है। ये सन्तान को गोद लेकर वंश आगे बढते है।

## तेजाजी :– (पाँच पीर में तेजाजी का नाम नहीं आता)

- खरनाल (नागौर) में एक जाट परिवार में जन्म हुआ था।
- पिता – ताहर जी
- माता – रामकुंवरि
- पत्नी – पेमलदे
- घोड़ी – लीलण
- पुजारी / भोपा – घोडला
- तेजाजी अपनी पत्नी को लाने अपने ससुराल पनेर (अजमेर) जा रहे थे।
- **"सुरसुरा "अजमेर)"** नामक गाँव में लाछा नामक गुर्जर महिला की गायों को बचाते हुए घायल हुये तथा एक साँप के काटने से इनकी मृत्यु हो गई थी।
- तेजाजी "सर्परक्षक देवता" के रूप में पूजे जाते है।
- इन्हें "कालाबाला का देवता" भी कहा जाता है। (कालाबाला–बीमारी)
- "हल जोतते समय" किसान "तेजाजी के गीत" गाते है।
- 2010 ई. में तेजाजी पर राजस्थान सरकार द्वारा "डाक टिकट" जारी किया गया।
- इनकी घोड़ी लीलण के नाम पर राजस्थान में एक रेलगाड़ी चलती है।

- किताब – (1) जुझांर तेजा (लज्जाराम मेहता)
  – (2) तेजाजी रा ब्यावहला (वंशीधर शर्मा)
- मुख्य मंदिर – परबतसर (जोधपुर महाराजा अभयसिंह के समय में बनवाया गया)
- अन्य मंदिर – सैंदरिया (अजमेर में)
  – भांवता (अजमेर में)
  – पनेर (अजमेर में)
  – बासी– दुगारी (बूंदी में)
- तेजाजी की बहिन बुंगरी माता का मन्दिर – खरनाल (नागौर) में बना हुआ है।

## देवनारायण जी (औषधि का देवता)

- जन्म स्थान :– आसीन्द (भीलवाडा)
- इनका जन्म बगडावत गुर्जर परिवार में हुआ था।
- पिता – सवाई भोज
- माता – सेढू
- पत्नी – पीपलदे (धार के राजा जयसिंह परमार की पुत्री)
- मेला :– भाद्रपद शुक्ल सप्तमी
- इन्हें "विष्णु भगवान का अवतार" माना जाता है।
- इन्हें "औषधि का देवता" कहा जाता है।
- इनके मन्दिर में नीम के पत्ते चढाये जाते है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती बल्कि ईंटो की पूजा की जाती है।
- देवनारायण जी की फड सबसे लम्बी फड है। गुर्जर भोपो द्वारा "जन्तर वाद्य यंत्र" के साथ इसे गाया जाता है।
- इस फड पर डाक टिकट जारी हो चुका है।
- देवनारायण जी स्वयं पर भी डाक टिकट जारी हो चुका है।
- **मुख्य मन्दिर :–**

(1) आसीन्द (भीलवाडा)

(2) देवधाम – जोधपुरिया (टोंक)

(3) देवमाली – ब्यावर (अजमेर)

(4) देव डूंगरी – चित्तौड़ (रांगा सांगा द्वारा निर्मित)

## देव बाबा

- मुख्य मन्दिर – नंगला जहाज (भरतपुर)
- मेले – भाद्रपद शुक्ल पंचमी (ऋषि पंचमी के दिन)
  – चैत्र शुक्ल पंचमी
- देव बाबा पशु चिकित्सक थे। इन्हें खुश करने के लिए 7 ग्वालों को भोजन करवाना पड़ता है।

## मल्लीनाथ जी

- ये "मारवाड के राठौड राजा" थे। इन्होंने दिल्ली के सुल्तान फिरोज तुगलक के मालवा के गर्वनर (निजामुद्दीन) को पराजित किया था।
- इनकी रानी "रूपादे" लोक देवी है, जिनका मन्दिर मालाजाल (बाडमेर) में हैं।
- गुरु – उगम सिंह भाटी
- मुख्य मन्दिर – तिलवाडा (बाडमेर)
- यहाँ पर होली के अगले दिन से शुरू होकर 15 दिन तक (चैत्र कृष्णा एकादशी से शुक्ल एकादशी) "मल्लीनाथ पशु मेला" चलता है। (मालाणी नस्ल के पशु का क्रय–विक्रय)
- मल्लीनाथ जी "भविष्य वक्ता" थे।
- इन्होंने समाज में छुआछूत एवं भेदभाव को मिटाने का प्रयास किया।
- इन्होंने 1399 ई. में मारवाड़ में बहुत बड़े हरि कीर्तन का आयोजन करवाया था।

## तल्लीनाथ जी :– (गोगादेव राठौड)

- इनका वास्तविक नाम – गोगादेव राठौड़ था।
- ये "शेरगढ (जोधपुर)" के सामंत थे।

- गुरू – जलंधर नाथ
- मुख्य मन्दिर – पांचोटा (जालौर)
- इन्हें "ओरण का देवता" कहा जाता है।
- ओरण – मन्दिर के आस–पास छोडी गई जमीन जहाँ से पेड–पौधे नही काट सकते।

## बिग्गा जी

- मुख्य मन्दिर – रीडी (बीकानेर)
- गायों की रक्षा करते हुए शहीद हो गये थे।
- ये जाखड समाज के कुल देवता है।

## हरिराम जी

- मुख्य मन्दिर – झोरडा (नागौर)
- मेला – भाद्रपद शुक्ल पंचमी
- सर्प रक्षक देवता के रूप में पूजे जाते है।
- मंदिर में "साप की बांबी" की पूजा की जाती है। (सांप का बिल)

## केसरिया कुंवरजी

- गोगाजी के बेटे थे।
- इन्हें भी 'सर्परक्षक देवता' के रूप में पूजा जाता है।

## झरडा जी

- पाबूजी के भतीजे थे।
- जींदराव खींची (जायल का राजा) को मारकर अपने पिता व चाचा की हत्या का बदला लिया।
- मन्दिर – (1) कोलुमण्ड (जोधपुर)
  – (2) सिंभूदडा (बीकानेर)
- इन्हें रूपनाथ भी कहा जाता है।
- हिमाचल प्रदेश में इन्हें ''बालकनाथ'' कहा जाता है।

## जुन्झार जी

- जन्म स्थान :– इमलोहा (सीकर)
- "स्यालोदडा (सीकर)" गाँव में गायों की रक्षा करते हुए मारे गये थे।
- "स्यालोदडा मंदिर में 'दुल्हा–दुल्हन' तथा ''इनके 3 भाईयों की मूर्तियाँ बनी हुई है।
- रामनवमी के दिन यहाँ पर मेला लगता है।

## मामादेव

- ये "बरसात के देवता" है।
- इनका मन्दिर नहीं होता है बल्कि गाँव से बाहर इनके "तोरण की पूजा" की जाती है।
- इन्हें खुश करने के लिए "भैसें की बलि" देनी पड़ती है।

## वीरफता जी

- मुख्य मन्दिर – सांथू (जालौर)
- "भाद्रपद शुक्ल नवमी" को इनका मेला लगता है।

## आलम जी

- मुख्य मन्दिर – धोरी मन्ना (बाडमेर)
- आलम जी को "अश्व रक्षक देवता" कहा जाता है।
- आलम जी जैतमालोत राठौड थे।

## डूंगजी–जवाहर जी

- "बाठोठ–पाटोदा (सीकर)" गाँव के सामन्त थे।
- कालान्तर में ये अमीरों को लूट कर उनका धन गरीबों में बाँट दिया करते थे।
- प्रमुख सहयोगी – लोठूजी निठारवाल, करणाजी मीणा, बालूजी नाई, सांखूजी लोहार
- इन्होंने अंग्रेजो की आगरा की जेल तथा नसीराबाद छावनी लूट ली थी।

## खेतला जी

- मुख्य मन्दिर – सोनाणा (पाली)
- मेला – "चैत्र शुक्ल एकम्" को मेला लगता है।
- यहाँ पर "हकलाने वाले बच्चों का इलाज" होता है।

# राजस्थान के सन्त एवं सम्प्रदाय

## "दादू दयाल"

- **जन्म** – अहमदाबाद
- लोदीराम नामक ब्राह्मण ने पालन–पोषण किया था।
- **गुरू** – ब्रह्मानन्द जी / वृदानन्द / बुढ्ढन बाबा
- राजस्थान में शुरूआती दिनों में ये सांभर में रहे थे, कालान्तर में आमेर में रहे थे।
- **मुख्य पीठ (केन्द्र)** – नरैना (जयपुर)
- इन्होंने निर्गुण भक्ति का सन्देश दिया था।
- दादू दयाल जी को "राजस्थान का कबीर" कहा जाता है।
- दादूदयालजी ने अपने उपदेश **"ढुढाँडी"** में दिये थे।
- **सत्संग स्थल** – अलख दरीबा
- इन्होंने निपख आंदोलन चलाया था।
- आमेर के राजा भगवन्त दास ने 1585 ई. में दादूदयाल जी की मुलाकात फतेहपुर सीकरी में अकबर से करवाई थी।

➢ दादूपंथ के मंदिरों को **"दादू द्वारा"** कहा जाता है।

➢ यहाँ पर दादूदयालजी के ग्रन्थ **"वाणी"** की पूजा की जाती है।

➢ दादूपंथी मृत व्यक्ति के शरीर को ना जलाते है, ना दफनाते है, बल्कि पशु–पक्षियों के खाने के लिए छोड़ देते है।

➢ दादूजी का शरीर "भैराणा की पहाडी (जयपुर)" में रखा गया था। जिसे **"दादूखोल / दादूपालका"** कहा जाता है।

➢ दादूदयालजी के प्रमुख **52 शिष्य** थे जिन्हे **"52 स्तम्भ"** कहा जाता है।

➢ **मेला** – नरैना में – फाल्गुन शुक्ल पंचमी से एकादशी तक

➢ **दादूपंथ की शाखाएँ –**

1. खालसा
2. विरक्त

3. उतरादे
4. खाकी
5. नागा

➢ **दादूजी के प्रमुख शिष्य –**

**1. सुन्दरदास जी**

- इनका वास्तविक नाम भीमराज था। ये बीकानेर के शासक जैतसी के पुत्र थे।
- इन्होंने नागा शाखा की स्थापना की।
- नागा साधु अपने साथ हथियार रखते थे।
- इनके रहने के स्थान को छावनी कहा जाता था।
- नागा साधुओं ने मराठा आक्रमणों के समय जयपुर के राजा प्रतापसिंह की मदद की थी।

**2. रज्जब जी**

- ये सांगानेर के पठान थे।
- इन्होंने दादूजी के उपदेश सुनकर शादी नहीं की तथा "आजीवन दूल्हे के वेष" में रहे।
- पुस्तके – (1) रज्जब वाणी
  – (2) सर्वंगी

**3. सुन्दरदास जी 'छोटे'**

- इनका जन्म वैश्य परिवार में हुआ था।
- इन्होंने 42 ग्रंथ लिखे थे। **प्रमुख ग्रन्थ –** (1) ज्ञान समुद्र, (2) सुन्दर सागर
- "गेटोलाव (दौसा)" में सुन्दरदास जी की समाधि बनी हुई है।

**4. बालिन्द जी**

- ग्रंथ – आरिलो

5. गरीबदास जी
6. मिस्किनदास जी
7. बखना जी
8. माधोदास जी

# "जाम्भोजी"

- पींपासर (नागौर) में एक पंवार राजपूत परिवार में जन्म हुआ था।
- पिता जी – लोहट जी
- माता जी – हंसाबाई
- बचपन का नाम – धनराज
- इन्हें ''विष्णु का अवतार'' माना जाता है।
- समराथल (बीकानेर) नामक स्थान पर इन्होंने अपने अनुयायियों को "29 उपदेश" दिये थे। इसलिए इनके अनुयायी "बिशनोई" (बिस+नौ) कहलाते है।
- मृत्यु – लालासर (बीकानेर)
- समाधि/मुख्य केन्द्र – "मुकाम (बीकानेर)"
- यहाँ पर "आश्विन तथा फाल्गुन अमावस्या" को मेला लगता है।
- ये सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। इसने जाम्भोजी के कहने पर गौ हत्या बंद कर दी थी। बीकानेर क्षेत्र में अकाल के समय जाम्भोजी के कहने पर सिकन्दर लोदी ने चारे की व्यवस्था करवाई थी।
- जोधा (जोधपुर) व बीका (बीकानेर) जाम्भोजी का बहुत सम्मान किया करते थे।
- उपदेश स्थल सांथरिया कहलाते है।
- **मुख्य मंदिर** – (1) मुकाम (बीकानेर)
  – (2) जांगलू, (बीकानेर)
  – (3) रामडावास (जोधपुर)
  – (4) जाम्भा (जोधपुर)

➢ **जाम्भोजी की शिक्षाएँ –**

1. हरे पेड नहीं काटने चाहिये।

   *सिर साटे रूंख रहे, तो भी सस्तो जाण।।*

2. जीव हिंसा नहीं करनी चाहिये।
3. नीले कपडे नही पहनने चाहिये।

4. विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया।

❖ जाम्भोजी को "वैज्ञानिक संत" कहा जाता है।

# "जसनाथ जी"

- जन्म स्थान – कतरियासर (बीकानेर) में जाट परिवार में हुआ था।
- पिता – हम्मीर जी
- माता – रूपादे
- मुख्य केन्द्र – कतरियासर
- 1500 ई. में गोरखमालिया (बीकानेर) में जसनाथ जी व जाम्भोजी मिले थे।
- सिकन्दर लोदी के समकालीन थे।
- सिकन्दर लोदी ने इन्हें कतरियासर के पास भूमि दान में दी थी।
- इन्होंने बीकानेर के लूणकरण को राजा बनने का आशीर्वाद दिया था।
- अपने अनुयायियों को 36 उपदेश दिये थे।
- इनके अनुयायी गले में काली ऊन के धागे पहनते है।
- ''मोर पंख'' तथा ''जाल वृक्ष'' को पवित्र मानते है।
- इनके अनुयायियों द्वारा अग्नि नृत्य किया जाता है।
- इनकी पत्नी काललदे की पूजा की जाती है।
- मेले – वर्ष में तीन बार – (1) चैत्र शुक्ल सप्तमी (2) आश्विन शुक्ल सप्तमी
  (3) माघ शुक्ल सप्तमी
- प्रमुख ग्रन्थ–
  (1) सिंभुदडा,
  (2) कोडा
- अन्य केन्द्र –
  (1) बमलू, (2) लिखमादेसर, (3) पूनरासर, (4) मालासर,

(5) पाँचला सिद्धा – नागौर

- संतो के समाधि स्थल को बाडी (84 बाडियाँ प्रसिद्ध) कहते है।
- मुख्य संत – (1) लालनाथ जी – जीव समझौतरी
  – (2) रामनाथ जी – यशोनाथ पुराण (जसनाथी सम्प्रदाय की बाईबिल)
  – (3) रूस्तम जी – इन्हें औरंगजेब ने नगाड़ा व निशान देकर सम्मानित किया था।

## "चरणदास जी"

- जन्म स्थान – डेहरा (अलवर)
- पिता जी – मुरलीघर
- माता जी – कुंजोबाई
- बचपन का नाम – रणजीत
- गुरू – सुखदेव
- मुख्य केन्द्र – दिल्ली
- मेला – बसंत पंचमी को
- अपने अनुयायियों को ''42 उपदेश'' दिये।
- इनके अनुयायी ''पीले रंग के कपडे'' पहनते है।
- इन्होंने नादिरशाह (1739 ई. में ईरान का राजा – भारत पर आक्रमण) के आक्रमण की भविष्यवाणी की थी।
- प्रमुख शिष्या –

  (1) दया बाई –
  - पुस्तके – 1. दया बोध, 2. विनय मलिका

  (2) सहजोबाई –
  - पुस्तके – सहज प्रकाश
  - इस सम्प्रदाय के लोग ''सखी भाव'' से श्री कृष्ण भगवान की पूजा करते हे।
  - इन्होंने ''सगुण'' (भक्ति पूजा वाले) तथा ''निर्गुण'' दोनों की शिक्षा दी थी।

- उपदेश ''मेवाती भाषा'' में दिये थे।
- चरणदास जी जब जयपुर आये तब सवाई प्रताप सिंह ने इन्हें कोलीवाड़ा गाँव दान में दिया।

## "लालदास जी"

- जन्म स्थान – धोलीदूब (अलवर)
- समाधि – शेरपुर (अलवर)
- मुख्य केन्द्र – नंगला जहाज (भरतपुर)
- मेला – (1) आश्विन शुक्ल एकादशी, (2) माघ पूर्णिमा
- पिता जी – चांदमल
- माता जी – समदा
- गुरू – गद्दन चिश्ती
- मेव जाति के लकडहारे थे।
- उपदेश – मेवाती भाषा में
- इनका मेवात क्षेत्र में प्रभाव अधिक था।
- ग्रन्थ – लालदास की चितवाणियाँ
- बांधोली – अलवर में काफी समय रहे थे।
- इनके पुत्र कुतुब खाँ का मुख्य केन्द्र – बांधोली

## "संत हरिदास जी"

- जन्म – कापडोद (नागौर)
- वास्तविक नाम – हरिसिंह सांखला
- पहले डाकू थे परन्तु बाद में सन्यासी बन गये।
- मुख्य केन्द्र :– गाढा (डीडवाना)
- इन्होंने हरिदासी या ''निरंजनी सम्प्रदाय'' चलाया था।
- इन्होंने ''निर्गुण व सगुण'' दोनों प्रकार की भक्ति का संदेश दिया था।
- पुस्तके :– 1. मन्त्र राज प्रकाश, 2. हरि पुरूष जी की वाणी

# "संत मावजी"

- जन्म स्थान :– साबला (डूँगरपुर)
- इन्होनें भगवान श्री कृष्ण की पूजा ''निष्कंलक अवतार'' के रूप में की थी।
- इन्होनें निष्कलंकी सम्प्रदाय चलाया था।
- इनके अनुयायी इन्हें विष्णु का कल्कि अवतार मानते है।
- इन्होनें कृष्ण लीला की रचना ''वागडी भाषा'' में की थी।
- संत मावजी ने बेणेश्वर धाम (डूँगरपुर) की स्थापना की थी।
- प्रमुख ग्रंथ :– 1. **चोपडा**

❖ यह ग्रन्थ वाद–विवाद शैली में है। दीपावली को इनका वाचन करते है। इनमें भविष्यवाणियां है। कुल 5 चोपडे है, जो इस प्रकार है–

(1) प्रेम सागर, (2) मेघ सागर,

(3) साम सागर, (4) रत्न सागर,

(5) अनन्त सागर,

- अन्य केन्द्र – (1) शेषपुर, (2) पुंजपुर।

## बालनन्दाचार्य

- मुख्य पीठ – लोहार्गल (झुंझुंनू)
- यह अपने पास सेना रखते थे इसलिए इन्हें ''लश्कर संत'' कहा जाता है।
- यह औरंगजेब के समकालीन थे।
- इन्होनें 52 मूर्तियों को औरंगजेब से बचाकर सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया था।
- इन्होनें औरंगजेब के खिलाफ मेवाड के राजसिंह तथा मारवाड के दुर्गादास राठौड की सहायता की थी।

# नवलदास जी

- जन्म स्थान :– हरसोलाव (नागौर)
- मुख्य केन्द्र – जोधपुर
- सम्प्रदाय – नवल सम्प्रदाय
- ग्रन्थ – नवलेश्वर अनुभववाणी

# लालगिरी

- जन्म स्थान :– सुलखनिया (चुरू)
- मुख्य केन्द्र – बीकानेर
- सम्प्रदाय – अलखिया
- ग्रन्थ – अलख स्तुति प्रकास

# संत धन्ना

- जन्म स्थान :– धुवन (टोंक)
- इनका जन्म जाट परिवार में हुआ था।
- गुरू – रामानन्द जी
- राजस्थान में भक्ति आन्दोलन की शुरूआत की थी।
- ''बोरानाडा (जोधपुर)'' में इनका मंदिर बना हुआ है।
- ये पंजाब में भी लोकप्रिय है।

# "संत पीपा"

- वास्तविक नाम :– प्रताप सिंह खींची
- ''गागरौण (झालावाड) के राजा थे।
- रामानन्द जी के शिष्य थे। (कुल 12 शिष्य थे)
- संत पीपा ''दर्जी समाज के प्रमुख देवता'' है।
- इन्होनें निर्गुण भक्ति का संदेश दिया था।
- मुख्य मंदिर – समदडी (बाडमेर)
- छतरी– गागरौण
- गुफा– टोडा (टोंक)
- मेला – चैत्र पूर्णिमा
- ग्रन्थ – (1)पींपापरची (2) चितावनी (3) पींपा कथा

- टोडा के राजा शूरसेन ने इनसे प्रभावित होकर अपना पूरा धन साधू–सन्तों में बांट दिया गया था।

## सन्तदास जी

- मुख्य केन्द्र – दाँतडा (भीलवाडा)
- सम्प्रदाय – गूदड सम्प्रदाय

## राजराम जी

- मुख्य केन्द्र – शिकारपुरा (जोधपुर)
- पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया था।
- पटेल समाज के लोग विशेष आस्था रखते है।

## नरहड पीर

- वास्तविक नाम :– हजरत शक्कर बाबा
- मुख्य केन्द्र :– ''नरहड (झुंझुनु)
- ''कृष्ण जन्माष्टमी'' को इनका मेला/उर्स लगता है। यहाँ पर पागलों का इलाज किया जाता है।
- यह साम्प्रदायिक सोहार्द तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता का स्थान है।
- इन्हें ''बागड का धणी'' कहा जाता है।
- ''सलीम चिश्ती'' इनका शिष्य था।

# मीरा बाई

- जन्म स्थान :– ''कुडकी (पाली)''
- पिता :– रतन सिंह (बाजोली के जागीरदार, खानवा के युद्ध में राणा सांगा की तरफ से लडते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।)
- मीरा बाई का पालन पोषण अपने दादा ''दूदा'' के पास मेड़ता में हुआ।
- मीरा बाई के पति – ''भोजराज''
- मीरा बाई श्री कृष्ण को अपना पति मानकर ''सगुण रूप'' से पूजा करती थी।
- मीराबाई के गुरू :– ''रैदास''
- रैदास जी की छतरी चित्तौड के किले में बनी हुई है।
- मीराबाई द्वारिका के 'रणछोड मंदिर' के भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति में विलीन हो गयी थी।
- महात्मा गाँधी, मीराबाई को अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने वाली ''सत्याग्रही महिला'' मानते थे।
- मीराबाई को ''राजस्थान की राधा'' कहा जाता है।
- मीराबाई की पुस्तके :–
  1. रूकमणी मंगल
  2. सत्यभामा नू रूसणो
  3. गीत गोविन्द
  4. नरसी जी रो मायरो। (यह पुस्तक रतना खाती के सहयोग से लिखी गई )
  5. पदावली

❖ डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने कहा है, ''राजपूत परिवारों में, जिसकी स्त्रियाँ जौहर की प्रथा में गौरव अनुभव करती है और जिन्होंने अपने धर्म पर आरूढ रहने का सिद्धान्त बना रखा है, पैदा होकर मीरा ने दुनिया को यह बता दिया कि वह भी उन्हीं राजपूत नारियों में से एक है जो हमेशा अपने निश्चय पर दृढ रहेगी, उसका परिणाम कितना ही भयंकर क्यों न हो। कृष्ण के प्रति अपने अगाध प्रेम के लिए वह किसी प्रकार के समझौते के लिए तैयार नहीं हो सकती।''

## राना बाई

- मुख्य मन्दिर – हरनावा (नागौर)
- माता – गंगा बाई, पिता – रामगोपाल
- मेला – हरनावा स्थित मन्दिर परिसर में प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी को एक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है।
- यह पालडी के संत चतुरदास जी की शिष्या थी तथा कृष्ण की भक्त थी।
- ऐसी मान्यता है कि इन्होने अहमदाबाद अभियान के दौरान जोधपुर महाराजा अभयसिंह की रक्षा की थी।
- इन्हें राजस्थान की दूसरी मीरा कहा जाता है।

## गवरी बाई

- ''वागड की मीरा'' कहा जाता है।
- डूँगरपुर के ''महारावल शिवसिंह'' ने ''बाल–मुकुन्द'' मंदिर'' बनवाया था, जिसे ''गवरी बाई का मंदिर'' भी कहा जाता है।

## भक्त कवि दुर्लभ

- इन्हें ''वागड का नृसिंह'' कहा जाता है।

## सम्प्रदाय

1. वल्लभ सम्प्रदाय/रूद्र/पुष्टिमार्गी सम्प्रदाय :
   - श्री ''कृष्ण के बाल स्वरूप'' की पूजा करते है।
   - इनके मंदिर को हवेली कहा जाता है।
   - यहाँ गाया जाने वाला संगीत 'हवेली संगीत' कहलाता है।
   - मन्दिर में श्री कृष्ण मूर्ति के पीछे दीवार पर/पर्दे पर जो चित्र बनाये जाते है उन्हे ''पिछवाई'' कहा जाता है।
   - नाथद्वारा की पिछवाई प्रसिद्ध है।
   - राजस्थान में वल्लभ संप्रदाय के 41 मंदिर है।
   - मुख्य मन्दिर :–
     1. मथुरेश जी – कोटा
     2. श्री नाथ जी – सिहाड (नाथद्वारा)

3. द्वारिकाधीश – काकरोली (राजसमन्द)
4. गोकुलचन्द्र – कामां (भरतपुर)
5. मदन मोहन – कामां (भरतपुर)

## रामानन्दी सम्प्रदाय

- सम्प्रदाय के लोग ''भगवान राम'' की पूजा ''रसिक नायक'' के रूप में करते है।
- इसलिए इसे ''रसिक सम्प्रदाय'' भी कहा जाता है।
- ''कृष्ण भट्ट'' की पुस्तक ''राम रासौ'' में राम व सीता की प्रेम कहानी है। यह पुस्तक सवाई जयसिंह के समय लिखी गई थी।
- प्रमुख केन्द्र :–

1. **गलता जी** (जयपुर) – कृष्ण दास ''पयहारी'' इसके संस्थापक थे।
   - आमेर राजा पृथ्वी राज तथा उसकी रानी बालाबाई, कृष्णदास पयहारी के अनुयायी थे।

> - गलता जी प्राचीन काल में गालव ऋषि की तपोभूमि था। यह प्राचीन सूर्य मन्दिर के लिए भी प्रसिद्ध है। यह रामानुज सम्प्रदाय की पीठ भी है अतः इसे उत्तरी तोताद्रि भी कहा जाता है। गलता जी को Monkey Valley भी कहते है।

2. **रैवासा (सीकर)** :– अग्रदास जी

## निम्बार्क सम्प्रदाय

- मुख्य केन्द्र :– सलेमाबाद (अजमेर)
- संस्थापक – परशुरामजी (इनका जन्म खण्डेला के ब्राह्मण परिवार में हुआ था। सलेमाबाद के मन्दिर में परशुराम जी के चरणपादुकाओं की पूजा की जाती है। सलेमाबाद को परशुरामपुरी भी कहा जाता है। इन्होनें परशुराम सागर तथा विप्रमती नामक पुस्तके भी लिखी थी।
- इस सम्प्रदाय के लोग राधा जी को श्रीकृष्ण की पत्नि मानते है।
- मेला – भाद्रपद शुक्ल 8 (राधाष्टमी)
- जयपुर महाराजा जगतसिंह द्वितीय पुत्र प्राप्ति के आशीर्वाद हेतु सलेमाबाद गये थे।

- शेखावाटी इलाके में भी इस संप्रदाय को प्रचार–प्रसार हुआ तथा यहाँ के शेखावत शासक भगवान श्रीकृष्ण के भक्त थे तथा ''गोपीनाथ जी'' को अपना इष्ट मानते थे। निम्बार्क संप्रदाय के पदों तथा वाणियों को भजन मंडलियों द्वारा गाँव–गाँव जाकर गाया जाता था अतः शेखावाटी के राजा टोडरमल ने इनके लिए रास मण्डल स्थापित करवाए थे। शेखावाटी चित्रकला में भी निम्बार्क संप्रदाय का प्रभाव दिखाई देता है।

## रामस्नेही सम्प्रदाय

- यह सम्प्रदाय ''निर्गुण भक्ति'' में विश्वास रखता है।
- इस सम्प्रदाय में दशरथ पुत्र राम की पूजा नहीं की जाती बल्कि निर्गुण नाम की पूजा की जाती है। इनके साधु–संत ''गुलाबी रंग के कपडे'' पहनते है।
- शाहपुरा (भीलवाडा) में होली के अगले दिन ''फुलडोल का मेला'' होता है।
- मुख्य केन्द्र :–

1. **शाहपुरा** (भीलवाडा) – रामचरण जी ने इस केन्द्र की स्थापना की थी।
   - इनका जन्म सोडा ग्राम (टोंक) में वैश्य परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम बखतराम तथा माता का नाम देउजी था। इनका मूल नाम रामकिशन था। इन्होनें जयपुर राज्य में मंत्री के रूप में कार्य भी किया था। स्वामी रामचरण जी ने दाँतडा (भीलवाडा) में गुरू कृपाराम जी से दीक्षा प्राप्त की। इन्होंने मूर्तिपूजा, बहुदेवोपासना आदि का विरोध किया एवं एकेश्वरवाद व निर्गुण निराकार राम की उपासना का उपदेश दिया। मूर्तिपूजकों द्वारा परेशान किए जाने पर रामचरण जी शाहपुरा चले गए, जहाँ के शासक रणसिंह ने इनके लिए एक छतरी व मठ की स्थापना करवायी। रामचरण जी के आध्यात्मिक उपदेश अणभैवाणी नामक ग्रन्थ में संकलित है।
2. **रैण (नागौर)** – इसकी स्थापना दरियाव जी ने की थी।
3. **सींथल (बीकानेर)** – इसकी स्थापना हरिरामदास जी ने की थी। इन्होंने निशानी नामक योग ग्रन्थ लिखा था।
4. **खेडापा (जोधपुर)** – इसकी स्थापना रामदास जी ने की थी।

❖ जैमलदास ''सींथल'' तथा ''खेडापा'' शाखा के आदि आचार्य है।

## परनामी सम्प्रदाय

- मुख्य पीठ – पन्ना (मध्यप्रदेश)
- संस्थापक – प्राणनाथ
- आदर्श नगर (जयपुर) में भी ''परनामी सम्प्रदाय'' का मन्दिर है।
- सम्प्रदाय का मुख्य ग्रंथ ''कुजलम स्वरूप'' है।

## नाथ सम्प्रदाय

- शैव सम्प्रदाय का एक अन्य रूप नाथपंथ के रूप में विख्यात हुआ, जिसकी स्थापना नाथ मुनि द्वारा की गयी।
- नोहर (हनुमानगढ) में गोरख टीला है तथा कहा जाता है कि प्रथम गुरू गोरखनाथ यहाँ पर रहे थे। गुरू गोरखनाथ से 12 शाखाओं की स्थापना की थी, जिनमें से 2 शाखाएँ राजस्थान में है।
- राजस्थान में नाथ मत की दो प्रमुख शाखाएँ है–

  1. वैराग–पंथी (राताडूंगा, नागौर) इनके प्रथम प्रचारक भर्तृहरि थे।

  2. मान–पंथी (महामन्दिर, जोधपुर) इस मंदिर की स्थापना जोधपुर महाराजा मानसिंह ने की थी तथा इनके गुरू आयस देवनाथ थे।
- 852 ई. में लोद्रवा (जैसलमेर) के राजा देवराज भाटी को योगी रतननाथ ने राजतिकल करके रावल की उपाधि दी थी।
- मुँहणोत नैणसी के अनुसार मारवाड के रावल मल्लीनाथ का जन्म योगी रतन नाथ के आशीर्वाद से हुआ था।
- बादर ढाढी की पुस्तक वीरमायण के अनुसार शेरगढ (जोधपुर) के गोगादेव राठौड के जालन्धर नाथ के दर्शन हुए तथा वरदान प्राप्त हुआ। जालौर के किले में जालन्धर नाथ का मंदिर था।

# लोक देवता/सन्तों तथा लोक देवियों का हमारी संस्कृति में योगदान

1. सामाजिक सुधार :–

(i) हिन्दू मुस्लिम एकता

(ii) छुआछूत निवारण

(iii) नारी सशक्तिकरण

(iv) बाह्य आडम्बरों का विरोध (मूर्तिपूजा का विरोध)

2. पर्यावरण/जीव संरक्षण

3. धर्म व राष्टीयता की रक्षा

4. कष्टों से निवारण

5. नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान

6. सरल भक्ति पर बल –निर्गुण भक्ति

7. लोक संस्कृति को प्रोत्साहन

8. लोक साहित्य/लोक भाषा को प्रोत्साहन

9. चित्रकला को प्रोत्साहन

10. स्थापत्य कला

11. मेले/त्यौहारों का महत्व :–

    1. जीवन में सरसता
    2. सामाजिक मान्यताओं को पीढी दर पीढी, हस्तान्तरित करने में सहायता मिलती है।
    3. आर्थिक लाभ – पर्यटन का विकास, राजस्व प्राप्ति
    4. हस्तशिल्प को बढावा – बाजार का केन्द्र
    5. पशुओं की खरीद बिक्री का मुख्य केन्द्र
    6. खेलकूद प्रतियोगिता
    7. सामाजिक सौहार्द
    8. मनोरंजन का केन्द्र
    9. जनजातियों के मेले से उनकी संस्कृति का परिचय
    10. अन्तर्राष्ट्रीय लोकप्रियता

# राजस्थान की लोक देवियाँ

## करणी माता

- जन्म :– सुआप (जोधपुर)
- इनका चारण परिवार में जन्म हुआ।
- इनका बचपन का नाम रिद्धि बाई था।
- मुख्य मन्दिर :– ''देशनोक'' (बीकानेर)
- इसे चूहों का मन्दिर कहा जाता है। चूहों को 'काबा' कहा जाता है। सफदे काबे के दर्शन शुभ माने जाते है।
- करणी माता को ''दाढी वाली डोकरी'' कहा जाता है।
- करणी माता का प्रतीक :– चील।

## नेहडीजी का मन्दिर :– (देशनोक)

- यहाँ करणी माता स्वयं रहती थी, तथा ''तेमडेराय माताजी'' की पूजा करती थी।
- इनका मन्दिर भी देशनोक में है। (नेहडी – बिलौने की लकडी)

## जीण माता

- मख्य मन्दिर :– रैवासा (सीकर)
- इनके भाई हर्ष का मन्दिर भी पास में ही हर्ष पहाडी पर बना है।
- जीणमाता के मन्दिर का निर्माण चौहान राजा पृथ्वीराज प्रथम के ''सामन्त हट्टड मोहिल'' ने करवाया था।
- जीणमाता 'चौहानों की इष्ट' देवी है।
- जीणमाता का लोकगीत सबसे लम्बा है।
- जीणमाता को ''मधुमख्यिों की देवी'' कहा जाता है।
- औरंगजेब इस मन्दिर के दीपक का घी भेजा करता था तथा उसने माताजी का छत्र बनवा कर इस मन्दिर में भेंट किया था ।

## कैला माता

- करौली की त्रिकुट पहाडी पर मन्दिर बना हुआ है।
- करौली के ''जादौन राजवंश'' की कुलदेवी है।
- इन्हें हनुमानजी की माता अजंनी तथा कृष्ण की बहिन माना जाता है।
- इनके भक्तों को लांगुरिया कहा जाता है।
- ''चैत्र शुक्ल अष्टमी'' को इनका ''लक्खी मेला'' लगता है।
- इनको माताजी का सौम्य रूप माना जाता है। यह शक्ति का रूप नहीं है इसलिए केवल चैत्र माह (नवरात्रा) में ही मेला लगता है।
- इनके मन्दिर के सामने ''बोहरा भक्त की छतरी'' है जहाँ पर छोटे बच्चों का इलाज किया जाता है।

## सकराय माता

- मुख्य मन्दिर :– उदयपुरवाटी
- अन्य नाम :– शाकम्भरी माता
- ये ''चौहानों की इष्ट देवी'' है।
- ये ''खण्डेलवालों की कुलदेवी'' है।
- अन्य मन्दिर :–
  1. सांभर (जयपुर)
  2. सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

## आशापुरा माता

- मुख्य मन्दिर :– नाडौल (पाली)
  मोदरा (जालौर)
- ये चौहानों की कुल देवी है तथा बिस्सा ब्राह्मणों की भी कुल देवी है।
- इनकी पूजा करने वाली महिलाएँ पूजा करते समय हाथों में मेहन्दी नहीं लगाती तथा पूजा करते समय घूँघट निकालती है।

## तन्नौट माता

- मुख्य मन्दिर :– तन्नौट (जैसलमेर)
- BSF के जवान इनकी पूजा करते है।
- इन्हें ''थार की वैष्णो देवी'' तथा ''रूमाल की देवी'' भी कहा जाता है।

## स्वांगिया माता

- मुख्य मन्दिर :– भादरिया (जैसलमेर)
- जैसलमेर के भाटी राजवंश की कुल देवी है।
- प्रतीक :– सुगन चिड़ी
- आवड माता को भी इनका रूप माना जाता है। इनका मंदिर जैसलमेर में बना हुआ है।
- भादरिया में विश्व का सबसे बड़ा भूमिगत पुस्तकालय है।

## आई माता

- मुख्य मंदिर :– बिलाडा (जोधपुर)
- ''सिरवी समाज की कुल देवी'' है।
- इनके मुख्य मन्दिर को बडेर तथा अन्य मन्दिर को दरगाह कहा जाता है।
- इनके मुख्य मंदिर के दीपक की ज्योति से केसर टपकती है ।
- दीपक की ज्योति से दीवार काली नहीं होती।
- आई माता 'रामदेवजी की शिष्या' थी। अतः इन्होने भी छूआछूत दूर करने तथा हिन्दु–मुस्लिम एकता स्थापित करने के प्रयास किये थे।

## सच्चियाय माता

- मुख्य मन्दिर :– ओसियां (जोधपुर)

- ओसवाल समाज (बनिया) की कुल देवी
- इस मन्दिर का निर्माण गुर्जर प्रतिहार ने ''महामारू शैली'' में करवाया था।

## राणी सती

- वास्तविक नाम :– ''नारायणी देवी''
- मुख्य मन्दिर :– झुन्झुनू
- अपने पति ''तनधनदास अग्रवाल'' के साथ सती हुई थी।
- इन्हें दादी सती भी कहा जाता है।

## नारायणी देवी

- मुख्य मंदिर – अलवर
- नाई जाति से संबंधित थी तथा ये अपने पति के साथ सती हुई थी।
- ''नाई जाति की कुल देवी''
- मीणा जाति के लोग भी इनकी पूजा करते है।

## सुंधा माता

- जालौर में भीनमाल के पास जसवन्तपुरा की पहाडियों में चामुण्डा माता का मन्दिर बना हुआ है जिन्हें हम सुंधा माता के नाम से जानते है (सुंधा पहाडी पर बसे होने के कारण)
- यहाँ पर रोप वे (Rope -way) स्थापित किया गया है।
- यहाँ पर भालू अभयारण्य स्थापित किया गया है।

## चामुण्डा माता

- जोधपुर के मेहरानगढ़ किले में मुख्य मन्दिर है।
- यहाँ पर 30 सितम्बर 2008 के दिन दुर्घटना हो गई थी जिसकी जाँच के लिए जसराम चोपडा आयोग बनाया गया था।

## शीतला माता

- मुख्य मंदिर – चाकसू (जयपुर)
- निर्माण – माधोसिंह प्रथम द्वारा
- कुम्हार जाति के लोग पुजारी होते है।
- इन्हें ''चेचक रक्षक देवी'' के रूप में पूजा जाता है।
- बाँझ महिलाएँ सन्तान प्राप्ति के लिए इनकी पूजा करती है।
- एकमात्र देवी जिनकी खण्डित मूर्ति की पूजा की जाती है।

## आवरी माता

- मुख्य मंदिर – निकुम्भ (चित्तौडगढ)
- यहाँ पर ''लकवाग्रस्त व्यक्ति का इलाज'' किया जाता है।

## बडली माता

- मुख्य मन्दिर – आकोला (चित्तौडगढ)

- यहाँ पर छोटे बच्चों का इलाज किया जाता है।

## महामाया

- मावली (उदयपुर) में मंदिर है।
- यहाँ पर भी छोटे बच्चों का इलाज किया जाता है।

## अम्बिका माता

- मुख्य मन्दिर – जगत (उदयपुर)
- इस मन्दिर को ''मेवाड का खजुराहों'' कहा जाता है। (खजुराहों के मन्दिर मध्यप्रदेश में हे जिन्हे चन्देल वंश के राजाओं ने बनवाया था।)

## भदाणा माता

- मुख्य मन्दिर – कोटा
- ''मूठ'' पीडित व्यक्ति का इलाज किया जाता है। (जादू टोना से पीडित व्यक्ति)

## ब्राह्मणी माता

- मुख्य मन्दिर – सांरसन (बारां)
- एकमात्र देवी जिनकी ''पीठ की पूजा'' की जाती है।
- यहाँ पर भी ''गधों का मेला'' (माघ शुक्ल सप्तमी) लगता है।

## त्रिपुर सुन्दरी

- मुख्य मन्दिर – ''तलवाडा (बाँसवाडा)''
- इन्हें ''तुरताई माता'' भी कहा जाता है।

## ज्वाला माता

- मुख्य मन्दिर – जोबनेर (जयपुर)
- खंगारोतों (कछवाहा) की इष्ट देवी''

## छींक माता

- मुख्य मन्दिर – जयपुर
- माघ शुक्ल सप्तमी को मेला लगता है।

## नकटी माता

- मुख्य मन्दिर – जय भवानीपुरा (जयपुर)
- नाक टूटी हुई है।

## कैवाय माता

- किणसरिया (नागौर)

## दधीमती माता

- मुख्य मन्दिर – गोठ, मांगलोद (नागौर)
- दाधीच ब्राह्मणों की कुल देवी।

## भंवाल माता

- मुख्य मंदिर – भंवाल : मेड़ता (नागौर)
- इन्हें 2½ प्याला शराब चढ़ाई जाती है।

## मरकण्डी माता

- मुख्य मंदिर – निमाज (पाली)

## क्षेमकरी माता

- मुख्य मंदिर – भीनमाल (जालौर)

## हर्षद माता

- मुख्य मंदिर – **आभानेरी** (दौसा)

## जिलाडी माता

- मुख्य मंदिर – अलवर

## घेवर माता

- मुख्य मंदिर – राजसमन्द (राजसमन्द झील की नींव लगाई थी)

## राजेश्वरी माता

- मुख्य मंदिर – भरतपुर (भरतपुर के राजवंश (जाट) की कुल देवी)

## लटियाल माता

- मुख्य मन्दिर :– फलौदी (जोधपुर)
- कल्ला ब्राह्मणों की कुल देवी

## कंठेसरी माता

- आदिवासियों की कुल देवी

# लोक संतो, लोक देवताओं व लोकदेवियों का हमारी संस्कृति में योगदान

1. **सामाजिक सुधार–**
   - (1) हिन्दु–मुस्लिम एकता
   - (2) छुआछूत निवारण–रामदेवजी, पाबूजी आदि
   - (3) नारी सशक्तिकरण
   - (4) बाह्म आडम्बरों का विरोध (मूर्तिपूजा का विरोध)
2. पर्यावरण/जीव संरक्षण का संदेश
3. धर्म व राष्ट्रीयता की रक्षा – कल्ला जी, गोगा जी आदि
4. कष्टों से निवारण
5. नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान
6. सरल भक्ति पर बल – निर्गुण भक्ति
7. लोक संस्कृति को प्रोत्साहन – अग्नि नृत्य, तेरहताली नृत्य आदि
8. लोक साहित्य/लोक भाषा को प्रोत्साहन
9. चित्रकला को प्रोत्साहन– फड़, पिछवाई
10. स्थापत्य कला – मन्दिर, मस्जिद आदि
11. मेले/त्यौहारों का महत्व
    - (1) जीवन में समरसता
    - (2) सामाजिक मान्यताओं को पीढी दर पीढी हस्तान्तरित
    - (3) आर्थिक लाभ – पर्यटन का विकास, राजस्व प्राप्ति आदि
    - (4) हस्तशिल्प को बढ़ावा – बाजार का केन्द्र
    - (5) पशुओं की खरीद–बिक्री का मुख्य केन्द्र– पशु मेले
    - (6) खेलकूद प्रतियोगिता
    - (7) सामाजिक सौहार्द
    - (8) मनोरंजन का केन्द्र
    - (9) जनजातियों के मेले से उनकी संस्कृति का परिचय
    - (10) अन्तर्राष्ट्रीय लोकप्रियता

# राजस्थान के लोकगीत

- जन सामान्य के स्वाभाविक उद्‌गारों का प्रतिबिम्ब ही लोक गीत है। लोक गीत मानव मन के सुख – दुःख की सहज अभिव्यक्ति होती है।
- "कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने लोक गीतों को संस्कृति का सुखद सन्देश ले जाने वाली कला कहा है। गांधीजी के शब्दों में ष्लोक गीत ही जनता की भाषा है, लोक गीत हमारी संस्कृति के पहरेदार है।''
- "स्टैंडर्ड डिक्शनरी ऑफ फोकलोर माइथोलॉजी एन्ड लेजेंड में लोक गीत को परिभाषित करते हुए कहा है कि ष्लोक गीत उस जनसमूह की संगीतमयी काव्य रचनाएं है जिसका साहित्य लेखनी अथवा छपाई से नहीं वरन मौखिक परम्परा से अविरत संबंद्ध रहता है।''

**राजस्थान लोक गीतों को तीन भागों में बांटा जा सकता है –**

1. जन साधारण के लोक गीत
2. व्यवसायिक लोक गीत
3. क्षेत्रीय लोक गीत

**जन साधारण के लोक गीत**

- ये गीत जन सामान्य द्वारा विभिन्न अवसरों पर गाये जाते है। इन्हे पांच भागों में बांटा जा सकता है–

**1. संस्कार सम्बंधित लोक गीत**

सगाई, बधावा, चाकभात, रतजगा, मायरा, हल्दी, घोड़ी, बना – बनी, वर निकासी, तोरण, हथलेवा, कंवर कलेवा, जीमणवार, कांकणडोरा, जला, जुआ – जुई, बिन्दोला, जच्चा

**2. त्यौहार सम्बंधित लोक गीत**

तीज, गणगौर, रसिया, होरी, धमाल।

**3. ऋतु सम्बंधित लोक गीत**

फाग, सियाला, बारह मासा, चेती, कजली, चौमासा, पपियो, बदली, मोर।

**4. धार्मिक लोक गीत**

लांगुरिया, तेजा, चिरजा, हरजस।

**5. विविध लोक गीत**

ऐसे गीतों में इडोणी, कांगसियो, गोरबंद, पणिहारी, लूर, ओळूं, सुपणा, हिचकी, मूमल, कुरजां, काजलिया, कागा आदि अत्यंत मधुर है। बच्चों के क्रीड़ा गीत, जादू – टोने से संबंधित कामण गीत आदि में लोक संगीत का सौंदर्य दिखाई देता है।

# व्यवसायिक लोक गीत

- राजस्थान में कई जातियों ने राजतंत्रों के समय संगीत को व्यवसाय के रूप में अपनाया इन जातियों ने अपने आश्रय दाता, राजा महाराजा तथा सामंतों कि प्रशंसा में गीत गाये।

# प्रमुख संगीतजीवि जातियां

- ढोली, मिरासी, लगां, कलावंत, भाट, राव, जोगी, कामड़, वैरागी, गंधर्व, भोपे, भवाई, राणा, कालबेलिया, कथिक आदि
- इन गीतों में मांड, देस, सोरठ, मारु, परज, कालिंगड़ा, जोगिया, आसावरी, बिलावल, पीलू, खमाज आदि कई रागों की छाया प्रतिबिम्बित होती है।
- व्यवसायिक जातियों द्वारा युद्ध के समय गाये जाने वाले वीर रसात्मक गीत सिंधु और मारु रागों पर आधारित थे।

## क्षेत्रीय लोक गीत

इन्हे मुख्यतः तीन भागों में बांटा जा सकता है –

1. **मरुस्थलीय लोक गीत –**
   - क्षेत्र – बाडमेर, जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर
   - गीत –कुरजां, पीपली, रतन राणो, मूमल, घूघरी, केवड़ा आदि
   - उन्मुक्त वातावरण की वजह से यंहा के लोक गीत ऊँचे स्वरों व लम्बी धुन तथा अधिक स्वर विस्तार वाले होते है।
2. **पर्वतीय लोक गीत –**
   - क्षेत्र – उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, सिरोही।
   - गीत –पटेल्या, बिछियो, लालर, माछर, नोखीला, थारी ऊंटा री असवारी, नावरी असवारी, शिकार, हमसीढों ।
   - इनमे सामूहिक लोक गीतों का प्रचलन अधिक है।
   - इनमे जनजातीय लोक गीत अधिक है।
3. **मैदानी लोक गीत –**
   - क्षेत्र – जयपुर, कोटा, अलवर, भरतपुर, करोली, धौलपुर
   - गीत – भक्ति एंव श्रृंगार रस के गीत

❖ इस प्रकार लोक संगीत की दृष्टि से राजस्थान एक समृद्ध प्रदेश है। रस की दृष्टि से यंहा सर्वाधिक संख्या श्रृंगार –रस के गीतों की है। जिसमे वियोग श्रृंगार का वर्णन अधिक मिलता है, जिसके पीछे कारण यंहा पुरुषों के जीविकापार्जन अथवा व्यापर आदि हेतु परदेस गमन की प्रवृति है। श्रृंगार रस के पश्चात शांत रस और फिर वीर रस रसात्मक गीत आते है।

## लोकगीत

1. **केसरिया बालम–**
   - ❖ राजस्थान का राज्य गीत जो ''मांड गायन शैली'' में गाया जाता है।
   - ❖ इसमें पत्नी परदेस गए अपने पति को वापस बुलाती है।
2. **मोरियो–**

- ❖ ऐसी लड़की द्वारा गाय जाने वाला गीत जिसकी सगाई तो हो चुकी है लेकिन विवाह होना बाकी है।

3. **कुरजां** –
   - ❖ इस कुरजां पक्षी के माध्यम से परदेस गए अपने पति के पास सन्देश भेजती है।
   - ❖ कुरंजा – साइबेरियन सारस
4. **सुवटियो** –
   - ❖ भील महिलाओं द्वारा तोते के माध्यम से अपने पति के पास सन्देश भेजा जाता है।

- ➢ **कागा** –
  - ❖ कौए को उड़ाकर महिला अपने परदेस गए पति के वापस आने का शगुन मनाती है।
- ➢ **हिचकी** –
  - ❖ मेवात क्षेत्र (अलवर) का एक लोकगीत है जो किसी की याद आने पर गाया जाता है।
- ➢ **बिच्छूडो** – हाड़ौती क्षेत्र का लोकगीत
- ➢ **कामण** –
  - ❖ दूल्हे को जादू–टोने से बचाने के लिए गाये जाने वाला गीत।
- ➢ बधावा –
  - ❖ किसी शुभ काम के पूरा हो जाने पर गाये जाने वाला लोकगीत।
- ➢ सीठणे –
  - ❖ शादी के समय महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गालियों वाले गीत।
- ➢ पावणा –
  - ❖ दामाद के ससुराल आने पर गाये जाने वाला गीत।
- ➢ झोरवा –
  - ❖ जैसलमेर क्षेत्र का लोक गीत जो किसी की याद में गाया जाता है।
- ➢ ढोला – मारु :
  - ❖ सिरोही क्षेत्र का एक लोक गीत जो ढोला मारु की प्रेम कहानी पर आधारित है।
  - ❖ ढाढ़ी जाति के गायकों द्वारा गाया जाता है।
- ➢ ओल्यू/कोयल –
  - ❖ लड़की की विदाई के समय गाया जाने वाला गीत
- ➢ पीपली–
  - ❖ पीपली के माध्यम से पत्नी अपने परदेस गए पति को याद करती है तथा उसको वापस आने के लिए कहती है।
  - ❖ शेखावाटी तथा मारवाड़ में तीज के समय ये गीत गाया जाता है।
- ➢ चिरमी–
  - ❖ ससुराल में रह रही लड़की चिरमी पौधे के माध्यम से अपने पीहर वालों को याद करती है।
- ➢ हमसीढों–
  - ❖ भील जनजाति द्वारा महिला – पुरुष द्वारा मिलकुल कर गाया जाने वाला लोकगीत।

- गोरबंध –
  - ऊंट के गले का आभूषण होता है। इसे बनाते समय महिलाओं द्वारा गीत गाया जाता है।
  - यह शेखावाटी क्षेत्र का लोकगीत है।
- **पणिहारी** –
  - पानी ले जाने वाली महिला
  - पतिव्रता महिला का लोकगीत

## राजस्थान की लोकगायन शैलियां

**मांड –**

- प्राचीन समय में ''जैसलमेर क्षेत्र'' को मांड कहा जाता था।
- अतः यंहा विकसित लोकगायन शैली मांड गायकी कहलाती है जो कालांतर में सम्पूर्ण राजस्थान में लोकप्रिय हुई।

**प्रमुख मांड गायिकाएं**

- अल्लाह मिलाई बाई } **बीकानेर**
- गवरी बाई } **बीकानेर**
- गवरी बाई – पाली
- जमीला बानो – जोधपुर
- बन्नो बेगम – जयपुर
- मांगीबाई – उदयपुर

**मांगणियार –**

- जैसलमेर, बाड़मेर क्षेत्र में मांगणियार जाति द्वारा विकसित लोकगायन शैली है।

**प्रमुख वाद्य यंत्र–**

- कमायचा – साकर खान मांगणियार
- खड़ताल – सद्दीक खान मांगणियार
- सद्दीक खान मांगणियार
- राजस्थान लोक कला अनुसन्धान परिषद् – जयपुर

**लंगा–**

- जैसलमेर, बाड़मेर क्षेत्र में लंगा जाति द्वारा विकसित लोक गायन शैली

**मुख्य वाद्य यंत्र–**

- कमायचा

❖ सारंगी

**मुख्य गीत** –

❖ नीम्बुड़ा (गर्भवती महिला द्वारा गाया जाने वाला गीत)

**तालबंदी**–

❖ ''ब्रज क्षेत्र'' के साधु – सन्यासियों द्वारा विकसित लोक गायन शैली जो राजस्थान के भरतपुर, करोली, अलवर, सवाई माधोपुर आदि क्षेत्रों में लोकप्रिय हुई।

**मुख्य वाद्य यंत्र** – नगाड़ा

## राजस्थान के संगीत घराने

| घराना | संस्थापक | अन्य कलाकार |
|---|---|---|
| जयपुर (ख्याल गायन शैली) | मनरंग | मोहम्मद अली खान कोठी वाले |
| पटियाला<br>(जयपुर घराने की शाखा) | अली बक्श<br>फतेह अली<br>टोंक के नवाब ने इन्हें उपाधि दी थी– जनरल–कर्नल | गुलाम अली खान |
| अतरौली (जयपुर घराने की शाखा) | साहब खां | मानतोल खान (रुलाने वाले फकीर) |
| मेवाती | घग्घे नजीर खां | पंडित जसराज |
| किराना | बन्दे अली खां | 1. भीमसेन जोशी<br>2. रोशन आरा बेगम<br>3. गंगू बाई हंगल<br>4. उस्ताद रज्जब अली |
| डागर | बहराम खान डागर | |
| बीनकार | रज्जब अली खान बीनकार | |
| अल्लाह दियां खां | अल्लाह दियां खां | किशोरी अमोनकर |
| सेनिया घराना | सूरत सेन | अमृत सेन |
| रंगीला घराना | रमजान खान | |
| कत्थक घराना | भानू जी | |

## राजस्थान के लोक गीतों की विशेषताएं

❖ हमारे लोक गीतों में प्रकृति का मानवीकरण दिया गया है जो हमारे प्रकृति प्रेम को दिखाता है। जैसे – चिरमी, पीपली, जीरा

❖ हमारे लोकगीतों में पशु – पक्षियों को पारिवारिक सदस्य माना गया है जैसे –कागा, कुरंजा, सुवटियो

- ❖ हमारे लोकगीतों से हमारी सामाजिक मान्यताओं का पता चलता है।
- ❖ लोकगीतों से हमारी संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती है।
- ❖ हमारे लोक गीतों में श्रृंगार रस का वर्णन हुआ है लेकिन उनमे अश्लीलता नहीं है।
- ❖ हमारे लोक गीत विभिन्न जनजातियों के लिए रोजगार का साधन बने।
- ❖ हमारे लोक गीतों से विभिन्न संगीत घराने तथा लोकगायन शैलियां विकसित हुई।
- ❖ राजस्थान में सामंती वातावरण होने के कारण वीर – रस के गीत गाये गए।
- ❖ लोक देवी–देवताओं के गीत निराश मन में आशा का संचार करते है।
- ❖ स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राजस्थान में विभिन्न लोकगीत गए गए जिससे राजस्थान में जनजागरण विकसित हुआ। पंछीडा ।
- ❖ हमारे लोकगीतों से हमारी क्षेत्रीय विशेषताएं तथा आर्थिक स्थिति का पता चलता है।

# लोक नृत्य

- राजस्थान के लोक नृत्य दो प्रकार के होते है
  1) क्षेत्रीय लोक नृत्य
  2) जनजातिय लोक नृत्य
- क्षेत्रीय लोक नृत्य-
  1) घूमर-
     - यह राजस्थान का राज्य नृत्य है।
     - इसे राजस्थान की आत्मा कहा जाता है।
     - इसमे महिलाएं अपनी धुरी पर घूमती है तथा केवल हाथो का लचक दार प्रदर्शन किया जाता है।
     - केवल महिलाओं द्वारा तीज त्योंहार व अन्य अवसर पर किया जाता है
     - इसमें 8 चरणो को सवाई कहा जाता है
     - मुख्य वाद्ययंत्र - ढ़ोल, नगाड़ा, शहनाई
  2) कच्छी घोड़ी-
     - शेखावटी क्षेत्र मे पुरुषों द्वारा किया जाने वाला व्यवसायिक लोक नृत्य है।
     - इसे चार पुरुष 2 पंक्तियों मे नृत्य करते है
     - नृत्य करते समय फूल के खिलने तथा बंद होने का दृश्य सा प्रतीत होता है।
     - पुरुषों से लकड़ी की घोड़ी बाँधी जाती है।
  3) अग्नि नृत्य-
     - यह जसनाथी संप्रदाय के लोगो द्वारा किया जाता है
     - प्रमुख केंद्र- कतरियासर (बीकानेर)
     - विशेषताएँ-
     a) जलते हुए अंगारो पर नृत्य
     b) फते - फते की ध्वनि का प्रयोग
     c) कृषि क्रियाएँ
     - बीकानेर महाराजा गंगा सिंह द्वारा प्रोत्साहन दिया गया।
  4) ढ़ोल नृत्य-
     - प्रचलन- जालौर क्षेत्र
     - शैली- थाकना शैली

- ढोली, माली, सरगड़ा, भील जाति के पुरुषो द्वारा किया जाता है
- इसे जय नारायण व्यास ने इसको प्रोत्साहन दिया था।

5) घुडला नृत्य-

- जोधपुर मे महिलाओं द्वारा शीतलाष्टमी से लेकर गणगौर के मध्य यह नृत्य किया जाता है
- इसे राजा सातल की याद में किया जाता था, जिसने घुडले खान को मारा था।
- महिलाएं सिर पर छिद्रित मटका रखकर नाचती है
- मटके मे जलता हुआ दीपक रखा जाता है
- मणिशंकर गांगुली , कोमल कोठारी , तथा देवी लाल सामर ने इस नृत्य को प्रोत्साहित किया।
- कोमल कोठारी को 2 बार पदम पुरस्कार दिया जा चुका है
- कोमल कोठरी ने विजय दान देथा के साथ मिलकर 1960 मे बोरुंदा जोधपुर मे रूपायन संस्थान की स्थापना की।
- देवीलाल सामर ने 1952 मे उदयपुर मे भारतीय लोक कला मण्डल की स्थापना की जो कठपुतली खेल के लिए जाना जाता है।

6) तेरह ताली-

- कामडिया पंथ की महिलाओं द्वारा रामदेवजी के मेले के समय यह नृत्य किया जाता है
- अब यह व्यवसायिक हो गया है
- इसमें 9 मंजीरे दायें पैर मे तथा 2 मंजीरे कोहनियों के पास बांधकर एवं 2 मंजीरे हाथ मे लेकर बैठ कर नृत्य किया जाता है
- नृत्य करते समय महिलाएं करतब दिखाती है
- वाद्य यंत्र- तानपुरा, चौतारा
- मुख्य केंद्र- पादरला (पाली)
- मुख्य कलाकार- मांगी बाई

7) चरी नृत्य-

- किशनगढ़ क्षेत्र मे गुर्जर महिलाओं द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य हैं
- महिलाएं सिर पर चरी रखकर नाचती है
- चरी में जलते हुए कपास के बीज रखे जाते है
- मुख्य कलाकार- फलकु बाई

8) भवाई नृत्य-

- उदयपुर संभाग मे भवाई जाति द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य हैं।
- इसमें संगीत पर कम ध्यान दिया जाता है तथा करतब अधिक दिखाये जाते है
- विशेषताएँ-
  a) तलवार पर नाचना
  b) अंगारों पर नाचना
  c) सिर पर 7-8 मटके रखकर नाचना

9) गींदड़ नृत्य-

- यह नृत्य शेखावटी क्षेत्र मे होली के अवसर पर पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- गोल घेरों मे पुरुष डंडे टकराते हुए यह नृत्य करते है
- जो पुरुष महिलाओं के कपड़े पहन कर नाचता है उसे गणगौर कहा जाता है
- मुख्य वाद्य यंत्र- नगाड़ा

10) बम नृत्य-

- भरतपुर क्षेत्र मे पुरुषों द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य है।
- मुख्य वाद्य यंत्र- नगाड़ा (इसे ही बम कहा जाता है)
- इसमें गाये जाने वाले गीत को रसिया कहा जाता है, अत: इस नृत्य को बम रसिया भी कहा जाता है।

11) चंग नृत्य-

- होली के अवसर पर शेखावटी क्षेत्र में किया जाता है

12) बिंदौरी नृत्य-

- यह होली के अवसर पर झालावाड़ क्षेत्र में किया जाता है

13) डांग नृत्य-

- होली के अवसर पर नाथद्वारा क्षेत्र में किया जाता है।

## जनजातिय लोक नृत्य

| भील | गरासिया | कालबेलिया | कंजर | कथोड़ी | मेव | सहरिया |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गैर | वालर | चकरी | चकरी | मावलिया | रणबाजा | शिकारी |
| गवरी | माँदल | शंकरीया | धाकड़ | होली | रतवई | |
| युद्ध | लूर | बागड़िया | | | | |
| द्विचक्री | कूद | | | | | |
| नेज़ा | जवारा | पणिहारी | | | | |
| घूमरा | मोरिया | इंडोणी | | | | |
| हाथीमना | गौर | | | | | |

- भील जनजाति के नृत्य-

1) गैर-
   - मेवाड़ क्षेत्र मे भील जनजाति का लोक नृत्य
   - यह लोक नृत्य मारवाड़ मे भी होली के अवसर पर किया जाता है तथा इसमें सभी जाती, धर्म के लोग शामिल होते है
   - गोल घेरे मे डंडे टकराते हुए पुरुषों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
   - मुख्य केंद्र- कनाना ( बाड़मेर )
   - नृत्य मे पहने जाने वाले कपड़े – ओंगी

2) गवरी-
   - मेवाड़ मे भील परूषों द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य रक्षा बंधन के अगले दिन से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है इसे राई नृत्य भी कहा जाता है

3) युद्ध-
   - इसे तलवार व भाले के साथ किया जाता है।

4) द्विचक्री-
   - इसे दो चक्र बनाकर किया जाता है।

5) नेज़ा-
   - यह भील तथा मीणा दोनों जनजातियों से संबन्धित नृत्य है
   - इसमें महिला तथा पुरुष दोनों भाग लेते है
   - इसमें लकड़ी के एक डंडे पर नारियल बांध दिया जाता है महिलाए इस नारियल की रक्षा करती है तथा पुरुष इसे उतारने का प्रयास करते है

6) घुमरा-
   - बांसवाड़ा क्षेत्र में भील महिलाओं द्वारा किया जाता है

7) हथिमाना-
   - विवाह के अवसर पर पुरुषों द्वारा घुटनों के बल बैठ कर नृत्य किया जाता है

- गरासिया जनजाति के नृत्य-

1) वालर-
   - इसे बिना वाद्य यंत्र के किया जाता है।
   - इसमें महिला तथा पुरुष दोनों भाग लेते है
   - नृत्य करते समय 2 वृत बनाए जाते है।

2) मादल-
   - इसे मांद्ल वाद्य यंत्र के साथ किया जाता है

3) लूर-
   - लूर गोत्र की गरासिया महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
   - नृत्य करते समय महिलाओं के 2 पक्ष होते है
   - इसमें वर पक्ष की महिलाएं वधू पक्ष से कन्या की मांग करती है

4) कूद-
   - यह बिना वाद्य यंत्र के तालियों की थाप पर किया जाने वाला नृत्य है।

5) जवारा-
   - गरासिया महिलाओं द्वारा होली के समय हाथों मे ज्वार लेकर यह नृत्य किया किया जाता है

6) मोरिया-
   - यह विवाह के समय गरासिया पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।

7) गौर-
   - यह गणगौर के समय किया जाने वाला नृत्य है।

- कालबेलिया जनजाति के नृत्य-

1) चकरी-
   - महिलाएं गोलाकार मुद्रा मे तेज तेज नृत्य करती है
   - मुख्य कलाकार- गुलाबों

2) शंकरिया-
   - प्रेम कहानी पर आधारित कलबेलिया युगल नृत्य

3) बगड़िया-

- भीख माँगते समय कालबेलिया महिलाओं द्वारा किए जाने वाला नृत्य है।
- मुख्य वाद्य यंत्र- पुंगी ,खंजरी
- कालबेलिया नृत्य युनेस्को की हेरिटेज लिस्ट मे शामिल है
- कालबेलिया नृत्य सिखाने के लिए हाथी गाँव मे प्रशिक्षण स्कूल खोला गया है।

- कंजर जनजाति के नृत्य-

1) चकरी-

- इसे महिलाओं द्वारा किया जाता हैं।
- इस नृत्य को करते समय महिलाएं खुसनी नामक वस्त्र पहनती है।

2) धाकड़-

- इसे कंजर पुरुषों द्वारा किया जाता है।

- कथोड़ी जनजाति के नृत्य-

1) मावलिया-

- पुरुषों द्वारा नवरात्र के समय किया जाता है।

2) होली-

- इसे महिलाओं द्वारा होली के समय किया जाता है।
- नृत्य के दौरान पिरामिड का निर्माण किया जाता है।
- महिलाएँ फड़का साड़ी पहन कर नृत्य करती है।

Mob. No. 9636977490

Springboard ACADEMY

# राजस्थान की जनजातियाँ

राजस्थान का जनजाति की जनसंख्या की दृष्टि से भारत में छठा स्थान है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| I$^{st}$ | – मध्यप्रदेश | II$^{nd}$ | – महाराष्ट्र |
| III$^{rd}$ | – उड़ीसा | IV$^{th}$ | – बिहार |
| V$^{th}$ | – गुजरात | VI$^{th}$ | – राजस्थान |

- राजस्थान में जनजाति की सर्वाधिक जनसंख्या 'उदयपुर' में है।
- जनजाति का सर्वाधिक प्रतिशत 'बांसवाड़ा' में है।
- जनजाति की न्यूनतम जनसंख्या – बीकानेर
- न्यूनतम प्रतिशत – 'नागौर'

## 1. कंजर जनजाति

**कंजर** शब्द की उत्पति काननचार से हुई हैं, जिसका अर्थ है- जंगल में विचरण करने वाला।

- कंजर जनजाति मुख्यत: हाड़ौती क्षेत्र में निवास करती है।
- कंजर जनजाति का मुख्य व्यवसाय 'अपराध करना' है।
- अपराध करने से पहले भगवान से आशीर्वाद मांगते है, उसे 'पाती मांगना' कहते है।
- इनके देवता:-
  - (i) जोगणिया माता: कंजरो की कुलदेवी चितौड़गढ़ में मंदिर है।
  - (ii) चौथ माता – सवाई माधोपुर
  - (iii) रक्त दंजी माता- बूंदी में (संतूर में)
  - (iv) हनुमानजी
- इनके घरों में पीछे की ओर खिड़की अनिवार्य होती है।
- हाकम राजा का प्याला पीने के बाद ये झूठ नहीं बोलते है।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुंह में शराब डाली जाती है।
- ये शव को दफनाते है।
- मोर का मांस इन्हें बेहद प्रिय होता है।
- इनके मुखिया को 'पटेल' कहते है।
- इनके नृत्य – चकरी, धाकड़

## 2. कथौड़ी जनजाति

- मूल रूप से महाराष्ट्र की जनजाति है।
- खैर के वृक्ष से कत्था बनाते थे, इसलिए कथौडी कहलाये।
- राजस्थान के उदयपुर जिले में सबसे ज्यादा निवास करते है।
- कथौड़ी दूध नहीं पीते हैं।
- इन्हें शराब बेहद प्रिय है। महिलाएं भी पुरुषों के बराबर बैठकर शराब पीती है।
- महिलाएं गहने नहीं पहनती हैं।
- महिलाएं गोदना गुदवाती (टेटू) है।
- कथौड़ी जनजाति का मुखिया 'नायक' कहलाता है।
- इनके झोंपडे को 'खोलरा' कहते है।
- कथौड़ी एक संकटग्रस्त जनजाति है। तथा इनके केवल 35-40 परिवार ही बचे हैं।
- राजस्थान सरकार इन्हें मनरेगा में विशेष लाभ देते हुए 250 दिन का रोजगार देती हैं।
- इनके देवता: डूँगरदेव, वाद्य देव, गाम देव, भारी माता, कंसारी माता
- इन्हें बन्दर का मांस बेहद प्रिय होता हैं।
- नृत्य :- मावलिया, होली

## 3. डामोर जनजाति

- मुख्यत: डूँगरपुर जिले में निवास करते हैं।
- डामोर अपनी उत्पत्ति राजपूतों से मानते है। इनके गौत्र चौहान, सिसोदिया, परमार आदि राजपूतों से समानता रखते है।
- डूँगरपुर की सीमलवाड़ा पंचायत समिति 'डामरिया क्षेत्र' कहलाती है।
- एकमात्र जनजाति जो वनों पर आश्रित नहीं है, बल्कि ये खेती व पशु पालन करते हैं।
- इनमें बहुविवाह प्रथा प्रचलित है।
- वधु मूल्य चुकाकर दुल्हन प्राप्त की जाती है। इस वधू मूल्य को 'दापा' कहते है।
- इनके मुखिया को 'मुखी' कहा जाता है।
- होली के अवसर पर किया जाने वाला कार्यक्रम 'चाडिया' कहलाता है।
- इनके मेले:-
  - छैला बावजी का मेला – पंचमहल (गुजरात)
  - ग्यारस की रेवडी का मेला – डूँगरपुर
- इनकी भाषा पर गुजराती प्रभाव दिखाई देता है।
- पुरुष भी महिलाओं की भांति गहने पहनते है।

### 4. साँसी

- मुख्यत: भरतपुर क्षेत्र में निवास करते हैं।
- एकमात्र जनजाति जो विधवा विवाह नहीं करती है।
- इनकी दो उपजातियां होती है:- बीजा, माला
- 'भाखर बावजी' की कसम खाकर झूठ नहीं बोलते हैं। भाखर बावजी की कसम खाते समय एक हाथ में पीपल का पता व दूसरे हाथ में कुल्हाडी रखते हैं।
- 'सिकोदरी माता' इनकी मुख्य अराध्य देवी है।
- कुकड़ी रस्म:- लड़की को शादी के बाद अपने चरित्र की परीक्षा देनी पड़ती है।

### 5. गरासिया जनजाति

- मुख्यत: सिरोही जिले के आबू और पिण्डवाड़ा, पाली की बाली तहसील व उदयपुर की गोगुनदा तहसील में निवास करते हैं।
- नक्की झील को पवित्र स्थान मानते है, व अस्थियों का विसर्जन करते हैं।
- मोर व सफेद पशु को पवित्र मानते हैं।
- इनका मुख्या 'सहलोत या पालवी' कहलाता है।
- प्रेम विवाह को अधिक वरीयता दी जाती है।
- सियावा गांव के गणगौर मेले में अधिक प्रेम विवाह होते है।
- गरासिया महिलाएं श्रृंगार प्रिय व सुन्दरता के लिए जानी जाती है। (राजस्थान में सबसे सुन्दर)
- गरासिया जनजाति के विवाह के प्रकार:-
  (i) मोरबंधिया
  (ii) ताणना - पैसे देकर विवाह करना
  (iii) पहरावणा
  (iv) मेलबो
  (v) खेवणो (माता विवाह)- प्रेमी से विवाह करना
  (vi) सेवा
- पंचायत व्यवस्था:
  1. मोटी न्यात :- गरासियों को बाबोर हाइया कहते है।
  2. नेनकी न्यात - मोडेरिया
  3. निचली न्यात
- यदि कोई गरासिया पुरुष किसी भील महिला से शादी कर लेता है, तो उसे भील गरासिया कहते है।
- यदि कोई गरासिया महिला किसी भील पुरुष से शादी कर लेती है, तो उसे 'गमेती गरासिया' कहा जाता है।
- इनके मेले-
  * कोटेश्वर मेला - अम्बाजी (गुजरात)
  * चेतर विचितर मेला - देलवाड़ा (सिरोही)
- किसी मृतक की याद में बनाये गये स्मारक को 'हूरे' कहा जाता है।
- ये भंडारण के लिए कोठियों का निर्माण करते है जिन्हें **सोहरी** कहा जाता है एवं घर के बाहर का बरामदा **ओसरा** कहलाता है।
- इनकी सहकारी संस्था - हेलरू

### 6. सहरिया जनजाति

- सहरिया शब्द की उत्पत्ति फारसी भाषा के 'सहर' शब्द से हुई है जिसका अर्थ जंगल होता हैं।
- बारां जिले के शाहबाद व किशनगंज तहसीलों में अधिक निवास करते हैं।
- एकमात्र जनजाति, जिसको भारत सरकार ने 'आदिम जनजाति' का दर्जा दे रखा है, अर्थात् आदिम जनजाति समूह में शामिल कर रखा है।
- त्रिस्तरीय पंचायत व्यवस्था:
  (i) पंचताई - 5 गांव
  (ii) एकदसिया - 11 गांव
  (iii) चौरासी - 84 गांव
- चौरासी गांव की पंचायत सीताबाड़ी के 'वाल्मीकि मंदिर' में होती है।
- वाल्मीकि को ये अपना आदिपुरूष मानते है।
- 'कोडिया माता' इनकी कुलदेवी है।
- ये तेजाजी व भैंरूजी की भी पूजा करते हैं।
- ये दहेज नहीं लेते है।
- मृतक व्यक्ति का श्राद्ध नहीं किया जाता है।
- ये मुगल नृत्य नहीं करते है।
- महिलाएं घर में पर्दा रखती है। घर से बाहर पर्दा प्रथा प्रचलन में नहीं है।
- महिलाएं गोदना गुदवा सकती है, परन्तु पुरूषों को मनाही है।
- इनका मुखिया 'कोतवाल' कहलाता है।
- इनके बड़े गांव को 'सहरोल' तथा बस्ती को 'सहराना कहा जाता है।
- गांव के बीच में एक सामुदायिक केन्द्र होता है।, उसे 'ढालिया/हथाई/बंगला' कहते हैं।
- पेड़ों के ऊपर घर बनाकर रहते हैं, उन्हें 'कोरूआ/टोपा/ गोपना' कहा जाता है।
- दीपावली पर हीड़ गाने की परम्परा है।
- होली पर लट्ठमार होली खेली जाती है।
- मकर सक्रांति के अवसर पर लकड़ी के डण्डों से 'लेगी' खेला जाता है।
- वर्षा ऋतु में आल्हा व लँहगी गीत गाते है।
- स**हरिया** जनजाति में 'धारी संस्कार' किया जाता है।

### 7. भील जनजाति

- राजस्थान की सबसे प्राचीन जनजाति है
- राजस्थान की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है। Ist - मीणा, IIIrd - गरासिया
- जेम्स टॉड भील शब्द की उत्पति बील से मानते है, जिसका अर्थ होता है- तीर कमान

- भीलों के घरों को 'टापरा' या 'कू' कहते है।
- मोहल्ले को 'फला' कहा जाता है।
- गाँव का मुखिया पालवी या तदवी कहलाता है।
- पूरी भील जनजाति का मुखिया 'गमेती कहलाता है।
- इनका कुलदेवता - टोटम
- पेड़ पौधों को 'टोटम' का प्रतीक माना जाता है।
- पेड़ पौधों को साक्षी मानकर भील जनजाति में शादी कर ली जाती है। इसे 'हाथीवेण्डो-विवाह' कहते हैं।
- भील जनजाति बाल विवाह नहीं करती है।
- शादी के अवसर पर दामाद को ससुराल में भराडी माता का चित्र बनाया पड़ता है।
- भराडी माता को विवाह की देवी कहा जाता है।
- केसरिया नाथ जी की केसर पीकर भील झूठ नहीं बोलते है।
- भील जनजाति के लोग महुआ से बनी शराब पीते हैं।
- भील लोग अपने मृत पूर्वजों की आत्मा के अस्तित्व में विश्वास करते है। इस कारण मृत व्यक्ति की पत्थर की मूर्ति बनाकर उसकी प्रतिष्ठा की जाती है, जिसे **चीरा बावसी** कहते है।
- 'फाइरे-फाइरे' इनका रणघोष है।
- किसी घुड़सवार सैनिक को मारने वाला भील 'पाखरिया' कहलाता है।
- भीलों को तलाक देने को 'छेडा फाड़ना' कहते है।
- यदि कोई महिला अपने पति को छोड़कर किसी अन्य पुरूष के साथ रहने लग जाती है, तो वह दूसरा पुरूष पहले पति को 'झगडा राशि' देता है।
- भील जनजाति द्वारा किया जाने वाला सामूहिक कार्य 'हेलमो' कहलाता है।
- भील स्थानान्तरित खेती करते हैं, जिन्हें 'वालरा (झूमिंग)' कहते है।
- वालरा दो प्रकार की होती है
  (i) चिमाता:- पहाडी भाग में
  (ii) दजिया:- समतल भाग में की जाती है।
- भील जनजाति के दो मेले लगते है:-
  (i) बेणेश्वर मेला (डूँगरपुर)
  (ii) घोटिया अम्बा (बाँसवाड़ा)
- घोटिया अम्बा में कुंती व पांचों पाण्डवों के मंदिर बने हुए है।

**ढेपाडा:**- भील पुरूषों द्वारा पहनी जाने वाली तंग धोती

**खोयतु:**- भील पुरूषों द्वारा कमर में पहने जाने वाला एक वस्त्र है।

**पिरिया:**- भील दुल्हन द्वारा शादी के अवसर पर पहने जाने वाली पीले रंग की साड़ी

**सिंदूरी:**- भील महिलाओं की लाल रंग की साड़ी

**परिजनी:**- भील महिलाओं द्वारा पैरों में पहनी जाने वाली पीतल की मोटी चूड़ियां।

**कछाबु:**- भील महिलाओं द्वारा कमर में पहने जाने वाला एक वस्त्र।

- भीलों की सर्वाधिक जनसंख्या **उदयपुर** में है।

### 8. मीणा जनजाति:

- राजस्थान की सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति
- सर्वाधिक जनसंख्या जयपुर जिले में निवास करती है।
- राजस्थान की सबसे शिक्षित जनजाति है।
- मुख्यत: दो वर्ग होते है।

1. जमींदार मीणा 2. चौकीदार मीणा

- भूरिया बाबा इनके कुल देवता है।
- ये बुझ देवता की भी पूजा करते हैं।
- 'मोरनी मांडना' मीणा जनजाति की एक प्रथा है। (शादी के समय)

Mob. No. 9636977490
Springboard ACADEMY

# राजस्थान के किले

**1. गागरोण का किलाः-** (जलदुर्ग)

वर्तमान झालावाड जिले में 'काली सिन्ध व आहू नदियों के किनारे स्थित है।

- डोड (परमार) शासकों ने इसका निर्माण करवाया। इसलिए इसे डोडगढ़ या धूलरगढ़ भी कहा जाता है।
- देवेनसिंह खींची ने बीजलदेव डोड को हराकर किले पर अधिकार कर लिया था।
- अचलदास खीची के समय 1423 ई में मालवा का शासक होशंगशाह आक्रमण करता है। इस समय गागरोण का पहला शाका हुआ।
- शिवदास गाडण ने 'अचलदास खींची री वचनिका' नामक पुस्तक लिखी।
- 1444 ई में पाल्हणसिंह गागरोण का राजा बनता है, जिसके समय मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी आक्रमण करता है। इस समय गागरोण का दूसरा शाका हुआ।
- महमूद खिलजी गागरोण का नाम बदलकर 'मुस्तफाबाद' कर देता है।
- अकबर ने बीकानेर के पृथ्वीराज राठौड़ को यह किला जागीर में दिया था।
- कालान्तर में इस पर कोटा राज्य का अधिकार हो जाता है।
- इसमें कोटा राज्य की 'टकसाल' थी।
- कोटा के दुर्जनसाल में यहां मधुसूदन मंदिर बनवाया।
- औरंगजेब ने यहां 'बुलन्द दरवाजा' का निर्माण करवाया।
- सूफीसन्त हमीदुद्दीन की दरगाह है, जिन्हें 'मीठे साहब' के नाम से जाना जाता है।
- यह किला बिना नींव के चट्टानों पर खड़ा किया गया है।
- किले में 'गीध कराई' स्थानः- वह स्थान जहां पर राजनैतिक कैदियों को मृत्युदण्ड दिया जाता है।
- जौहर कुण्ड व अन्धेरी बावडी बने हुए हैं।

**2. चितौडगढ़ः-**

चित्रांग मौर्य ने निर्माण करवाया। गम्भीरी व बेडच नदियों के किनारे मछली की आकृति में मेसा पठार पर यह किला बना हुआ है।

- इसे 'किलों का सिरमौर', 'राजस्थान का गौरव' भी कहा जाता है।
- यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- इसमें धान्वन दुर्ग को छोड़कर बाकी सभी विशेषताएं पाई जाती है।
- यहां तीन साके हुए
- इसमें रतनसिंह व पद्मिनी के महल बने हुए हैं।
- इसमें हैं:-

  लाखोटा बारी
  नवलखा भण्डार - बनवीर ने बनवाया
  तुलजा भवानी का मंदिर
  कालिका मंदिर
  एकलिंग मंदिर
  मीरा मंदिर
  समिद्धेश्वर मंदिर - मोकल ने त्रिभुवन मंदिर (भोजपरमार) का पुनर्निर्माण करवाकर समिद्धेश्वर मंदिर नाम रखा
  शृंगार चंवरी
  कुंभ स्वामी मंदिर

**3. कुम्भलगढ़ः-**

वर्तमान राजसमन्द जिले में स्थित है।

- महाराणा कुम्भा ने इसका निर्माण करवाया था।
- मेवाड का संकटमोचक किला व मेवाड-मारवाड का सीमा प्रहरी भी कहा जाता है।
- अबुल फजल के अनुसार 'यह किला इतनी ऊँचाई पर बना हुआ है, कि नीचे से ऊपर की ओर देखने पर व्यक्ति की पगड़ी गिर जाती है।'
- इसकी दीवार 36k.m. लम्बी है 1 चौड़ाई इतनी है, कि चार घोडे समानान्तर एक साथ दौड़ सकते हैं।
- जेम्स टॉड इसकी तुलना 'एट्रुस्कन दुर्ग' से करता है।
- किले में सबसे ऊपरी स्थान पर 'कटारगढ़' है, जो कुंभा का निजी आवास था। इसे 'मेवाड़ की आँख' कहा जाता है।
- इसमें 'मामा देव कुण्ड' व 'झाली रानी का मालिया' बना हुआ है।

**4. रणथम्भौरः-**

वर्तमान सवाई माधोपुर जिले में स्थित है।

- आठवीं शताब्दी में चौहान शासकों द्वारा इसका निर्माण करवाया गया।
- अण्डाकार आकृति की पहाडी पर बना हुआ है इसलिए दूर से देखने पर दिखाई नहीं देता है।

☞ अबुल फजल कहता है बाकी सब किले नंगे है, तथा यह किला बख्तरबंद (कवच) है।
☞ इसमें अन्य इमारत:
जोगी महल
सुपारी महल
जौरा भौरां - (अनाज भंडार)
त्रिनेत्र गणेश मंदिर
पीर सदरूद्दीन की दरगाह
अकबरकालीन टकसाल
हम्मीर कचहरी
बतीस खम्भों की छतरी
☞ गुप्त गंगा निकलती है।

**5. मेहरानगढ़ किला:-**
जोधपुर में स्थित है।
☞ 1459 ई. में राव जोधा द्वारा इसका निर्माण करवाया गया
☞ 'चिड़िया टूंक पहाड़ी' पर बना हुआ है।
☞ जोधपुर किले में राजाराम नामक व्यक्ति की बलि दी गई थी।
☞ 'मोर की आकृति' में बना हुआ है इसलिए 'मोरध्वज गढ़' कहा जाता है।
☞ इसे गढ़ चिन्तामणि' भी कहा जाता है।
☞ रूडयार्ड किपलिंग के अनुसार इसका निर्माण 'परियों व देवताओं' द्वारा किया गया है।
☞ इस किले में तोपें रखी हुई हैं- किलकिला, भवानी, शम्भूबाण, गजनी खाँ
☞ भूरेखाँ की मजार
☞ कीरत सिंह सोढ़ा की छतरी
☞ धन्ना भींवा की छतरी
☞ 'मानसिंह पुस्तकालय' बना हुआ है।
☞ महल:- मोती महल
तलहटी महल
श्रृंगार चौकी:- यहां जोधपुर के राजाओं का राजतिलक किया जाता है।
☞ राणीसर तालाब में से किले को जल आपूर्ति की जाती थी जोधा की हाडी रानी जसमादे, ने बनवाया था।
☞ चामुण्डा माता का मंदिर बना हुआ है।
☞ मोती महल

**6. जैसलमेर किला:-**
1155 ई. में राव जैसल ने इसका निर्माण करवाया था।
☞ यह किला त्रिभुजाकार आकृति में बना हुआ।
☞ राजस्थान का दूसरा बड़ा आवासीय किला है।
☞ इसके निर्माण में लगे पीले पत्थर सूर्य की रोशनी में चमकते है इसलिए इसे सोनारगढ़। सोनार किला या स्वर्णगिरि का किला भी कहते हैं।
☞ किले को दूर से देखने पर ऐसा लगता है 'मानों रेत के समुद्र में जहाज ने अपने लंगर खोल रखे हैं।
☞ दूर से देखने पर 'अंगडाई लेते शेर के समान' दिखाई देता है।
☞ अबुल फजल कहता है, कि केवल पत्थर की टांगे ही जैसलमेर किले में पहुँचा सकती है।
☞ 2009 ई में इस किले पर डाक टिकट जारी किया गया था।
☞ इस किले के निर्माण में चूने का उपयोग नहीं किया गया है।
☞ इसकी छत लकडी की बनी हुई है।
☞ इसमें 99 बुर्जे बनी हुई हैं। राजस्थान में सर्वाधिक बुर्जों वाला किला।
☞ इसमें जिनभद्र सूरि भण्डार है, जिसमें हस्त लिखित पुस्तकें व प्राचीन चित्र रखे गये हैं।
ओघ नियुक्ति वृति
दस वैकालिका सूत्र चूर्णि
☞ बादल महल
☞ पार्श्वनाथ मंदिर
☞ जैसलु किला
☞ 'सत्यजीत रे ने 'सोनारकिला' नाम से डोक्यूमेन्ट्री (छोटी फिल्म) बनाई।
☞ इस किले के चारों तरफ घाघरानूमा परकोटा बना हुआ है, जिसे कमरकोट कहते हैं।

**7. जूनागढ़ किला:-** (बीकानेर)
रायसिंह द्वारा 1589 से 1594 ई. के मध्य निर्माण करवाया गया।
☞ यह किला समतल भूमि पर बना हुआ है, इसलिए इसे 'जमीन का जेवर' कहते हैं।
☞ इसे 'रातीघाटी का किला' भी कहते हैं।
☞ चतुर्भुजाकार आकृति में बना हुआ है।
☞ इसमें 37 बुर्जे बनी हुई हैं।
☞ अन्य महल:-
अनुप महल
हर मंदिर
गंगा विलास:- इसकी दिवारों पर कृष्ण रासलीला के चित्र देखने योग्य हैं।
☞ किले के चारों तरफ खाई बनी हुई है।
☞ स्वतंत्रता के पूर्व भी इस किले में लिफ्ट लगी हुई थी (गंगासिंह के समय की)

**8. भटनेर किला:-** हुनमानगढ़ में
☞ भूपत भाटी ने इसका निर्माण करवाया।
☞ राजस्थान में सर्वाधिक आक्रमण झेलने वाला किला।
☞ इसे 'उतरी सीमा का प्रहरी' कहा जाता है। इसी कारण भाटी शासकों को 'उत्तर भड़ किवाड़ (उत्तर के दरवाजे की रक्षा करने वाला योद्धा) कहा गया।
☞ तैमूर अपनी आत्मकथा में इसे 'भारत का सबसे सुरक्षित किला' बताता है।

- एकमात्र किला, जिसमें हिन्दू महिलाओं के साथ मुस्लिम महिलाओं के जौहर का वर्णन मिलता है।
- इस किले में 52 बुर्जें बनी हुई हैं।
- किले की दिवार कच्ची मिट्टी से बनी हुई है।
- रायसिंह (बीकानेर) के विद्रोही बेटे दलपतसिंह व उनकी 6 रानियों के स्मारक बने हुए हैं।
- बलबन के भाई शेरखाँ की कब्र बनी हुई है।
- इसमें 365 कंगुरे है।
- हनुमानगढ़ में भद्र काली माता का मंदिर बना हुआ है।

**9. तारागढ़ किला (अजमेर):-**

चौहान राजा अजयराज द्वारा निर्माण करवाया गया। तब इसका नाम था 'अजयमेरूगढ़'।

- इसके बाद उडणा राजकुमार पृथ्वीराज (मेवाड़) ने अपनी रानी तारा के नाम पर नाम बदलकर तारागढ़ कर दिया।
- इसे 'गढ़ बीढली किला' व 'राजस्थान का जिब्राल्टर' भी कहा जाता है। - (बिशप हैबर ने कहा)
- इसमें 14 बुर्जें बनी हुई है।
- मीरान साहब (गवर्नर) की दरगाह बनी हुई है।
- एक घोड़े की मजार व हिंजडे की मजार बनी हुई है।
- पृथ्वीराज चौहान का स्मारक बना हुआ।
- शीशा खान गुफा बनी हुई है।
- विलियम बैटिंक ने इस किले को 'आरोग्य सदन (सेनिटोरियम)' में बदल दिया।
- दारा शिकोह (औरंगजेब का भाई) ने इस किले में शरण ली थी।
- उमादे (रूठी रानी) (मालदेव की wife) ने भी कुछ समय इस किले में व्यतीत किया था।

**10. अकबर का किला (अजमेर):-**

1570 ई में अकबर ने इसका निर्माण करवाया था।

- इसे अकबर का दौलतखाना भी कहा जाता है।
- हल्दीघाटी युद्ध की योजना इसी किले में बनाई गई थी।
- इसी किले में अंग्रेज राजदूत 'टॉमस रो' ने जहाँगीर से मुलाकात की थी।
- अंग्रेज इस किले में अपने हथियार रखते थे इसलिए इसे 'मैग्जीन का किला' भी कहा जाता है।
- वर्तमान में इसमें 'राजपुताना म्यूजियम' चल रहा है।

**11. आमेर का किला:-** जयपुर

- इसे 'काकिलगढ़' भी कहा जाता है।
- राजा मानसिंह ने इस किले का निर्माण शुरू करवाया था।
- यह किला महल की आकृति में बनाया गया है।
- इसमें लखनऊ जैसी भूलभूलैया है।
- मुगल प्रभाव अधिक दिखाई देता है।
- इसमें इमारतें:- सुख मन्दिर, यश मन्दिर, सुहाग मन्दिर, दिवान-ए-आम, शीश महल, दौलाराम बाग, मावठा जलाशय, केसर क्यारी बगीचा, अम्बिकेश्वर मंदिर, दीवान-ए-खास
- शिलामाता मंदिर
- जगत शिरोमणि मंदिर

**12. जयगढ़ किला:-**

- मानसिंह ने इसका निर्माण शुरू करवाया।
- 'मिर्जा राजा जयसिंह' ने इसका निर्माण पूरा करवाया व इसका नाम 'जयगढ़' रखा
- पहले इस स्थान को 'चिल्ह का टोला' कहा जाता था।
- 'सवाई जयसिंह' ने इस किले को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया व इसमें 'जयबाण' तोप रखवायी।
- यह आमेर के कछवाहा शासकों का संकट मोचक किला था।
- यह किला पानी के विशाल टांकों के लिए जाना जाता है।
- इस किले में कछवाहा शासकों का खजाना था। आपातकाल के दौरान इन्दिरा गाँधी ने यहाँ पर खुदाई करवाई थी।
- इस किले में कई गुप्त सुरंगे बनी हुई हैं। इसलिए इसे 'रहस्यमयी किला' भी कहा जाता है।
- इस किले में हथियार बनाने का कारखाना (शस्त्रागार) था।

**विजयगढ़ी:-** वह स्थान जहां सवाई जयसिंह ने अपने छोटे भाई विजयसिंह (चीमाजी) को गिरफ्तार करके रखा था।

**13. नाहरगढ़:-**

सवाई जयसिंह ने मराठा आक्रमणों से बचने के लिए इस किले का निर्माण करवाया।

- पहले इसका नाम 'सुदर्शनगढ़' था, परन्तु बाद में नाहरसिंह भौमियाजी के नाम पर इसका नाम 'नाहर गढ' किया गया।
- इसे 'जयपुर का पहरेदार' किला कहते है।
- जगतसिंह की प्रेमिका 'रसकपूर' को इस किले में गिरफ्तार करके रखा गया था।
- माधोसिंह II ने अपनी 9 दासियों के लिए यहाँ 9 एक जैसे महल बनवाये।

**14. तारागढ़ किला (बूंदी):-**

1354 ई में बरसिंह द्वारा इसका निर्माण करवाया गया।

- दूर से देखने पर झील में चमकते तारे के समान दिखाई देता है।
- रूडयार्ड किपलिंग के अनुसार, 'इस किले का निर्माण भूत-प्रेतों द्वारा किया गया है।'
- जेम्स टॉड के अनुसार, 'बूंदी किले के महल राजस्थान के सर्वश्रेष्ठ महल है।'
- बूंदी किले के महल अपने भित्ति चित्रों के लिए जाने जाते हैं।

**अन्य महल :-** सुख महल, छत्र महल, अनिरूद्ध महल, रानी जी की बावड़ी

- इस किले में 'गर्भ गुंजन तोप' रखी गई है।

**15. जालौर किला:-** सूकड़ी नदी के किनारे

- प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम ने निर्माण करवाया।
- कान्हडदेव सोनगरा ने पूनर्निर्माण करवाया।

☞ इसे 'सुवर्णगिरि का किला' कहते है। (सोनगिरि पहाड़ी पर)
☞ अलाई मस्जिद व खिलजी मीनार का निर्माण करवाया गया।
☞ तोपखाना मस्जिद (पहले परमार राजाओं द्वारा बनाई गई संस्कृत पाठशाला थी।)
☞ इसमें 'जैन कीर्ति स्तम्भ' बना हुआ है।
☞ वीरमदेव की चौकी
☞ जोधपुर महाराजा मानसिंह ने राजा बनने से पहले इस किले में शरण ली थी।
☞ मारवाड़ प्रजामण्डल के नेता जैसे मथुरादास माथुर, गणेश लाल व्यास आदि को जालौर किले में नजरबंद किया गया था।
☞ इसमें मलिक शाह की दरगाह बनी है।

**16. सीवाणा का किला:-** वर्तमान बाड़मेर जिले में स्थित है।
☞ 'वीर नारायण पंवार' ने इसका निर्माण करवाया था।
☞ कूमट झाड़ी की अधिकता के कारण इसे कूमट दूर्ग भी कहा जाता है।
☞ ये 'मारवाड़ के राठौडों की शरण स्थली' तथा 'जालौर की कूंजी' कहलाता था।
☞ इसमें भांडेलाव तालाब बना हुआ है। (भायल सैनिक ने 1308 ई. में दूषित किया था)

**17. अचलगढ़ का किला:-** परमार शासकों द्वारा इसका निर्माण करवाया गया।
☞ महाराणा कुंभा इसका पुनर्निर्माण करवाता है।
☞ इसमें अचलेश्वर महादेव का मंदिर है, जहां शिवजी के अंगुठे की पूजा की जाती है। इस मंदिर के सामने 'दुरसा आढ़ा' की मूर्ति लगी हुई है।
☞ यहां कुम्भा व उसके पुत्र उदा. की मूर्ति लगी हुई है, जिन्हें 'सावन भादो की मूर्तियां' कहा जाता है।
☞ ओखा रानी का महल
☞ मन्दाकिनी कुण्ड

**भँवराथल:-** महमूद बेगड़ा (गुजरात) की सेना पर भंवरा मक्खियों ने आक्रमण कर दिया था।

**18. भरतपुर का किला:-** सूरजमल द्वारा इसका निर्माण करवाया
☞ उतरी गेट पर अष्टधातु दरवाजे लगे हैं।
☞ दूसरे अंग्रेज मराठा युद्ध के दौरान मराठा सेनापति जसवन्त राव होल्कर को भरतपुर राजा रणजीतसिंह ने शरण दी थी।
☞ अंग्रेज सेनापति लॉर्ड लेक इस किले को जीत नहीं पाया था, इसलिए इसे 'लोहागढ़' कहा जाता है।
☞ इस जीत की याद में रणजीतसिंह ने फतेह बुर्ज का निर्माण करवाया।

**इमारतें:-**

**किशोरी महल:-**
दादी माँ का महल, वजीर की कोठी, गंगा मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, जामा मस्जिद, मोती महल

☞ इस किले के चारों तरफ खाई बनी हुई है। 'मोती झील' का पानी 'सुजान गंगा नहर' के माध्यम से इस खाई में डाला जाता था। (खाई-सुजानगंगा खाई)
☞ मोती झील - बाणगंगा नदी, रूपारेल नदी

**19. बयाना का किला:-** वर्तमान भरतपुर जिले में स्थित है।
☞ विजयपाल ने दमदमा पहाड़ी पर इस किले का निर्माण करवाया।

**अन्य:-** विजयमंदिर गढ़, बाणासूर दूर्ग, बादशाह का किला
☞ समुद्र गुप्त ने बयाना में 'विजय स्तम्भ' का निर्माण करवाया। - राजस्थान का पहला विजय स्तम्भ
☞ समुद्र गुप्त के सामन्त विष्णु वर्धन ने ऊषा लाट (भीम लाट) का निर्माण करवाया।
☞ विष्णु वर्धन की रानी चित्रलेखा ने ऊषा मंदिर बनवाया।
☞ ऊषा मंदिर को मुबारक खिलजी ने 'ऊषा मस्जिद' में Change कर दिया।

**अन्य इमारत:-** अकबर की छतरी, जहाँगीरी दरवाजा, लोदी मीनार, दाऊद खाँ की मीनार, सादुल्ला सराय
☞ जहाँगीर का महल - पुष्कर

**20. बाला किला (अलवर):-**निकुम्भ क्षत्रियों (चौहानों) द्वारा इसका निर्माण करवाया गया।
☞ काकिल देव के पुत्र अलघुराय ने इसका पुनर्निमाण करवाया।
☞ हसन खाँ मेवाती ने भी इसकी मरम्मत करवायी।
☞ निकुम्भ महल
☞ जल महल
☞ जहांगीर इस किले में कई दिन तक रूका था इसलिए इसे सलीम महल/किला कहते हैं।

**21. कांकनवाड़ी किला:-** (अलवर)
मिर्जा राजा जयसिंह ने इसका निर्माण करवाया।
☞ औरंगजेब ने अपने भाई दारा शिकोह को गिरफ्तार करके इसी किले में रखा।

**22. माधो राजपुरा का किला:-** जयपुर जिले में स्थित है।
☞ माधोसिंह प्रथम ने मराठों पर जीत के बाद इस किले का निर्माण करवाया।
☞ यहां का किलेदार भारतसिंह नरूका टोंक नवाब अमीर खां पिंडारी की बेगमों को बन्धक बना कर ले आया था।

**23. चौमू का किला:-** जयपुर
☞ इसका निर्माण यहां के ठाकुर कर्णसिंह ने करवाया।

**अन्य नाम:-** चौमुहागढ़, धारधारागढ़, रघुनाथगढ़
☞ इसमें हवा मंदिर बना हुआ है।

**24. माण्डलगढ़ का किला:-** भीलवाड़ा में स्थित है।
☞ चानणा गुर्जर ने माण्डिया भील की याद में इस किले का निर्माण करवाया।
☞ हल्दीघाटी युद्ध से पहले मानसिंह इस किले में रूका था।
☞ यह मण्डल आकृति (Circle) में बना हुआ।

☞ यहां उंडेश्वर महादेव का मंदिर, शीतला माता का मंदिर व सागर-सागरी जलाशय है।
☞ माण्डलगढ़ में सांगा की छतरी है।

**25. शेरगढ़ किला (बारां):-** परवन नदी के किनारे बना हुआ है।
☞ इसे कोष वर्द्धनगढ़ भी कहा जाता है।

**26. शेरगढ़ किला (धौलपुर):-** कुषाणकालीन किला है।
☞ मालदेव नामक सामन्त ने इसका निर्माण करवाया
☞ शेरशाह सूरी ने इसका नाम शेरगढ़ रखा था।
☞ इसमें सैय्यद हुसैन की दरगाह बनी हुई है।
☞ इसमें 'हुनहुंकार तोप' रखी हुई है।
☞ धौलपुर के कमलबाग का बाबर अपनी आत्मकथा में वर्णन करता है।
☞ धौलपुर का निहाल टावर भारत का सबसे बड़ा घण्टाघर है।

**27. शाहबाद का किला (बारां):-** मुकुटमणि देव चौहान ने इसका निर्माण करवाया।
☞ अपने कालिंजर अभियान के लिए जाते समय शेरशाह सूरी ने इसका नाम सलिमाबाद कर दिया था।
☞ इसमें बादलमहल बना हुआ है।
☞ 'नवलवान तोप' रखी हुई है।

**28. कोटा का किला:-**जैत्रसिंह ने गुलाब महल का निर्माण करवाया था।
☞ कालान्तर में माधोसिंह यही पर कोटा का किला बनवाया है।
☞ जेम्स टॉड के अनुसार, 'आगरा किले के बाद कोटा किले का परकोटा सबसे बड़ा है।'

**29. भैंसरोडगढ़ का किला:-** चित्तौड़गढ़ जिले में चम्बल तथा बामनी नदियों के किनारे बना हुआ है।
☞ इसे 'राजस्थान का वैल्लोर' कहा जाता है।

**30. नागौर का किला:-** चौहान राजा सोमेश्वर के सामन्त कैमास ने निर्माण करवाया था।
☞ इसमें दोहरा परकोटा बना हुआ।

**31. कूचामन का किला:-** नागौर
☞ इसे जागीरी किलों का सिरमौर कहा जाता है। (जागीरदार ने बनवाया था)

**32. चुरू का किला:-** चुरू के सामन्त कुशालसिंह ने इसका निर्माण करवाया था।
☞ चांदी के गोले दागने वाला किला
☞ 1814 ई. में यहां का सामन्त स्योजी सिंह (शिवजी सिंह)था, जिसने सूरतसिंह (बीकानेर) व अंग्रेजों के विरूद्ध चांदी के गोले दागे थे।

**33. फतेहपुर का किला:-** 1453 ई. में फतेह खां कायमखानी ने इसका निर्माण करवाया था।
☞ तेलिन का महल☞ पीर निजामुद्दीन की दरगाह
☞ फतेहपुर में एक सरस्वती पुस्तकालय है।
[सरस्वती भण्डार उदयपुर में है।]

**34. सज्जनगढ़ का किला:-** उदयपुर
☞ सज्जनसिंह ने निर्माण करवाया था।
☞ इसे 'मेवाड़ का मुकुट मणि' कहा जाता है।
☞ सज्जनगढ़ अभ्यारण्य में है।
☞ इसे 'मानसून पैलेस' भी कहा जाता है।

**35. तिमनगढ़ का किला:-** वर्तमान करौली जिले में स्थित है।
☞ यहां 'ननद भोजाई का कुआ' बना हुआ है।

**36. दौसा का किला:-** देवगिरि पहाड़ी पर बना हुआ है।
☞ 'छाजले की आकृति' में बना हुआ है।
☞ कछवाहा शासकों की प्रारंम्भिक राजधानी दौसा थी।

**37. ऊँटाला का किला:-** वल्लभनगर (उदयपुर)में स्थित है।
☞ इस किले को लेकर हरावल प्रतियोगिता (चूण्डावतों व शक्तावतों के मध्य) हुई थी।

**38. मोहनगढ़ का किला:-** जैसलमेर
☞ भारत का अन्तिम किला
☞ 1945 - 46 में बना था। इस समय जैसलमेर का राजा जवाहरसिंह था।

Mob. No. 9636977490

Springboard ACADEMY

# छतरियाँ

1. **गैटोर:**- यहाँ जयपुर के कछवाहा शासकों की छतरियां बनी हुई है।
   - ☞ इन छतरियों में ईश्वरीसिंह की छतरी नहीं है।
   - ☞ ईश्वरीसिंह की छतरी जयनिवास बाग (ईसरलाट के पास) में बनाई गई।
2. **आहड़ (उदयपुर):**- मेवाड के शासकों की छतरियां बनाई गई है।
   - ☞ सबसे पहली छतरी अमरसिंह I की बनाई गई।
   - ☞ इस स्थान को महासतियां भी कहा जाता है।
3. **पंचकुण्ड (मण्डौर):**- मारवाड/जोधपुर के राजाओं की छतरियाँ बनी हुई हैं।

   **जसवन्त थड़ा:**- जोधपुर महाराजा जसवन्तसिंह II की छतरी जो उसके बेटे सरदार सिंह ने 1899 ई. में बनवाई थी। इसे 'राजस्थान का ताजमहल' कहा जाता है।

   **कागा की छतरियाँ:**- यहाँ जोधपुर के सामन्तों की छतरियाँ बनाई गई है।
   - ☞ इनमें सबसे प्रमुख छतरी जसवन्तसिंह I के प्रधानमंत्री राजसिंह कुम्पावत की छतरी है।
4. **देवीकुण्ड (सागर):**- यहाँ बीकानेर के राजाओं की छतरियाँ बनी हुई है। इनमें कल्याणमल की छतरी सबसे प्रमुख है।
5. **बड़ा बाग की छतरियाँ:**- यहाँ जैसलमेर के राजाओं की छतरियाँ बनी हुई है।
6. **क्षार बाग (छत्र विलास) छतरियाँ:**- कोटा के राजाओं की
7. **केसर विलास बाग की छतरियाँ:**- बूंदी
8. **पालीवालों की छतरी:**- जैसलमेर
9. **नाथों की छतरी:**- जालौर
   - ☞ इन पर तोता बना होता था।
10. **बन्जारों की छतरी:**- लालसोट (दौसा)
11. **मिश्रजी की छतरी:**- नेहड़ा (अलवर)
    - ☞ इन पर दशावतारों (भगवान के 10 अवतार) का चित्रण मिलता है।
12. **गोपालपाल की छतरी:**- करौली
13. **गंगा बाई की छतरी:**- गंगापुर सिटी (भिलवाड़ा)
    - ☞ महादजी सिंधिया की पत्नि गंगा बाई थी।
14. **चौरासी खंम्भो की छतरी:**- बूंदी

# राजस्थान के महल एवं हवेलियाँ

1. **जैसलमेर की हवेलियाँ:**-

(i) पटवों की हवेली:- ये हवेलियाँ 5 है।
- ☞ गुमानचन्द बाफना ने इनका निर्माण करवाया।

(ii) सालिमसिंह की हवेली:-

(iii) नथमल की हवेती:- ये 2 हवेलियाँ है।
- ☞ हाथी व लालू नामक दो भाई इसके वास्तुकार थे।

(iv) सर्वोत्तम विलास पैलेस

(v) जवाहर विलास पैलेस

2. **जोधपुर की हवेलियाँ व महल:**-

(i) बड़े मियां की हवेली(ii)राखी हवेली(iii) पोकरण हवेली

(iv) अजीत भवन पैलेस:- राजस्थान का पहला हेरिटेज होटल

(v) उम्मेद भवन पैलेस (छीतर पैलेस)- छीतर पत्थर लगा है।
- ☞ उम्मेद भवन पैलेस अकाल राहत कार्यों में इसका निर्माण किया गया।
- ☞ विश्व का सबसे बड़ा आवासीय महल

(vi) राई का बाग पैलेस:- जसवन्तसिंह I की हाड़ी रानी 'जसवन्तदे' ने निर्माण करवाया था।
- ☞ जसवन्तसिंह II को दयानन्द सरस्वती ने इसी महल में उपदेश दिये थे।
- ☞ जसवन्तसिंह II की प्रेमिका नन्ही जान ने दयानन्द सरस्वती को जहर दिया था।

(vii)एक खम्भा महल:- अजीतसिंह ने बनवाया था।

(viii) बीजोलाई के महल

(ix) फूल महल:- नक्काशी के लिए प्रसिद्ध
- ☞ अभयसिंह ने बनवाया था।
- ☞ जोधपुर किले में है।

3. **कोटा के महल:**-

(i) हवामहल:- रामसिंह II ने निर्माण करवाया।

(ii) जगमन्दिर:- किशोरसागर तालाब के पास बना हैं।

(iii) गुलाब महल(iv) अभेडा महल

(v) अबली मीणी का महल

4. **बीकानेर के महल व हवेलियाँ:**-

(i) लाल गढ़ पैलेस(ii) गजनेर पैलेस(iii) बच्छावत की हेवली

(iv) रामपुरिया हवेली(v) मुँधड़ा हवेली(vi) मोहता हवेली
- ☞ बीकानेर की हवेलियों में मुगल, यूरोपीय व किशनगढ़ शैली के चित्र अधिक दिखाई देती है।

☞ ज्यामितीय अलंकरण व फूल पत्तियां अधिक बनाये जाते थे।

**5. डूँगरपुर के महल:-**

(i) जूना महल(ii) एक खम्बिया महल

**6. उदयपुर के महल:-**

कर्णसिंह के बनवाया

(i) कर्ण विलास महल (ii) दिल खुश महल

(iii) जगमन्दिर

(iv) प्रीतम निवास महल- जगतसिंह II ने बनवाया

(v) बागौर हवेली:- पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र का कार्यालय चलता है।

☞ पश्चिम राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, दमन व दीव की सांस्कृतिक कलाओं को संरक्षण दिया जाता है।

☞ इस हवेली में विश्व का सबसे लम्बी पगड़ी रखी हुई है।

**7. टोंक की हवेलियाँ:-**

(i) सुनहरी कोठी (ii) मुबारक महल

**8. जयपुर के महल:-**

(i) प्यारे मियां की हवेली (ii) सलीम मंजिल हवेली

(iii) जलमहल(iv) हवामहल(v) सामोद पैलेस:-

(vi) नायला फोर्ट :- बिल क्लिंटन रूका था।

**9. अलवर:-** विनय विलास पैलेस (सिटी पैलेस)

(ii) फूल बाग पैलेस(iii) हवा बंगला (तिजारा अलवर)

(iv) केसरोली पैलेस

**10. शेखावाटी की हवेली:-** शेखावाटी की हवेलियाँ अपने भित्ति चित्रों के लिए जानी जाती है।

(i) महनसर (झुन्झुनू)- सोने-चाँदी की दुकान (हवेली)
तोलाराम जी का कमरा

(ii) नवलगढ़ (झुन्झुनू)- भगतों की हेवली

(iii) झुन्झुनू - ईसरदास मोदी की हवेली
टीबडेवाले की हवेली
खेतडी महल - 'शेखावाटी का हवामहल'

(iv) श्रीमाधोपुर - पंसारी हवेली

(v) चुरू - मंत्रियों की हवेली
सुराणा हवेली
मालजी का कमरा

**11. झालावाड़ :-**

(i) काष्ठ प्रासाद - झालावाड़ के राजा राजेन्द्र सिंह ने निर्माण करवाया।

**12. डीग (भरतपुर):**

- 'जलमहलों की नगरी' कहते है।

(i) गोपाल महल (ii) सावन भादों महल

Springboard ACADEMY

# राजस्थान की चित्रकला

- राजस्थानी चित्रकला का सबसे पहला वैज्ञानिक आनन्द कुमार स्वामी ने राजपूत पेंटिंग्स नामक पुस्तक में सन् 1916 में प्रस्तुत किया। कुमार स्वामी, ओ.सी.गांगुली तथा हैवेल ने इसे 'राजपूत चित्रकला' कहा है। डब्ल्यू. एच. ब्राउन ने भी अपने ग्रंथ इण्डियन पेंटिंग्स में इस प्रदेश की चित्रकला को 'राजपूत कला' नाम दिया है। रायकृष्णदास ने इन मतों का खण्डन कर इसे 'राजस्थानी चित्रकला' नाम दिया। राजस्थान की चित्रकला की विभिन्न शैलियों पर अनेको विद्वानों ने पुस्तकें प्रकाशित कर इसके प्रारूप को स्थापित करने में सहयोग दिया है। जिनमें मेवाड़ पर सर्वश्री डॉ. मोतीचन्द, श्रीधर अंधारे, डॉ. आर. के. वशिष्ठ एवं किशनगढ़ पर श्री एरिक डिकिन्सन एवं डॉ. फैयाजअली, बूँदी–कोटा पर सर्वश्री प्रमोदचन्द्र, डब्ल्यू. जी. आर्चर एवं महाराजा ब्रजेन्द्रसिंह कोटा के नाम प्रमुख है।
- राजस्थान की चित्रकला को भौगोलिक व सांस्कृतिक रूप से 4 भागो में बाँटा गया।
  1. मेवाड शैली – चावंड शैली, उदयपुर शैली, नाथद्वारा शैली, देवगढ़ उपशैली, शाहपुरा उपशैली तथा बनेडा, बागौर, बेगूँ, केलवा आदि ठिकाणों की कला।
  2. मारवाड शैली – जोधपुर शैली, बीकानेर शेली, किशनगढ़ शैली, अजमेर शैली, नागौर शैली, सिरोही शैली, जैसलमेर शैली तथा घाणेराव, रियाँ, भिणाय, जूनियाँ आदि ठिकाणा कला।
  3. हाडौती शैली – बूँदी शैली, कोटा शैली, झालावाड उपशैली।
  4. ढुढांड – आमेर शैली, जयपुर शैली, शेखावाटी शैली, अलवर शैली, उणियारा उपशैली तथा झिलाय, ईसरदा, शाहपुरा, सामोद आदि ठिकाणों की कला।
- राजस्थान में आलनिया दर्रा (कोटा), बैराठ (जयपुर) तथा दर (भरतपुर) नामक स्थानों से शैलाश्रयों (गुफओं) में आदिमानव द्वारा बनाये रेखांकन प्रदेश की प्रारम्भिक चित्रण परम्परा को दर्शाते है। वी.एस.वाकणकर ने राजस्थान में 1953 में कोटा में चम्बल घाटी और दर्रा, झालावाड़ के निकट कालीसिंध घाटी और अरावली में माउंट आबू तथा ईडर में चित्रित शैलाश्रयों की खोज की। राजस्थान में सर्वाधिक प्राचीन उपलब्ध चित्रित ग्रंथ 1060 ई. में रचित 'ओध निर्युक्ति वृत्ति' एवं 'दस वैकालिका सूत्र चूर्णि' जैसलमेर भण्डार में मिले है।
- राजस्थानी चित्रकला की जन्मभूमि मेदपाट (मेवाड़) है, जो अजंता चित्रशैली से पूर्णतया प्रभावित है। राजस्थानी चित्रकला पर प्रारम्भ में जैन शैली, गुजरात शैली और अपभ्रंश शैली का प्रभाव था, किन्तु बाद में यह मुगल चित्रकला से प्रभावित हुई।

# मेवाड

➢ राजस्थानी चित्रकला का प्रारम्भिक और मौलिक रूप मेवाड़ शैली में मिलता है। मेवाड़ शैली के अंतर्गत पोथी ग्रंथों का अधिक चित्रण हुआ है। 1260 ई. का 'श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रचूर्णि' नामक चित्रित ग्रन्थ इस शेली का प्रथम उदाहरण है जो तेजसिंह के राज्यकाल में आहड़ में चित्रित किया गया।

यह शैली 1423 ई. में मोकल के शासनकाल में देलवाड़ा में लिखी गयी सुपासनाह चरियम पुस्तक में भी दिखायी देती है। डगलस बैरेट एवं बेसिल गे ने 'चौरपंचाशिका शैली' का उद्‌गम मेवाड़ में माना है। महाराणा कुंभा का काल कलाओं के उत्थान की दृष्टि से स्वर्णिम युग माना जाता है। उदयसिंह (1535–1572ई.) के काल में बने चित्रों में भगवत पुराण का 'परिजात अवतरण' (1540 ई.) मेवाड़ के चित्रकार नानाराम की कृति है।

## चावण्ड / उदयपुर

- महाराणा प्रताप के समय इस शैली का स्वतन्त्र विकास प्रारम्भ हुआ।
- चित्रकार नासिरूद्‌दीन ने ढोला मारू का चित्र बनाया जो वर्तमान में राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में रखा गया।
- ''अमरसिंह प्रथम'' के समय 1605 ई. में नासिरूद्‌दीन ने ''रागमाला'' का चित्रण किया। यह चित्र भी राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में रखा गया है। इसी समय ''बारहमासा'' का भी चित्रण किया गया।
- ''जगतसिंह प्रथम'' का शासन ''मेवाड की चित्रकला का स्वर्णकाल'' था। इस समय ''चितेरो की ओबरी'' (तस्वीरा रो कारखानो) का निर्माण करवाया। इस समय साहिबदीन ने महाराणाओं के व्यक्तिगत चित्र बनाने प्रारम्भ किये। साहिबदीन ने रागमाला का चित्रण भी किया था। मनोहर भी इस काल का मुख्य चित्रकार था।
- जयसिंह के समय लघुचित्रों का निर्माण अधिक हुआ।
- संग्रामसिंह द्वितीय के समय कलीला दमना तथा मुल्ला दो प्याजा के लतीफे, गीत गोविन्द, बिहारी सतसई, सुन्दर श्रृंगार चित्रित किये गये।

## मुख्य चित्रकार

- नुरूद्दीन :– जगतसिंह द्वितीय का चित्र बनाया था।
- कृपाराम
- गंगाराम
- जगन्नाथ

➢ मेवाड शैली में पुरूषाकृति गठीली मूँछों से युक्त चेहरे, विशाल नयन, खुले हुए अधर, छोटी ग्रीवा तथा छोटा कद, उदयपुरी पगड़ी व लंबा साफा तथा चित्रांकन सरलता के भाव से युक्त, मीनाकृत आँखें, सीधी लंबी नाक तथा भरी हुई दोहरी चिबुक ठिगना कद, लूगडी–घाघरे और कंचुकी तथा ठेठ राजस्थानी आभूषणों से सज्जित रहा है। प्रकृति का संतुलित चित्रण मेवाड़ चित्रकला की प्रमुख विशेषता रही है। अधिकतर लाल, पीले, हरे, नीले, सफेद आदि सूचक रंगों का प्रयोग किया गया है। ''कदम्ब के पेड'' का अधिक चित्रण होता था। शिकार के दृश्यों में 3–D प्रभाव होता था।

## नाथद्वारा

- वल्लभ सम्प्रदाय के अधिक प्रभाव के कारण भगवान श्रीकृष्ण के चित्र अधिक बने।
- नाथद्वारा की पिछवाई चित्रकला प्रसिद्ध है। इसमें भगवान श्रीकृष्ण के मंदिर में मूर्ति के पीछे कपड़े के पर्दे अथवा दीवारों पर कृष्ण लीलाओं का चित्रण किया जाता था।
- यह शैली उदयपुर तथा बृज शैली का मिलाजुला रूप है।
- 18 वीं सदी के इन चित्रों में कृष्ण चरित्र की बहुलता के कारण यशोदा, नन्द, बाल–ग्वाल, गोपियाँ तथा वल्लभ संप्रदाय के संतों का चित्रांकन विशेष रूप से हुआ है। इसमें हरे–पीले रंगों का अधिक प्रयोग हुआ है। इसकी अन्य विशेषताओं में केन्द्र में श्रीनाथजी की आकृतिए गायों का मनोरम दृश्य, आसमान में देवताओं का अंकन, पृष्ठभूमि में सघन वनस्पति, कदली वृक्षों की प्रधानता आदि है।

  नाथद्वारा शैली के चित्रकारों में बाबा रामचन्द्र के अतिरिक्त नारायण, चतुर्भुज, रामलिंग, चम्पालाल, घासीराम, तुलसीराम आदि के नाम भी प्रसिद्ध हैं। महिला चित्रकारों में कमला एवं इलायची का नाम मिलता है।

# देवगढ

- 1680 में ''द्वारिकादास चुण्डावत'' के समय प्रारम्भ हुई।
- ''श्रीधर अंधारे'' द्वारा इस चित्रकला को प्रकाश में लाया गया।
- ''मेवाड, मारवाड, ढुढाँड'' शैलीयों का मिश्रण है।
- इस शैली के भित्ति चित्र मोती महल, अजारा की ओबरी में देखने को मिलते हैं।
- इस शैली के प्रमुख चित्रकारों में बगता, कँवला प्रथम, कँवला द्वितीय, हरचंन्द, नंगा, चोखा एवं बैजनाथ है। प्राकृतिक परिवेश, शिकार के दृश्य, अन्तःपुर, राजसी ठाठ–बाठ, श्रृंगार, सवारी आदि इसके प्रमुख विषय रहे है। इसमें पीले रंग की बहुलता रही है।

## मारवाड चित्रकला

- तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ ने सातवीं सदी में मारू देश में चित्रकार श्रृंगधर का उल्लेख किया है, जिसने पश्चिमी भारत में यक्ष शैली को जन्म दिया। इसके प्रारम्भिक चित्रावेश हमें प्रतिहारकालीन ओध निर्युक्ति वृत्ति में मिलते है।

## जोधपुर

- मालदेव के समय जोधपुर चित्रकला का विकास प्रारम्भ हुआ। इस समय उत्तराध्ययन सूत्र नामक जैन ग्रन्थ तथा चोखेलाव महल (जोधपुर) में भित्ति चित्र चित्रित किये गये।
- सूरसिंह के समय ढोलामारू तथा भागवत पुराण का चित्रण किया गया।
- जसवन्तसिंह के समय मुगल प्रभाव आ गया था। इस समय भगवान श्रीकृष्ण के विविध चित्र बनाये गये।
- महाराजा अजीतसिंह के शासनकाल में सामन्ती संस्कृति से सम्बन्धित सुन्दर व प्राणवान चित्र बनाये गये।
- मानसिंह का शासनकाल जोधपुर चित्रकला का स्वर्णकाल था। इस समय नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित ग्रन्थों का चित्रण किया गया। जैसे :– शिव पुराण, दुर्गा पुराण, नाथ चरित्र।
- तख्तसिंह के समय इस चित्रकला पर यूरोपीय प्रभाव आ गया। इस समय ए. एच. मूलर ने दुर्गादास राठौड का चित्र बनाया।

## मुख्य चित्रकार

- शिवदास
- शंकरदास
- जीतमल
- रामसिंह
- अमरदास
- दाना भाटी– इसके चित्रों में मारवाड़ चित्रकला का चरमोत्कर्ष दिखाई देता है।

- छज्जू
- डालचन्द–इसने महाराजा अभयसिंह का नृत्य देखते हुए चित्र बनाया। जो मेहरानगढ़ संग्रहालय जोधपुर तथा कुँवर संग्रामसिंह संग्रह जयपुर में सुरक्षित है।
- किशनदास
- अमरदास
- वीरजी– 1623 ई. में पाली के प्रसिद्ध वीर पुरूष विठ्ठलदास चाँपावत के लिए रागमाला का चित्रण किया।

## विशेषताएँ

- मारवाड़ (जोधपुर) शैली के विषयों में प्रेमाख्यान प्रधान विषय रहा है। इन प्रेमाख्यानों में ढोला–मरवण, मूमल–महेन्द्रा, रूपमति–बाजबहादुर, कल्याण–रागिनी प्रसिद्ध रहे हैं। जोधपुर शैली के पुरूष लंबे–चौडे, गठीले बदन के तथा उनके गल–मुच्छ, ऊँची पगडी, राजसी वैभव के वस्त्राभूषण और स्त्रियों की वेशभूषा में ठेठ राजस्थानी लहँगा, ओढनी और लाल फुंदनों का प्रयोग प्रमुख रूप से हुआ है। बादाम सी आँखें और ऊँची पाग जोधपुर शैली की अपनी निजी देन है। मारवाड़ शैली में लाल, पीले रंग का बाहुल्य है, जो स्थानीय विशेषता है। हासिये में पीला रंग भरा जाता था। प्रकृति का चित्रण मारवाड़ के परिवेश के अनुकूल हुआ है। चित्रों में खंजन पक्षी को भी बखूबी दर्शाया गया है।

## बीकानेर

- रायसिंह के समय बीकानेर चित्रकला का विकास प्रारम्भ हुआ, तथा भागवत पुराण का चित्रण किया गया।
- अनूपसिंह का शासनकाल बीकानेर चित्रकला का स्वर्णकाल था।
- बीकानेर में 2 प्रकार की चित्रकलाएँ प्रचलित हुई।

## उस्ता कला

- ऊँट की खाल पर की जाने वाली स्वर्ण चित्रकारी उस्ता कला कहलाती है। इसके लिए अली रजा व रूक्नुद्दीन को लाहौर से बुलाया गया था।
- महाराजा अनूपसिंह के समय में उस्ता परिवार ने हिन्दू कथाओं, संस्कृत हिन्दी, राजस्थानी काव्यों को आधार बनाकर सैकडों चित्र बनाये। इस समय यह शैली चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई।
- हैसामुद्दीन उस्ता को उस्ता कला के लिए पदमश्री मिल चुका है।
- कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर (बीकानेर) में उस्ताकला सिखाई जाती है।
- रामलाल, हसन, आसीर खान इत्यादि प्रमुख चित्रकार थे।

## मथेरणा कला

- मथेरणा परिवार पारम्परिक जैन मिश्रित राजस्थानी शैली के चित्र बनाने में सिद्धहस्त था। इन्होनें बीकानेर महाराजाओं के चित्र बनाये।
- इसमें गीले पलस्तर पर चित्रकारी होती है। बीकानेर में इसे आला–गीला कहा जाता है। शेखावाटी क्षेत्र में इसे पणों कहा जाता है।

➢ Note :- इसे फ्रेस्को या अरायस भी कहा जाता है।

➢ चन्दूलाल, मुन्नालाल, मुकुन्द मुख्य चित्रकार थे।

## विशेषताएँ

- 18वीं सदी में ठेठ राजस्थानी शैली में चित्र बने उनकी रंगत ही अलग है। बीकानेर शैली में मुगल स्कूल के मिश्रित प्रभाव के फलस्वरूप इकहरी तन्वंगी कोमल ललनाओं का अंकन नीले, हरे और लाल, बैंगनी, जामुनी, सलेटी रंगों का प्रयोग, शाहजहाँ और औरंगजेब शैली की पगड़ियों के साथ ऊँची मारवाडी पगडियाँ, ऊँट, हरिन बीकानेरी रहन–सहन और राजपूती संस्कृति की छाप विशिष्ट रूप से देखने को मिलती है। बरसते बादलों में से सारस मिथुनों की नयनाभिराम आकृतियाँ भी इसी शैली की विशेषता है। यहाँ फव्वारों, दरबार के दृश्यों आदि में दक्षिण शैली का प्रभाव दिखाई देता है।

- रेत के धोरों का चित्रण, फूल–पत्तियों का चित्रण किया गया है।
- पंजाबी, मुगल, दक्कनी चित्रकला का प्रभाव दिखाई देता है।
- हिन्दु देवी–देवताओं के चित्र मुस्लिम चित्रकारों द्वारा बनाये गये।
- बीकानेर व शेखावाटी के चित्रकार के साथ नाम व दिनांक लिखते थे।

## किशनगढ़

- किशनसिंह ने सन् 1609 ई. में किशनगढ़ राज्य की नींव डाली।
- सावन्तसिंह (नागरीदास) का शासनकाल किशनगढ चित्रकला का स्वर्णकाल था।
- वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव अधिक होने के कारण भगवान श्रीकृष्ण के चित्र अधिक बनाये गये।
- सावन्तसिंह ने अपनी प्रेमिका रसिक बिहारी को राधा के रूप में चित्रित करवाया।

## प्रमुख चित्रकार

1. मोरध्वज निहालचंद– यह सावन्त सिंह का प्रमुख चित्रकार था। इसने सावन्तसिंह की पुस्तक नागर समुच्चय का चित्रण किया था। इसने रसिक बिहारी का व्यक्तिगत चित्र बनाया था। जिसे बणी–ठणी कहा जाता है। इस पर 1973 ई. में डाक टिकट जारी किया गया। ऐरिक डिक्सन ने बणी–ठणी को भारत की मोनालिसा कहा है।

2. अमीरचन्द ने ''चाँदनी रात की गोष्ठी'' नामक चित्र बनाया।

## विशेषताएँ

- इस चित्र शैली में पुरूषाकृति में लम्बा इकहरा नील छवियुक्त शरीर, मोती जड़ित श्वेत या मूँगिया पगड़ी, उन्नत ललाट, खंजनाकृत कर्णान्त तक खिंचे विशाल अरूणाभ नयन और नारी आकृति में तन्वंगी, लम्बी, गौरवर्ण, नुकीली चिबुक, सुराहीदार गर्दन, पतली कमर, लम्बी कमल पंखुडी सी आँखें चित्रित की गई है। दूर–दूर तक फैली झील, उनमें केलि करते हंस, बतख, सारस, तैरती नौकाएं, केले के गाछ एवं रंग–बिरंगें उपवन, चाँदनी रात में राधाकृष्ण की केलि–क्रीड़ाएँ, प्रातःकालीन और संध्याकालीन बादलों का

सिन्दूरी चित्रण किशनगढ़ शैली की विशेषताएँ हैं। बणी–ठणी अर्थात राधा के रूप–सौन्दर्य का चित्रांकन इस शैली का विशेष आकर्षण रहा है। यहाँ के प्रमुख रंग सफेद, गुलाबी, सलेटी और सिंदूरी है।

किशनगढ़ शैली के चित्रकारों में नानकराम, सीताराम सुरध्वज, मूलराज, मोरध्वज निहालचन्द, बदनसिंह, रामनाथ, सवाईराम, लालडी दास के नाम उल्लेखनीय हैं।

- सफेद व गुलाबी रंग का प्रयोग अधिक किया गया। हासिये (margin) में गुलाबी रंग भरा जाता था। कांगडा चित्रकला का प्रभाव। महिलाओं के चित्रों में नाक में वेसरि नामक आभूषण है।

## नागौर

- बुझे हुये रंगो का प्रयोग अधिक किया गया। नागौर उपशैली में लकडी के कंवाडो एवं किले के भित्ति–चित्रण में मारवाड़ शैली का प्रभाव दिखाई पड़ता है। 'वृद्धावस्था' के चित्रों को नागौर के चित्रकारों ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक चित्रित किया है। पारदर्शी कपडे चित्रित किये जाते थे।

## जैसलमेर

- जैसलमेर शैली का विकास मुख्य रूप से महारावल हरराज, अखैसिंह एवं मूलराज के संरक्षण में हुआ। 'मूमल' जैसलमेर शैली का प्रमुख चित्र है। जैसलमेर शैली की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इस पर मुगल या जोधपुर शैली का प्रभाव नहीं है, यह एकदम स्थानीय शैली है।

## अजमेर

- राजनैतिक उथल–पुथल तथा धार्मिक प्रभावों के कारण अजमेर शहर में जहाँ दरबारी एवं सामंती संस्कृति का अधिक प्रभाव रहा, वहीं गाँवों में लोक–संस्कृति तथा ठिकाणों में राजपूत संस्कृति का वर्चस्व बना रहा।

भिणाय, सावर, मसूदा, जूनियाँ जैसे ठिकाणों में चित्रण की परम्परा ने अजमेर–शैली के विकास और सवर्द्धन में विशेष योगदान दिया। जूनियाँ का चाँद, सावर का तैय्यब, नाँद का रामसिंह भाटी, खरबा से जालजी एवं नारायण भाटी, मसूदा से माधोजी एवं राम तथा अजमेर के अल्लाबक्स, उस्ना और साहिबा स्त्री चित्रकार विशेष उल्लेखनीय है। जूनियाँ के चाँद द्वारा अंकित 'राजा पाबूजी' का सन् 1628 का व्यक्ति–चित्र इस शैली सुन्दर उदाहरण है। यही एक ऐसी कलम रही जिसको हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई धर्म को समान प्रश्रय मिला।

## घाणेराव

- जोधपुर के दक्षिण में स्थित गोडवाड़ भूखण्ड में घाणेराव का प्रमुख ठिकाना है। चित्रकार नारायण, छज्जू एवं कृपाराम ने नवीन चित्र शैली का निर्माण किया, जिससे घाणेराव को मारवाड़ की एक उपशैली के रूप में महत्व दिया जा सकता है।

# ढुढाँड चित्रकला

## आमेर/जयपुर

- मानसिंह के समय आमेर चित्रकला का विकास प्रारम्भ हुआ।
- इस समय ''रज्मनामा'' (महाभारत का फारसी अनुवाद) के 169 चित्र (1588 ई.) आमेर के चित्रकारों द्वारा बनाये गये थे। इसी समय यशोधरा चरित्र (1591 ई.) नामक ग्रन्थ का चित्रण किया गया। इसी समय बैराठ के तथाकथित मुगल गार्डन और मौजमाबाद के भित्ति–चित्र भी इस शैली में निर्मित है जिन पर मुगल प्रभाव साफ दिखाई देता है।
- आमेर चित्रशैली का दूसरा महत्त्वपूर्ण चरण मिर्जा, राजा जयसिंह (1621–1667ई.) के राज्यकाल से प्रारम्भ होता है मिर्जा राजा जयसिंह ने 'रसिकप्रिया' और 'कृष्ण रूक्मिणी वेली' नामक ग्रन्थ अपनी रानी चन्द्रावती के लिय सन् 1639 ई. में बनवाये थे। इसमें कृष्ण और गोपियों का युगल स्वरूप लोक शैली में चित्रित है। आमेर में ही मिर्जा राजा जयसिंह ने 1639 ई. में गणेश पोल का निर्माण करवाया जो भित्तिचित्रों व अलंकरणों से सुसज्जित हैं।
- सवाई जयसिंह के समय सुरतखाना की स्थापना की गई। जहाँ चित्रकार चित्रों का निर्माण करते थे।
- महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह के समय चित्र सृजन का केन्द्र (सूरतखाना) आमेर से हट कर जयपुर आ गया। ईश्वरीसिंह के समय साहिबराम ने आदमकद चित्र प्रारम्भ किया।
- सवाई माधोसिंह प्रथम के समय कलाकारों ने चित्रों में रंगों को न भरकर मोती, लाख तथा लकड़ी की मणियों को चिपकाकर रीतिकालीन अलंकारिक मणिकुट्टिम प्रवृति को बढावा दिया। सवाई माधोसिंह प्रथम के समय गलता के मंदिरों, सिसोदिया रानी के महल, चन्द्रमहल, पुण्डरीक की हवेली में कलात्मक भित्ति चित्रण हुआ।
- सवाई प्रतापसिंह का शासनकाल जयपुर चित्रकला का स्वर्णकाल था। इस समय चित्रकला स्कूल की स्थापना की गई। इस समय लालचन्द नामक चित्रकार पशुओं की लडाई के दृश्य बनाता था। महाराजा सवाई प्रतापसिंह के समय में पचास से भी अधिक कलाकार सूरतखाने में चित्रों को बनाने के लिये नियुक्त थे, जिनमें रामसेवक, गोपाल, हुकमा, चिमना, सालिगराम, लक्ष्मण, आदि प्रमुख थे। इस समय राधाकृष्ण की लीलाओं, नायिका भेद, रागरागिनी, बारहमासा आदि का चित्रण प्रधानतः हुआ।

- महाराजा सवाई रामसिंह ने कला के विाकस के लिये 'महाराजा स्कूल आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स' की सन् 1857 ई. में स्थापना की, जो वर्तमान में 'राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स' के नाम से जाना जाता है।

## विशेषताएँ

- भित्ति चित्रण, पोथीचित्रण, आदमकद पोट्रेट, लघुचित्रण में जयपुर के कलाकारों ने मुगल प्रभाव को ग्रहण करते हुए राजपूती संस्कृति की नफासत और रंगों की लोक कलात्मकता को बनाये रखा है। बड़े–बड़े पोट्रेट (आदमकद व्यक्ति चित्र) एवं भित्ति चित्रण की परम्परा जयपुर शैली की विशिष्ट देन है। जयपुर के भित्ति–चित्रों की एक विशेष पद्धति हे जिसे स्थानीय भाषा में आलागीला, आराइश तथा मोराकसी कहा जाता है। इस पद्धति में चूने के तैयार पलस्तर को घोट कर चिकना कर लिया जाता है तथा इस पर चित्रण किया जाता है। राजस्थान में सर्वप्रथम आलागीला पद्धति का प्रारम्भ आमेर में हुआ जो कच्छवाहा–मुगल संबंधों के प्रभाव का परिणाम था।

  जयपुर शैली का प्रभाव ईसरदा, सिवाड, झिलाय, उणियारा, चौमू, सामौद, मालपुरा, जैसे ठिकानों पर भी रहा, जिससे वहाँ ठिकाना पेंटिंग विकसित होती रही।
- लाल–पीला व केसरिया, हरा रंग अधिक प्रयोग। हासिये में गहरा लाल रंग भरा जाता था।

➢ प्रमुख चित्रकार :– लालजी, कुशला, रामजीदास।

## अलवर

- अलवर के संस्थापक राव राजा प्रतापसिंह के साथ शिवकुमार तथा डालूराम नामक चित्रकार जयपुर से अलवर आये।
- बख्तावर के शासनकाल में अलवर चित्रकला की शुरूआत हुई तथा राजगढ़ के महलों में शीशमहल का चित्रण करवाया गया। इस समय के चित्रों में बख्तावर सिंह को जंगल में नाथों, जोगियों, फकीरों के साथ धर्म चर्चा करते हुए दिखाया गया है।
- विनयसिंह का समय अलवर चित्रकला का स्वर्णकाल था। विनयसिंह का अलवर चित्रकला में वहीं स्थान है जो मुगल चित्रकला में अकबर का था। बलदेव व गुलाम अली ने गुलिस्ता नामक पुस्तक का चित्रण किया। विनयसिंह स्वयं बलदेव से चित्रकारी सीखते थे।

- शिवदानसिंह के समय कामकला के आधार पर चित्र बनाये गए। नफीरी वादन का चित्र इस समय का सुन्दर उदाहरण है।
- महाराजा मंगलसिंह के समय मूलचन्द तथा उदयराम ने हाथीदाँत पर चित्रकारी की।
- महाराजा जयसिंह के शासनकाल में रामगोपाल, रामप्रसाद, जगमोहन, रामसहाय नेपालिया जैसे कलाकारों ने अलवर शैली को अंतिम समय तक जीवित रखा।

## विशेषताएँ

- चिकने व उज्ज्वल रंगों का प्रयोग अधिक किया जाता था।
- हासिये में बेल बूटे बनाये जाते थे।
- जयपुर, मुगल, ईरानी चित्रशैली का प्रभाव था।
- वेश्या चित्रण, योगासन चित्रण, लघु चित्रण अधिक किया गया।
- इस चित्रशैली में पुरूषों के मुख की आकृति आम की शक्ल में बनाई गयी है। स्त्रियों के कद कुछ ठिगने, उठी हुई वेणियाँ अत्यधिक परिश्रम से बनाये गये अंग–प्रत्यंग अलवर शैली की अपनी विशेषता है।

## उनियारा

- राव राजा सरदारसिंह ने धीमा, भीम, मीरबक्श, काशी, रामलखन आदि चित्रकारों को आश्रय प्रदान किया।
- राम–सीता, लक्ष्मण व हनुमान मीरबक्श द्वारा चित्रित प्रमुख चित्र है।
- इस शैली पर बूँदी तथा जयपुर का मिलाजुला प्रभाव दिखाई देता है।

## शेखावाटी

- शेखावाटी की हवेलियों के भित्ति चित्रों के कारण शेखावाटी को ओपन आर्ट गैलेरी कहा जाता है।
- कत्थई, नीले व गुलाबी रंग का प्रयोग अधिक किया गया। यूरोपीय प्रभाव अधिक दिखाई देता है।
- प्रमुख विषय – हाथी और घोडे, मल्लयुद्ध, दधिमंथन, गौदोहन, कामकला, रागरागिनी, साधुसंतों, लोककथाओं, दैवी मिथकों, विचित्र पशु–पक्षी, राक्षसों का चित्रण।

- अब इस अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर का क्षरण हो रहा है। फ्रांस के नदीन ला प्रेन्स ने फतेहपुर की हवेलियों के भित्ति चित्रों के सरंक्षण के सन्दर्भ में सराहनीय कार्य कर एक मिसाल पेश की है।

## हाडौती चित्रकला

### बूँदी

- सुरजन के समय बूँदी चित्रकला का विकास प्रारम्भ हुआ।
- शत्रुसाल के समय रंगमहल का निर्माण करवाया गया। जो भित्ति चित्रों के लिए विश्व प्रसिद्ध है।
- भावसिंह तथा उनके पुत्र अनिरूद्धसिंह ने मुगल शासकों के निर्देशों से दक्षिण भारत के युद्धों में भाग लिया, जिससे बूँदी शैली में दक्षिण शैली का प्रभाव समाविष्ट हुआ।
- उम्मेदसिंह का समय बूँदी चित्रकला का स्वर्णकाल था। इस समय चित्रशाला का निर्माण करवाया गया। जो भित्ति चित्रों का स्वर्ग है। उम्मेदसिंह को जंगली सुअर का शिकार करते हुये चित्रित किया गया (1750 ई.) है।

### विशेषताएँ

- हरा, गुलाबी, लाल, हिंगलू रंगों का प्रयोग अधिक किया गया।
- प्रकृति का चित्रण अधिक किया गया।
- मेवाड शैली का अधिक प्रभाव दिखाई देता है।
- बूँदी का किला अपने भित्ति चित्रों के लिए जाना जाता है।
- पशु–पक्षी, बादल, जलाशय, हरे–भरे वृक्ष, नाचते मोर आदि के चित्रण अधिक किया गया।
- रागरागिनी, नायिका भेद, ऋतु वर्णन, बारहमासा, कृष्णलीला, दरबार, शिकार, हाथियों की लड़ाई, उत्सव अंकन आदि शैली के चित्राधार रहे है।

➢ मुख्य चित्रकार :– अहमद, साधुराम, रामलाल, सुरजन, किसन।

# कोटा

- रामसिंह के समय कोटा चित्रकला का विकास प्रारम्भ हुआ।
- भीमसिंह के समय वल्लभ सम्प्रदाय के प्रभाव के कारण भगवान श्री कृष्ण के चित्र अधिक बनाये गये।
- उम्मेदसिंह का समय कोटा चित्रकला का स्वर्णकाल था।

## विशेषताएँ

- नारी सौन्दर्य का चित्रण अधिक किया गया।
- शिकार के दृश्यों का चित्रण अधिक किया गया।
- महिलाओं को पशुओं का शिकार करते हुये दिखाया गया।
- डालू नामक चित्रकार ने रागमाला का चित्रण किया था।
- हल्के हरे, पीले तथा नीले रंगों का प्रयोग अधिक हुआ है।

## प्रमुख चित्रकार

- रघुनाथ, गोविन्दराम, लच्छीराम, नूर मोहम्मद।
- डालू ने रागमाला का चित्रण किया था।

# राजस्थान की हस्तकला (Handicraft)

## थेवा कला

- ''काँच में सोने की कारीगरी'' से आभूषण बनाये जाते है। इसके लिए रंगीन बेल्जियम काँच का प्रयोग किया जाता था। इसके तहत महिलाओं के आभूषण, सजावाटी सामान तथा देवताओं की प्रतिमा बनाई जाती है।
- मुख्य केन्द्र :– प्रतापगढ़
- प्रवर्तक :– नाथू जी सोनी
- ''महेश राज सोनी'' को पदम्श्री मिल चुका है। गिरीश कुमार सोनी को इसके लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला चुका है।
- जस्टिन वकी ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय किया।

## टेराकोटा

- चिकनी मिट्टी को पकाकर' उसके मूर्तियाँ और खिलौने तथा सजावटी सामान बनाया जाता है।
- मिट्टी में एक चौथाई गधे का गोबर मिलाकर, उसको जमीन पर थापा जाता है एवं उस पर विभिन्न आकृतियाँ उभारी जाती है। तत्पश्चात एक सप्ताह तक सूखने के बाद इन्हें आग में 800 डि. सै. ताप में पका कर गैरू रंग का कर दिया जाता है। इस प्रकार टेराकोटा आकृतियों का निर्माण होता है।
- मुख्य केन्द्र :–

1. मोलेला (राजसमन्द) :– यहाँ के मोहनलाल कुमावत को पदम्श्री मिला है।
2. हरजी (जालौर) :– यहाँ पर देवताओं के घोड़े बनाये जाते है।
3. बू (नागौर)
4. बड़ोपल (हनुमानगढ़)

# ब्लू पॉटरी

- चीनी मिट्टी के सफेद बर्तनों पर नीले रंग के चित्र बनाये जाते है। यह कला मूलरूप से चीन तथा फारस की है। जो मुगल काल में भारत आई थी।
- सवाई रामसिंह के समय यह कला जयपुर में लोकप्रिय हुई। इसके लिए चूडामन व कालू नामक कारीगरों को भोला नामक कारीगर से प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए दिल्ली भेजा गया।
- कृपाल सिंह शेखावत को इसके लिए पद्मश्री मिल चुका है। इन्होने नीले रंग के अलावा भी 25 अन्य रंगो का प्रयोग किया। जिसे ब्लू पॉटरी की कृपाल शैली कहा जाता है।
- अन्य मुख्य कारीगर – नाथीबाई, त्रिलोकचन्द, भगवान सहाय, दुर्गालाल, हनुमान सहाय, गिरिराज, भैंरू खाखाड़ आदि।

# मीनाकारी

- सोने के आभूषणों में रंग चढ़ाया जाता है। मीनाकारी के लिए काले, नीले, गहरे पीले, नारंगी और गुलाबी रंग का प्रयोग किया जाता है।

➢ मुख्य केन्द्र :– जयपुर

- मानसिंह (आमेर के राजा) ने लाहौर से इसके कारीगरों को बुलाया था।
- कुदरत सिंह को इसके लिए पदम्श्री मिल चुका है।
- अन्य केन्द्र – नाथद्वारा, बीकानेर, रेतवाली (कोटा),।
- अन्य प्रमुख कारीगर – दुर्गासिंह, काशीनाथ, कैलाशचन्द्र।

# रंगाई–छपाई

## A. अजरख प्रिन्ट

- मुख्य केन्द्र :– बाडमेर
- नीले व लाल रंग का प्रयोग अधिक किया जाता है।
- ज्यामिति अलंकरण अधिक बनाये जाते है। जो तुर्की शैली का प्रभाव है।

## B. मलीर प्रिन्ट

- मुख्य केन्द्र :– बाड़मेर
- काले व कत्थई रंग का प्रयोग अधिक किया जाता है।

## C. सांगानेरी प्रिन्ट

- काले व लाल रंग का प्रयोग अधिक किया जाता है। इसमें लट्ठा व मलमल पर छपाई की जाती है।
- मुन्ना लाल गोयल ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध किया।

## D. बगरू प्रिन्ट

- प्राकृतिक रंगो का प्रयोग किया जाता है। बगरू प्रिन्ट का आँगन (पृष्ठभूमि) हरापन लिए होता है।
- बेलबूटे की छपाई की जाती है।

## E. आजम प्रिन्ट

- मुख्य केन्द –आकोला (चित्तौडगढ)

## F. जाजम प्रिन्ट

- मुख्य केन्द्र – चित्तौडगढ़
- गाडिया लोहार की महिलाओं के कपडे इसे प्रिन्ट में बनाये जाते है।

## G. बन्धेज प्रिन्ट

- मुख्य केन्द्र : जयपुर
- इसे ''Tie & Die'' कहा जाता है।

## H. लहरिया

- मुख्य केन्द्र : जयपुर, पाली।
- लड़के के जन्म पर पीला पोमचा तथा लड़की के जन्म पर गुलाबी पोमचा ओढा जाता है।

## I. चुनडी

- मुख्य केन्द्र – जोधपुर

## J. दाबू प्रिन्ट

- मुख्य केन्द्र – आकोला (चित्तौड़गढ)
- रंगाई छपाई में जिस स्थान पर रंग नहीं चढ़ाना हो, उसे लई या लुगदी से दबा देते हैं। यही लुगदी या लई जैसा पदार्थ 'दाबू' कहलाता है, क्योंकि यह कपड़े के उस स्थान को दबा देता है जहाँ रंग नहीं चढ़ाना होता।
- सवाई माधोपुर में मोम का, बालोतरा में मिट्टी का तथा सांगानेर व बगरू में गेहूँ के बींधण का दाबू लगाया जाता है।

## K. कोटा–डोरिया

- मुख्य केन्द्र – कैथुन (कोटा), मांगरोल (बाराँ)
- चौकोर डिजाइन व आकर्षक रंगों वाली साधा साड़ी होती है, जिस पर 300 वर्ग (चौकोर आकृतियाँ) छपी होती है।
- जालिमसिंह झाला इस कला में दक्ष मंसूर अहमद नामक बुनकर को हैदराबाद से लेकर आए थे एवं मंसूर अहमद ने ही इस कला की शुरूआत की थी। इसी कारण इस कला को मंसूरिया कला भी कहा जाता है।
- मुख्य कलाकार – जैनब।

## बादले

- जिंक (जस्ते) के बने बर्तन जिन पर कपडे या चमडे की परत चढ़ायी जाती है इनमें पानी ठण्डा रहता है।
- मुख्य केन्द्र :– जोधपुर

8. **जस्ते की मूर्तिया : जोधपुर**
9. **काष्ठ कला : बस्सी (चित्तौड़गढ)**
    - कावड एक मंदिरनुमा काष्ठ कलाकृति होती है जिसमें कई द्वार होते है एवं सभी द्वारों पर चित्र अंकित रहते है। कावड़ पूरी लाल रंग से रंगी जाती है एवं उसके ऊपर काले रंग से पौराणिक कथाओं को चित्रित किया जाता है।
    - बैवाण भी एक काष्ठ मंदिर है, जो सामने से खुला और तीन ओर से बंद होता है। बैवाण निर्माण निर्माण एवं इन पर लकड़ी की खुदाई कलात्मक होती है।
    - कावड़ बनाना चित्तौडगढ़ जिले के बस्सी गाँव के खैरादियों का पुश्तैनी व्यवसाय है।
    - प्रमुख कलाकार : मांगीलाल मिस्त्री।
10. **रमकड़ा उद्योग : गलियाकोट (डूंगरपुर)**
11. **खेसले : लेटा (जालौर)**
12. **पाव रजाई : जयपुर**
13. **दरियाँ :–**टांकला (नागौर), लवाण (दौसा), सालावास (जोधपुर)।
14. **गलीचे/नमदे :–** जयपुर, टोंक।
    - बीकानेर व जयपुर की जेल में कैदियों द्वारा गलीचे बनाये जाते है।

15. **मिरर वर्क : जैसलमेर**

16. **पेच वर्क : शेखावाटी**

17. **गोटा किनारी : खण्डेला (सीकर)**

- गोटा किनारी के प्रकार – किरण, बाँकडी, लप्पा, लप्पी।

18. **तारकशी के गहने :–**

- चाँदी के पतले तारों से आभूषण बनाये जाते है।
- मुख्य केन्द्र :– नाथद्वारा (राजसमन्द)

19. **खेल का सामान : हनुमानगढ़**

20. **खेती के औजार : नागौर**

21. **कागजी बर्तन : अलवर**

22. **कोफ्तगिरी : लोहे में सोने की कारीगरी**

- मुख्य केन्द्र : जयपुर, अलवर

23. **तहनिशा : पीतल में सोने की कारीगरी**

- मुख्य केन्द्र : जयपुर, अलवर

24. **नक्काशीदार फर्नीचर : बाड़मेर**

25. **संगमरमर की मूर्तिया : जयपुर (अर्जुन लाल प्रजापत को इसके लिए पदमश्री मिला था)**

26. **मोजडी : भीनमाल , बडगाँव (जालौर)**

27. **बीड़ी उद्योग : टोंक**

28. **नसवार : ब्यावर (अजमेर)**

29. **जडाई : जयपुर**

30. **तलवार : सिरोही**

31. **लाख का काम : जयपुर, लक्ष्मणगढ़ (सीकर), सवाई माधोपुर, इन्द्रगढ़ (बूँदी)।**

- जयपुर के अयाज अहमद लाख के काम के लिए प्रसिद्ध है। लाख का कार्य करने वाले व्यक्ति मणिहार कहलाते हैं। लाख से बनी चूडियाँ भोफड़ी कहलती है।

32. **कुट्टी का काम : जयपुर**

- सवाई रामसिंह के समय यह कला लोकप्रिय हुई।
- मुख्य कारीगर – सांवलसिंह और जमनाप्रसाद।

- कागज, चाक, मिट्टी, फविकोल, गोंद, आदि को गलाकर व पीसर लुगदी बना दी जाती है। कोई आकृति बनाने के लिए उस वस्तु के साँचे या मॉडल में तैयार लुगदी को दबा कर लगा दिया जाता है एवं सूखने पर फिनिशिंग देते हुए इच्छित रंग कर दिया जाता है। प्रायः कुट्टी से बनी पशु–पक्षी की आकृतियाँ अधिक प्रसिद्ध है।

**33. ब्लैक पॉटरी : कोटा**

**34. आरा–तारी : सिरोही**

**35. तीर–कमान : बोड़ीगामा (डूंगपुर), चंदूजी का गढ़ा (बांसवाड़ा)**

**36. छाता : फालना (पाली)**

**37. जरी का कार्य : जयपुर**

## राजस्थान के हस्तशिल्पों का भौगोलिक संकेतन

| भौगोलिक संकेतक उत्पाद | स्थान |
|---|---|
| कोटा डोरिया | कोटा |
| ब्लू पॉटरी | जयपुर |
| मोलेला क्ले वर्क | मोलेला (राजसमंद) |
| कठपुतली | उदयपुर |
| सांगानेरी हैंड ब्लॉक प्रिन्ट | सांगानेर, जयपुर |
| कोटा डोरिया लोगो | कोटा |
| थेवा कला | प्रतापगढ़ |
| मकराना मार्बल | मकराना, नागौर |
| बगरू हैंड ब्लॉक प्रिन्ट | बगरू, जयपुर |
| बीकानेरी भुजिया | बीकानेर |
| फुलकारी | श्रीगंगानगर |

# राजस्थान के आधुनिक चित्रकार

1. रामगोपाल विजयवर्गीय
   - इनके गुरू ''शैलेन्द्रनाथ डे'' थे।
   - इन्होने ''सबसे पहले एकल चित्र प्रदर्शनी'' लगाना प्रारम्भ किया था।
   - इन्होनें अभिसार निशा नामक पुस्तक लिखी।
2. गोवर्धन लाल ''बाबा''
   - इन्होनें भील जनजाति से संबन्धित चित्र अधिक बनाए। इसलिए इन्हें ''भीलो का चितेरा'' कहा जाता है।
   - प्रमुख चित्र – बारात
3. सौभाग्य मल गहलोत
   - इन्हे ''नीड का चितेरा'' कहा जाता है।
4. परमानन्द चोयल
   - ''भैंसो का चितेरा'' कहा जाता है।
5. जगमोहन माथोडिया
   - ''श्वान का चितेरा'' कहा जाता है।
6. कुन्दन लाल मिस्त्री
   - इन्होनें महाराणा प्रताप के चित्र अधिक बनाये थे।
   - इनके चित्रों को देखकर ''राजा रवि वर्मा'' ने महाराणा प्रताप को चित्र बनाया।

   | |
   |---|
   | • राजा रवि वर्मा त्रावणकोर (केरल) के निवासी थे। इन्हें ''भारतीय चित्रकला का पितामह'' कहा जाता है। |

   - कुन्दन लाल मिस्त्री को चित्र निपुण तथा चित्रकला भूषण की उपाधियाँ दी गई थी।
   - अन्य चित्र – कुम्हारिन बाजार की ओर, क्षमादान, ग्राम्यबाला, सीता स्वयंवर।
7. भूरसिंह शेखावत
   - मुख्य चित्र – सर्दियों की सांझ में खाना बनती हुई स्त्री और उसके बाल बच्चों का चित्र, सारंगी बजते हुए लोक कलाकार, सब्जी तोलते हुए मालन।

- इन्होनें क्रांतिकारियों तथा देशभक्त नेताओं के चित्र बनवाये।
- इनके चित्रों में राजस्थानी प्रभाव अधिक होता है।

8. देवकीनन्दन शर्मा
   - इन्होनें प्रकृति चित्रण अधिक किया।
   - इन्हें ''The master of nature and living object'' कहा जाता है।
9. ज्योतिस्वरूप कच्छावा
   - जंगल के चित्र ज्यादा बनाये। Inner jungle नाम से चित्र श्रृंखला बनाई थी।
10. ए. एच. मूलर
    - मुख्य चित्र – राव जोधा, दुर्गादास, पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा महाराणा प्रताप को अकबर के समक्ष समर्पण न करने व युद्ध जारी रखने के लिए ओजपूर्ण पत्र, जयजंगलधर बादशाह (करणसिंह), राव जैतसी द्वारा कामरान के शिविर में रात्री हमला।

## राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ

1. विषय वस्तु की विविधता, वर्ण विविधता, लोक जीवन का चित्रण, भावनात्मक चित्रण, प्रकृति चित्रण देशकाल के अनुरूप है।
2. प्रकृति का मानवीकरण, कर पशु–पक्षियों तथा पेड–पौधों को भी मनुष्य के सुख–दुख से जोडा है।
3. राजस्थान की चित्रकला में गहरे तथा चटकीले रंगों का प्रयोग अधिक किया जाता था।
4. राजस्थानी चित्रकला में भक्ति से सम्बन्धित चित्र अधिक है, जो मन्दिर व मठों में भित्ति चित्रों के रूप में दिखाई देते है।
5. राजस्थान में सामन्ती जीवन से सम्बन्धित चित्र अधिक बनाये गये जैसे : शिकार के दृश्य, महफिल के दृश्य।
6. राजस्थान चित्रकला में नारी सौन्दर्य का चित्रण अधिक किया गया है।
7. राजस्थान की चित्रकला में मुगल प्रभाव दिखाई देता है। जैसे : विलासिता के दृश्य, पारदर्शी कपड़े।
8. मुगल चित्रकारों की अपेक्षा राजस्थानी चित्रकारों को अधिक छूट प्राप्त थी अतः उन्होनें जीवन के सभी पक्षों से सम्बन्धित चित्र बनाये।

9. हमारी चित्रकला में प्रकृति का श्रृंगारिक चित्रण किया गया है, जैसे रागमाला, बारहमासा।
10. चित्रों में साम्नजस्य दिखाई देता है मुख्य आकृति तथा पृष्ठभूमि दोनों एक दूसरे से जुडे हुये होते थे।

# राजस्थान की बोलियाँ

- 1912 ई. में जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने लिंग्वेस्टिंग सर्वे ऑफ इण्डिया नामक पुस्तक लिखी जिसमें राजस्थानी भाषा का वर्णन मिलता है। ग्रियर्सन ने राजस्थानी भाषा को पाँच भागों में बांटा था।

I. पश्चिमी राजस्थानी, मारवाड़ी व उसकी उपबोलियाँ
II. दक्षिणी राजस्थानी, निमाड़ी व बागड़ी (भीली)
III. उत्तरी–पूर्वी राजस्थानी, अहीरवाटी तथा मेवाती
IV. महल पूर्वी राजस्थानी, ढुँढड़ी तथा उसकी उपबोलियाँ
V. दक्षिण–पूर्वी राजस्थानी, मालवी, रागड़ी, सोधवाड़ी उपबोलियाँ

## सामान्य वर्गीकरण

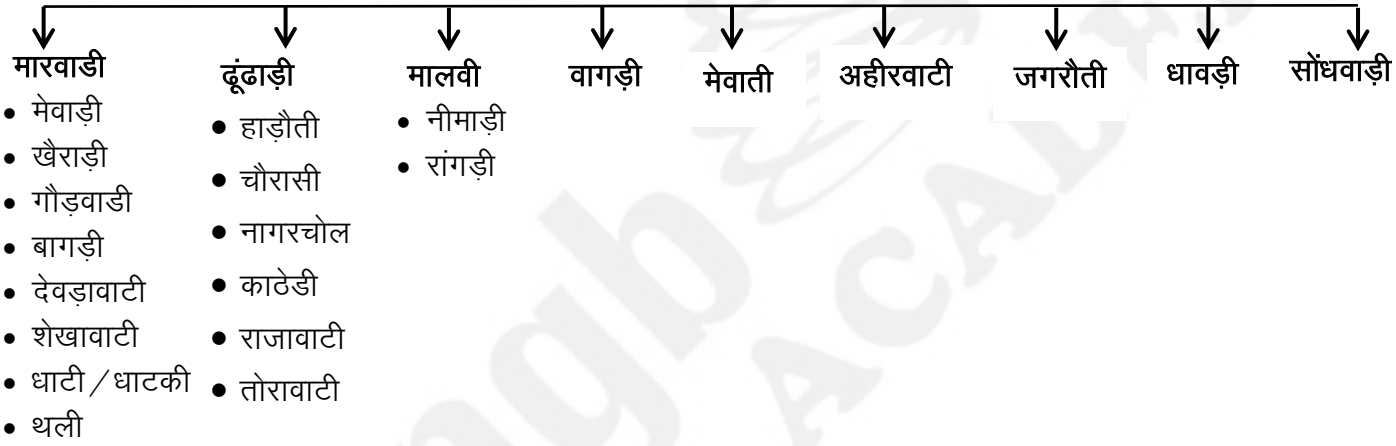


**1. मारवाड़ी** – मारवाड़ क्षेत्र

पश्चिमी राजस्थान विशेषकृत–जोधपुर, नागौर, पाली, बीकानेर, बाड़मेर–जालौर।

**उदाहरण–** मीरां बाई की पुस्तकें
ढोला मारू रा दूहा
राजिया रा दूहा
वेलि किसण रूक्मणि री।
जैन साहित्य–मरूभाषा
चारण साहित्य

**प्रमुख उपबोलियां–**

(i) **मेवाड़ी :–**

- मारवाड़ी की उपबोली।

- मेवाड़ क्षेत्र में (उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, व भीलवाड़ा क्षेत्र) बोली जाती है।
- साहित्य – कुंभा के नाटक।

कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति
लक्ष्मी कुमारी चुंडावत की पुस्तकें
चतुरसिंह की पुस्तकें

(ii) **शेखावाटी** –

- राव शेखा के क्षेत्र में बोली जाने वाली।
- मारवाड़ी की उपबोली।
- क्षेत्र–चुरू, सीकर, झुंझुनूं
- ढुढाँड़ी का प्रभाव।

(iii) **बांगड़ी –** क्षेत्र – बांगड़ प्रदेश (हनुमानगढ़ श्रीगंगानगर, चुरू क्षेत्र)
यह भी मारवाड़ी की उपबोली है।

(iv) **थली** :– क्षेत्र– जैसलमेर, बीकानेर, चुरू

(v) **गोड़वाड़ी** :– क्षेत्र– पाली, जालौर
साहित्य – बीसलदेव रासो

(vi) **खैराड़ी** – क्षेत्र– शाहपुरा (भीलवाड़ा), बूँदी के कुछ भाग
मेवाड़ी+हाड़ौती+ढूँढाड़ी का मिश्रण

(vii) **देवड़ावाटी**– सिरोही

(viii) **धाटी/धाटकी–**मारवाड़ी की उपबोली
क्षेत्र–बाड़मेर (पाकिस्तान के सीमा वाला क्षेत्र)

2. **ढुढाँड़ी** :–

- क्षेत्र – जयपुर, टोंक, दौसा, किशनगढ़ व लावा ठिकाना में।
- साहित्य– दादू सम्प्रदाय की पुस्तकें ।

गुमानीराम कायस्थ ने आइन–ए–अकबरी का ढुँढाड़ी में अनुवाद किया।
ईसाइ मिशनरियों ने बाइबिल का ढुँढाडी में अनुवाद किया।

- **प्रमुख उपबोलियाँ** – तोरावाटी, राजावाटी, नागरचोल

(i) **हाड़ौती** – ढुँढाड़ी की उपबोली।
क्षेत्र–कोटा, बूँदी झालावाड़, बाराँ।
साहित्य – सूर्यमल मीसण (बूँदी) की रचनाएँ।

(ii) **तोरावाटी** – क्षेत्र – झुंझुनूं, सीकर, उत्तरी जयपुर क्षेत्रों में।

(iii) **नागरचोल** – क्षेत्र– सवाईमाधोपुर तथा टोंक क्षेत्र में।

(iv) **काठेडी** – ढुँढाड़ी की उपबोली।

जयपुर के दक्षिणी क्षेत्र में बोली जाती है।

(v) **चौरासी** – शाहपुरा (जयपुर) एवं टोंक।

(vi) **राजावाटी** – पूर्वी जयपुर के कुछ क्षेत्रों में बोली जाने वाली।

3. **मालवी –** क्षेत्र– प्रतापगढ़, कोटा, झालावाड़ व मध्यप्रदेश का मालवा क्षेत्र।

- मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र की भाषा जो मूल रूप से मारवाड़ी व मेवाड़ी का मिश्रण है।
- **उपबोलियाँ –**

(i) **नीमाड़ी** – इसे मालवी की उपबोली भी कहा जाता है।

- मध्यप्रदेश का निमाड क्षेत्र जैसे–धार, बुरहानपुर व खरगौन में बोली जाती है।
- दक्षिणी राजस्थानी भी कहा जाता है।

(ii) **रांगडी** – मालवा क्षेत्र के राजपूतों द्वारा बोली जाती है।

4. **वागड़ी –** डूँगरपुर एवं बांसवाड़ा क्षेत्र में।

- गुजराती प्रभाव दिखाई देता है।
- जॉर्ज ग्रियर्सन ने इसे भीली कहा था।
- साहित्य – संत मावजी की रचनाएँ।

5. **मेवाती –** क्षेत्र– अलवर, भरतपुर।

ब्रजभाषा का प्रभाव।

साहित्य – चरणदासी व लालदासी सम्प्रदाय की रचनाएँ।

6. **अहीरवाटी–क्षेत्र–** जयपुर के कोटपुतली से लेकर अलवर के बहरोड तक।

- इस इलाके को राठ भी कहते हैं। इसलिए भाषा को अहीरवाटी कहा जाता है।
- अलीबख्शी ख्याल इसी भाषा में किया जाता है।
- साहित्य–जोधराज की हम्मीर रासो
  शंकर राव की भीम विलास

7. **जगरौती** – क्षेत्र – करौली
8. **धावड़ी** – क्षेत्र– उदयपुर
9. **सोंधवाड़ी** – क्षेत्र–झालावाड़

# राजस्थान का साहित्य

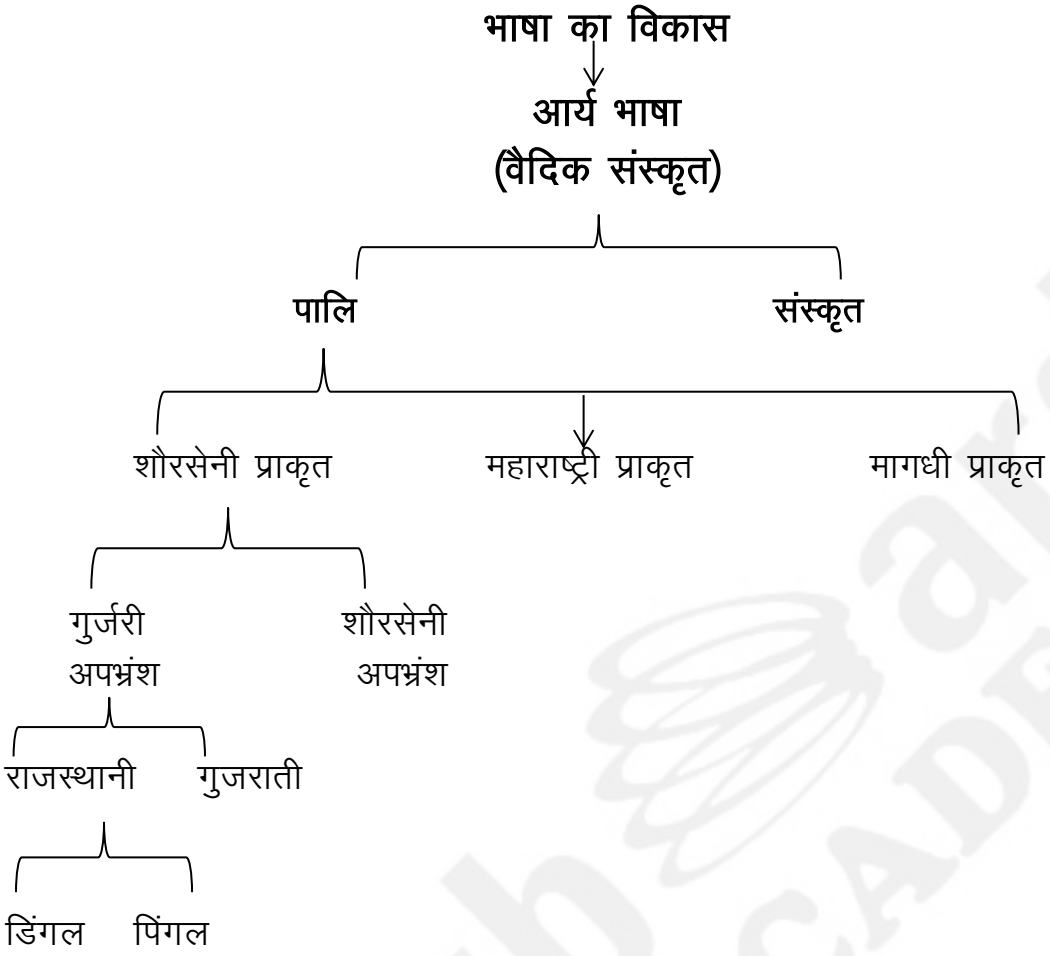


- राजस्थानी भाषा के विकास के संबंध में तीन अपभ्रंश भाषाओं का उल्लेख किया जाता है तथा प्रत्येक विद्वान अपने मतानुसार अपभ्रंश का उल्लेख करता है जिसमें 'शौरसेनी अपभ्रंश', 'नागर अपभ्रंश' तथा 'मरूगुर्जरी अपभ्रंश' का उल्लेख किया जाता है। इन सबमें से 'मरूगुर्जरी अपभ्रंश' का मत अधिक उचित लगता है क्योंकि 'मरूगुर्जरी अपभ्रंश' से ही मरूभाषा (राजस्थानी) तथा गुर्जरी से गुजराती भाषा का विकास हुआ।

### डिंगल

1. पश्चिमी राजस्थानी का साहित्यिक रूप।
2. राजस्थानी पर गुजराती भाषा का प्रभाव पर राजस्थानी का शुद्ध रूप।
3. वीर रस का प्रयोग अधिक।
4. चारण साहित्य का अधिक सृजन। जैसे – बांकीदास की रचनाएं।

### पिंगल

1. पूर्वी राजस्थान का साहित्यिक रूप।
2. राजस्थानी पर ब्रज भाषा का प्रभाव।
3. श्रृंगार रस का प्रयोग अधिक।
4. भट्ट कवियों की रचनाएं अधिक लिखी गई जैसे– पृथ्वी भट्ट (चन्दबरदाई) की पृथ्वीराज रासौ।

➢ **राजस्थानी भाषा का विकास :–**

- ❖ गुर्जरी अपभ्रंश – 11वीं से 13वीं शताब्दी तक ।
- ❖ प्राचीन राजस्थानी – 13वीं से 16वीं शताब्दी तक (जैन साहित्य)।
- ❖ मध्यकालीन राजस्थानी – 16वीं से 18वीं शताब्दी तक (चारण साहित्य)।
- ❖ आधुनिक राजस्थानी – 18वी शताब्दी से लेकर अब तक (विभिन्न विषयों पर)

➢ राजस्थानी साहित्य की इतिहास परम्परा को हम निम्न रूप में भी प्रस्तुत कर सकते है।

1. **प्राचीनकाल (वीरगाथा काल)** – 1050 ई. से 1450 ई. तक।

- इस काल में भारत पर निरन्तर पश्चिमी आक्रमण हुए जिनका सामना यहाँ के राजाओं ने किया। अतः विकट परिस्थितियों में संघर्ष की भावना बनाए रखने के लिए साहित्य में वीर नायकों का आदर्श प्रस्तुत किया गया। इस काल में जैन रचनाकारों की रचनाएं भी उल्लेखनीय रही है।
- श्रीधर व्यास की रणमल छन्द इस काल की महत्त्वपूर्ण रचना है।

2. **पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)** – 1450 ई. से 1650 ई. तक।

- राजस्थान के इतिहास में युद्धों ने धर्म व संस्कृति को व्यापक रूप से प्रभावित किया, तथा साम्राज्यवादी शासकों द्वारा धर्म के प्रचार–प्रसार की प्रवृति दिखाई दी। ऐसे समय में विभिन्न संतों ने अपनी कलम के माध्यम से भेदभाव रहित सद्समाज की कल्पना को मूर्तरूप प्रदान किया। भक्तिकाल की रचनाओं में दादूपंथी, रामस्नेही, अलखिया, जसनाथी आदि निर्गुण सम्प्रदायों के साथ मीराबाई के पद, पृथ्वीराज राठौड़ की 'वेलि किसण रूकमणि री' माधोदास दधवाडिया की 'रामरासों' ईसरदास की 'हरिरस' ओर 'देवियांण' सायांजी झूला की 'नागदमण' आदि सगुण रचनाएं है।

3. **उत्तर मध्य काल (शृंगार, रीति एवं नीति परक काल)**– 1650 ई. से 1850 ई. तक।

- अपेक्षाकृत शान्तिपूर्ण वातावरण में राजस्थान के शासकों ने साहित्यकारों को सरंक्षण प्रदान किया तथा इन साहित्यकारों ने साहित्य के विभिन्न आयामों का विकास किया।
- लोक में प्रचलित प्रेमाख्यानों को विभिन्न ग्रंथों के रूप में प्रस्तुत किया गया। काव्य शास्त्र से संबंधित रचनाओं में कवि मंछराम ने 'रघुनाथ रूपक' प्रस्तुत किया तथा

संबोधन परक नीति कारकों में 'राजिया रा सोरठा', 'चकरिया रा सोरठा', 'भेरिया रा सोरठा', 'मोतिया रा सोरठा' आदि रचनाएं प्रमुख है।

4. **आधुनिक काल (विविध विषयों एवं विधाओं से युक्त)** – 1850 ई. से अब तक।

- 1857 ई. की क्रान्ति के बाद समाज में नई चेतना का संचार हुआ। जिसका प्रभाव साहित्य पर भी देखने को मिला।
- राजस्थानी साहित्य में चेतना का शंखनाद मारवाड़ के कवि राजा बांकिदास और बूँदी के सूर्यमल्ल मीसण ने किया।

➢ ''उद्योतन सूरि'' ने 8वीं शताब्दी में ''कुवलयमाला'' नामक पुस्तक लिखी इसमें 18 भाषाओं का वर्णन है। जिनमें मरू भाषा भी शामिल है।

➢ ''अबुल फजल'' ने अपनी पुस्तक ''आइन–ए–अकबरी'' में मारवाड़ी भाषा का उल्लेख किया है।

➢ जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक Linguistic Survey of India में (1912) राजस्थानी भाषा का वर्णन किया।

| लेखक | पुस्तक |
|---|---|
| 1. वज्रसेन सुरि | भरतेश्वर बाहुबली घोर (राजस्थानी की सबसे प्राचीन किताब) |
| 2. शालिभद्र सूरि | भरतेश्वर बाहुबली रास (1184) (सन् बताने वाली सबसे प्राचीन राजस्थानी पुस्तक) |
| 3. नयनचन्द्र सूरि<br>ये ग्वालियर के तोमर राजा वीरम के दरबारी विद्वान थे। | हम्मीर महाकाव्य |
| 4. सारंगधर | हम्मीर रासौ |
| 5. जोधराज (नीमराणा के राजा चन्द्रभान के दरबारी विद्वान थे) | हम्मीर रासौ (अहीरवाटी भाषा में लिखी गई हैं।) |
| 6. गिरधर आसियाँ | सगत सिंघ रासौ (महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह का वर्णन है।) |
| 7. दलपत विजय | खुमाण रासौ (बापा रावल से लेकर राज सिंह तक का वर्णन है।) |

| | |
|---|---|
| 8. दयाल | राणा रासौ (बापा रावल से लेकर जयसिंह तक का वर्णन है।) |
| 9. नल्ल सिंह | विजयपाल रासौ (बयाना के राजा विजयपाल का वर्णन है।) |
| 10. डूँगरसिंह | शत्रुसाल रासौ (बूँदी के राजा शत्रुसाल का वर्णन) |
| 11. दुरसा आढ़ा (अकबर के दरबार में थे) इन्होनें महाराणा प्रताप एवं राव चन्द्रसेन के देशप्रेम की भावना का यशोगान किया है। | 1. विरूद छहतरि<br>2. किरतार बावनी<br>3. राव सुरताण रा कवित्त<br>4. विरम देव सोलंकी रा दूहा |
| 12. कवि कल्लोल | ढोला–मारू रा दूहा |
| 13. कुशललाभ (जैसलमेर के राजा हरराज के दरबार में था) | 1. ढोला–मारू री चौपाई<br>2. पिंगल शिरोमणि |
| 14. केशवदास गाडण (गजसिंह का दरबारी विद्वान) | 1. गजगुणरूपक<br>2. अमरसिंह जी रा दूहा<br>3. विवेक वार्ता (उपनिषदों पर टीका) |
| 15. जगजीवन भट्ट | 1. अजीतोदय (जोधपरु के राजा अजीतसिंह का वर्णन)<br>2. अभयोदय (जोधपुर के राजा अभयसिंह का वर्णन) |
| 16. जग्गा खिडिया | वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री रतनसिंह राठौड रतलाम का राजा था। जो धरमत के युद्ध में दारा की तरफ से औरंगजेब के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया था। |
| 17. कृपाराम खिड़िया (सीकर के राजा लक्ष्मणसिंह के दरबारी) | राजिया रा दूहा |
| 18. खेतसी सादूं | भाषा भारथ (महाभारत का डिंगल अनुवाद) |

| | |
|---|---|
| 19. मुरारिदास (जोधपुर राजा जसवन्तसिंह द्वितीय के दरबारी) | जसवन्त जसो भूषण (अलंकारो का अधिक प्रयोग) |
| 20. जान कवि (न्यामत खाँ) (फतेहपुर के कायमखानी नवाब थे) | कायम रासौ |
| 21. श्रीधर | रणमल छन्द<br>रणमल ईडर का राजा था। जिसने पाटन के सूबेदार जफर खाँ को हराया था। |
| 22. जोगीदास | हरि पिंगल प्रबन्ध (प्रतापगढ के राजा हरिसिंह का वर्णन) |
| 23. जिनराज सूरी | शालिभद्र रास, गजसुकमाल रास, कवयन्ना रास |
| 24. हरिनाभ | केसरी सिंह समर<br>केसरी सिंह खण्डेला का सामन्त था। |
| 25. वख्तावर जी<br>यह मेवाड़ महाराणा स्वरूप सिंह का दरबारी विद्वान था। | केहर प्रकास |
| 26. बादर ढाढी | वीरमायण (मारवाड़ के राजा वीरमदेव की जानकारी) |
| 27. कवि नरोत्तम | मान चरित्र रासौ (आमेर के राजा मानसिंह की जानकारी) |
| 28. आचार्य हरिभद्र सूरि | समराइच्चकहा (उज्जियिनी के राजा समरादित्य व अग्नि शर्मा की जानकारी) |
| 29. आचार्य मेरूतुंग | प्रबन्ध चिन्तामणि (पृथ्वीराज चौहान की जानकारी) |
| 30. जीवधर | अमरसार/अमररासौ (महाराणा प्रताप व अमरसिंह की जानकारी) |
| 31. हेमचन्द्र | महावीर चरित (कुमारपाल चालुक्य की जानकारी) |

| | |
|---|---|
| 32. द्वारिकादास भट्ट (सवाई प्रताप सिंह का दरबारी विद्वान) | रागचन्द्रिका |
| 33. सदाशिव भट्ट | राजविनोद (बीकानेर के कल्याणमल की जानकारी) |
| 34. छत्र कुवंरी (किशनगढ़ नरेश सांवतसिंह की पौत्री) | प्रेम विनोद। |
| 35. मुंशी भूसावन लाल | अमीरनामा (टोंक के अमीर खाँ की जानकारी) |
| 36. बख्तराम साह | बुद्धिविलास (जयपुर की स्थापना का वर्णन) |

## आधुनिक राजस्थानी साहित्य

| लेखक | पुस्तक |
|---|---|
| 1. सूर्यमल्ल मीसण (बूंदी के राजा रामसिंह द्वितीय के दरबारी)<br>इन्होनें राजस्थान में राष्ट्रवादी भावनाओं का संचार किया था। | वंश भास्कर, वीर सतसई, बलवन्त विलास, सती रासौ, छन्द मयूख, राम रंजाट |
| 2. कन्हैयालाल सेठिया<br>इनका जन्म 11 सितम्बर 1919 ई. को सुजानगढ़ (चुरू) में हुआ था। | पाथल और पीथल, धरती धौरा री, कूं कूं, मिंझर, निर्ग्रन्थ |
| 3. विजयदान देथा<br>बिज्जी :– बिज्जी उपनाम से प्रसिद्ध देथा को 1974 ई. में केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1992 ई. में भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार, 2002 ई. में बिहारी पुरस्कार, 2006 ई. में साहित्य चूड़ामणि पुरस्कार, 2007 ई. में पद्मश्री एवं 2012 ई. में राजस्थान रत्न से सम्मानित किया गया। उनकी एक | 1. बातां री फुलवारी (14 भाग), दुविधा<br>तीडो राव, मां रो बदलो, अलेखूं हिटलर, लजवन्ती, सपनप्रिया, अन्तराल, उलझन, बापू के तीन हत्यारे, चौधराईन की चतुराई, चरणदास चोर। |

| | |
|---|---|
| लोककथा पर मणि कौल ने पहले दुविधा फिल्म बनाई, फिर इसी कथा पर अमोल पालेकर ने पहेली नामक फिल्म बनाई। | |
| 4. लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत | माँझल रात, कै रे चकवा बात, टाबरां री बातां, अमोलक बातां, गिर ऊँचा ऊँचा गढ़ा, गजबण |
| 5. श्री लाल नथमल जोशी | एक बीदंणी दो बींद, परण्योडी कुवांरी धोरां रो धोरी (एल. पी. तेस्सीतोरी पर आधारित), आभै पटकी (विधवा विवाह की समस्या पर आधारित), सबड़का, मैंदी, कनीर अर गुलाब |
| 6. यादवेन्द्र शर्मा ''चन्द्र''<br>इन्होनें राजस्थान के सामन्ती अतीत का वर्णन किया है। | हूँ गोरी किण पीव री, खम्मा अन्नदाता जनानी ड्योढी, हजार घोड़ो का सवार, जमारो, ताश रो घर, मेहन्दी के फूल, चाँदा सेठाणी, समन्द अर थार, जोग संजोग, मिट्टी का कंलक। |
| 7. नारायण सिंह भाटी | मीरा, दुर्गादास, परमवीर, ओल्यू, बरसां सा डिगोड़ा डूँगर लांघिया |
| 8. रांघेय राघव | घरोन्दे, मुर्दो का टीला (मोहनजोदड़ो पर), कब तक पुकारू, आज की आवाज, काका |
| 9. शिवचन्द्र भरतिया<br>आधुनिक राजस्थानी का पहला साहित्यकार।<br>इन्हें राजस्थानी साहित्य का भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कहा जाता है। | 1. कनक सुन्दर (उपन्यास)<br>2. केसर विलास (नाटक)<br>3. विश्रान्त प्रवास (कहानी)<br>4. फाटका जंजाल<br>5. बुढापा की सगाई |
| 10. चन्द्र सिंह बिरकाली | लू, बादली, साँझ–बालासाद, कह – मुकरणी |

| | |
|---|---|
| 11. जहूर खाँ मेहर | राजस्थानी संस्कृति रा चितराम, अर्जुन आकी आँख, धर मंजला धर कोसां। |
| 12. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा।<br>राजस्थान के इतिहासकार एवं पुरातत्ववेत्ता गौरीशंकर हीराचन्द ओझा का जन्म 1863 ई. में रोहिड़ा (सिरोही) में हुआ था। प्राचीन लिपि का अच्छा ज्ञान होने के कारण इन्होने भारतीय प्राचीन लिपिमाला नामक ग्रन्थ की रचना की। अंग्रेजों ने इन्हें महामहोपाध्याय एवं रायबहादुर की उपाधि प्रदान की। | 1. प्राचीन लिपिमाला<br>2. राजपूताने का इतिहास<br>3. जेम्स टॉड का जीवन चरित |
| 13. चन्द्रधर शर्मा ''गुलेरी'' | 1. उसने कहा था |
| 14 मणिमधुकर | पग फेरों, सफेद मेमने, सोजती गेट, आलीजा धरा आज्यो |
| 15. रेवंतदान चारण<br>(इन्होनें सामन्ती शोषण के खिलाफ लिखा था) | 1. नेहरू ने ओलमो<br>2. बरखां बीनणी |
| 16. सत्यप्रकाश जोशी | 1. राधा – जहाँ आम राजस्थानी साहित्य में युद्धों का महिमा मण्डन किया गया है, वहीं 1960 ई. में रचित इस कविता में राधा भगवान कृष्ण को महाभारत का युद्ध रोकने की प्रार्थना करती है। इसलिए इसे युद्ध विरोधी कविता कहा जाता है।<br>2. बोल भारमली (महिला शक्तिकरण) |
| 17. उमरदान<br>इन्होने पाखण्डी साधुओं की आलोचना की थी।<br>छप्पनिया अकाल का वर्णन किया है। | 1. अमल रा औगण<br>2. दारू रा दोस<br>3. भजन री महिमा |

| | |
|---|---|
| 18. शंकर दान सामोर (राष्ट्रवादी चेतना का संचार किया।) | अंग्रेजा री नीत, देस दर्पण, भागीरथी महिमा, सगती सुजस। |
| 19. हिंगलाज दान कविया (राष्ट्रवादी चेतना का संचार किया।) | आखेट अपजस, मेहाई महिमा, दुर्गा बहतरी |
| 20. करणीदान बारठ | आदमी रा सींग, मंत्रीजी री बेटी, बड़ी बहनजी। |
| 21. मणि मधुकर | पगफेरो, सोजती गेट, आलीजा घरां आज्यों, सफेद मेमने, पत्तों की बिरादरी। |
| 22. मेघराज मुकुल | सैनाणी, चँवरी, कोडमदे, उमंग |
| 23. रामनाथ कविया | द्रौपदी विनय |
| 24. हमीदुल्ला खाँ | दरिन्दे, ख्याल भारमली |
| 25. हरिराम मीणा | हाँ, चाँद मेरा है, धूणी तपे तीर |
| 26. आईदान सिंह भाटी | आँख हिये रा हरियल सुपना, हँसतोडे होठां रो साँच। |
| 27. अन्नाराम सुदामा | मैकती काया, मुलकती धरती |
| 28. मन्नू भण्डारी | महाभोज, आपका बन्टी, खोटे सिक्के। |
| 29. चन्द्रप्रकाश देवल | पागी, कावड़, मारग |
| 30. गुलाबचन्द नागौरी | सगाई जंजाल, मारवाड़ी मौसर |
| 31. मुरारिदान | वंश समुच्चय, डिंगल कोष |
| 32. सीताराम लालस | राजस्थानी शब्द कोष |
| 33. लता शर्मा | सही नाप के जूते। |
| 34. हरिश भादाणी | बोलै सरणाटौ, बाथां में भूगोल |
| 35. तेजसिंह जोधा | कठैइ कीं व्हेगौ है |
| 36. पारस अरोडा | जुडाव |
| 37. गोर्वधन सिंह शेखावत | गाँव |
| 38. अर्जुनदेव चारण | रिन्दरोही |
| 39. मालचन्द तिवाडी | कीं उतर्‌यों है आभौ। |

# राजस्थानी साहित्य के प्रकार

1. ख्यात :– संस्कृत के ख्याति शब्द से बना है जिसका अर्थ ''प्रसिद्धि या लोकप्रियता'' होता है। देशी राज्यों के राजाओं ने अपने सम्मान, सफलताओं और विशेष कार्यों आदि के विवरण के रूप में अपना इतिहास लिखवा कर संचित किया है। यह इतिहास 'ख्यात' कहलाता है।
   - अकबर ने अबुल फजल द्वारा रचित अकबरनामा के समय विभिन्न राजाओं को अपने रियासतों का इतिहास भेजने के लिए कहा अतः उस समय राजस्थान में ख्यात निर्माण प्रारम्भ हुआ।
   - ख्यात दो प्रकार की होती है–
     a. सलंग्न ख्यात – इसमें राजाओं का क्रमानुसार वर्णन होता है। जैसे – दयालदास द्वारा रचित बीकानेर रा राठौडा री ख्यात।
     b. बात संग्रह – इसमें इतिहास की छोटी–बडी अलग अलग घटनाओं का संग्रह होता है। जैसे– नैणसी री ख्यात व बांकीदास री ख्यात।
   - ''मुंडियार री ख्यात'' नागौर के मुंडियार गाँव के चारण लेखकों द्वारा लिखि गई थी, तथा इसमें मारवाड़ के राठौड राजाओं का वर्णन है।
2. **वात** :– वात का अर्थ ''कहानी'' होता है। किसी ऐतिहासिक एवं पौराणिक पात्र की कहानियों को वात कहा जाता है जिसमें उस पात्र की उपलब्धियों का वर्णन होता है। कहानी की तरह वात कहने और सुनने की विशेष विधा है। कथा कहने वाला कहता चलता है और सुनने वाला 'हुँकार' (बीच–बीच में हाँ जैसे शब्दों का प्रयोग, जिससे कथाकार को लगे कि श्रोता रूचि ले रहा है) देता रहता है। इन वातों में जीवन के हर पक्ष, युद्ध, दर्शन, मनोरंजन पर प्रकाश डाला गया है। गद्यमय, पद्यमय, तथ गद्य पद्यमय तीनों रूपों में वातें मिलती है। 'राव अमरसिंहजी री वात', 'खीचियां री वात', 'पाबूजी री वात', 'कान्हड़दे री वात', 'अचलदास खींची री वात' वीरम देव सोनगरा री वात (पद्मनाभ), ढोलामारू री वात (कुशालचन्द) आदि प्रमुख वातें है।
3. **वचनिका** :– इन ग्रन्थों में किसी महापुरूष या किसी राजवंश की उपलब्धियों का वर्णन होता है। इन ग्रन्थों में उपभ्रंश मिश्रित राजस्थानी लिखी जाती है। संस्कृत के 'वचन' शब्द से बना 'वचनिका' शब्द का एक काव्य विधा के रूप में साहित्य में प्रचलित हुआ। 'वचनिका' एक ऐसी तुकान्त गद्य–पद्य रचना है जिसमें अंत्यानुप्रास मिलता है, यद्यपि इसके अपवाद भी मिलते है।
   उदाहरण :– अचलदास खींची री वचनिका, वचनिका राठौड रतनसिंह महेसदासोत री।
4. **दवावैत** :– राजस्थानी के वे ग्रन्थ जिनमें उर्दू एवं फारसी शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है, दवावैत कहलाते है। इसमें किसी महापुरूष की दोहों के रूप में प्रशंसा की जाती है। दवावैत कलात्मक गद्य का एक अन्य रूप है, जो वचनिका काव्य रूप की तरह ही है। वचनिका राजस्थानी में लिखी होती, किन्तु दवावैत उर्दू और फारसी के शब्दों से युक्त होती है। इनमें कथा के नायक का गुणगान, राज्य – वैभव, युद्ध, आखेट, नखशिख

आदि का वर्णन तुकान्त और प्रवाहयुक्त होता है। 'अखमाल देवड़ा री दवावैत', 'राजा जयसिंह री दवावैत' आदि प्रमुख दवावैत ग्रन्थ है।

5. **विगत** :– राजस्थानी भाषा में लिखे गये इतिहास के ग्रन्थ जिनमें आर्थिक, सामाजिक स्थिति का भी वर्णन होता है, विगत कहलाते है। विगत से किसी विषय का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। इसमें इतिहास की दृष्टि से शासक, उसके परिवार, राज्य के क्षेत्र प्रमुख व्यक्ति अथवा उनके राजनीतिक, सामाजिक व्यक्तित्व का वर्णन मिलता है। विगत में उपलब्ध आंकडे आर्थिक दृष्टि से भी उपयोगी रहे है। मुहणोत नैणसी की 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' में प्रत्येक परगने की आबादी, रेख, भूमि किस्म, फसलो का हाल, सिंचाई के साधन आदि की जानकारियाँ प्राप्त होती है।
6. **परची** :– संत महात्माओं का जीवन परिचय राजस्थानी भाषा में जिस पद्यबद्ध में मिलता है उसे परची कहा गया है। संत नामदेव री परची, 'कबीर री परची', 'संत रैदास री परची', 'संत पीपा री परची', 'संत दादू री परची', 'मीराबाई री परची' आदि प्रमुख परची रचनायें है।
7. **प्रकास** :– किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों या घटना विशेष पर प्रकाश डालने वाली कृतियों को प्रकास कहा गया है। किशोरदास का 'राजप्रकास', 'आशिया मानसिंह का' 'महायश प्रकास', कविया करणीदान का 'सूरज प्रकास' आदि प्रमुख ग्रन्थ है।
8. **मरस्या** :– राजा या किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद शोक व्यक्ति करने के लिए 'मरस्या' काव्यों की रचना की गई। इसमें उस व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के अतिरिक्त अन्य महान कार्यो का वर्णन भी किया जाता था। 'राणे जगपत रा मरस्या' मेवाड महाराणा जगतसिंह की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए लिखा गया था।
9. **रासो** :– मोतीलाल मेनरिया के अनुसार ''जिस काव्य ग्रन्थ में किसी राजा की कीर्ति', विजय, युद्ध, वीरता आदि का विस्तृत वर्णन हो, उसे रासों कहते है।'' रासो ग्रन्थों में चन्दबरदाई का 'पृथ्वीराज रासों', नरपति नाल्ह का 'बीसलदेव रासो', कुम्भकर्ण का रतन रासों, काशी छंगाणी का छत्रपति रासौ (मतीरे री राड़ का वर्णन), सीताराम रतनू का जवान रासौ प्रमुख है।
10. **रूपक** :– किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों के स्वरूप को दर्शाने वाली काव्य कृति रूपक कहलाती हैं 'गजगुणरूपक', 'रूपक गोगादेजी रो', 'राजरूपक' आदि प्रमुख रूपक काव्य है।
11. **साखी** :– साखी साक्षी शब्द से बना है। साखी परक रचनाओं में संत कवियों ने अपने द्वारा अनुभव किये गये ज्ञान का वर्णन किया है। साखियों में सोरठा छन्द का प्रयोग हुआ है। कबीर की साखियां प्रसिद्ध है।
12. **सिलोका** :– सिलोका साधारण पढ़े–लिखे लोगों द्वारा लिखे गये हैं, इसलिए ये जनसाधारण की भावनाओं को आमजन तक पहुँचते है। 'राव अमरसिंह रा सिलोका', 'अजमालजी रो सिलोको', 'राठौड़ कुसलसिंह रो सिलोको', आदि प्रमुख सिलोके है।

# राजस्थान के प्रसिद्ध मंदिर, मस्जिद, मेले, उर्स, हवेलियाँ

**1. ख्वाजा साहब का उर्सः–**

- अवधि – रज्जब महीने में पहली से छठी रज्जब के बीच
- भीलवाड़ा का गौरी परिवार ध्वजाध्झण्डा लेकर जाता है।

2. गलियाकोट उर्सः– डूंगरपुर में दाउफदी बोहरा मुसलमानों का पर्व
   - फखरूद्दीन की दरगाह पर यह उर्स लगता है।
3. तारीकिन का उर्स :– नागौर में शेख हमीदुद्दीन नागौरी की स्मृति में
   - तारीकिन का दरवाजा यहीं पर स्थित है।
4. नरहड़ के पीरः– झुंझुनूं हजरत शक्कर बाबा, जो 'बांगड़ के धनी' नाम से प्रसि( है।
   - कृष्ण जन्माष्टमी के दिन उर्स लगता है।
5. चोटीला पीर दुलेशाहः पाली
   - बांडी नदी के पास
6. मलिक शाह का उर्स :– जालौर
   - मलिक शाह : सोनगिरी किला
7. मीठेशाह की दरगाह : सांभर
8. फखरूद्दीन चिश्ती : अजमेर (सरवाड़)
9. हिसामुद्दीन की दरगाह : सांभर
10. हजरत गट्टे वाले बाबा : जयपुर
11. सदरूद्दीन की दरगाह : रणथम्भौर

## पशु मेले

1. मल्लिनाथ पशु मेला – तिलवाड़ा (बाड़मेर), चैत्र महीने में
2. तेजाजी पशु मेला – परबतसर (नागौर)
3. बलदेव पशुमेला – मेड़ता
4. बाबा रामदेव पशु मेला –मानसर
5. जसवन्त पशु मेला –झालरापाटन (झालावाड़)
6. गोमती सागर पशु मेला – गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)
7. चन्द्रभागा पशु मेला –झालरापाटन (झालावाड़)
8. गोगाजी पशु मेला –गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)
9. पुष्कर मेला – पुष्कर
10. महाशिवरात्रि पशु मेला – करौली

11. लुणियावास का पशु मेला – जयपुर में गधों एवं घोड़ों के लिए प्रसि(, खलकनी माता का मेला (एशिया का सबसे बड़ा गदर्भ मेला)
12. सबसे बड़ा घोड़ों का मेला –हनुमानगढ़
13. सेवडिया पशु मेला – रानीवाड़ा (जालौर)
14. बसन्ती पशु मेला – रूपवास (भरतपुर)
15. बाली पशु मेला– पाली (बाली)
16. बजरंग पशु मेला – उच्चैन (भरतपुर)
17. बजरंग पशु मेला – सिणधरी (बाड़मेर)
18. निमाज पशु मेला – निमाज (पाली)

## सिक्खों के मेले

1. बुड्ढ़ा जोहड़ (श्रावण अमावस्या)– डाबला गांव रायसिंह नगर, श्री गंगानगर
2. डांडा धडेरा पम्पाराम –विजय नगर
3. सहवा मेला (गुरूनानक जयन्ती)–सहवा (चुरू)

## आदिवासियों के मेले

1. बेणेश्वर मेला– नेवदा पाटन (डूंगरपुर), आदिवासियों का कुंभ, सोम–माही–जाखम के संगम पर, माघ की शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक गाय के खुर की पूजा की जाती है।
2. घोटिया अम्बा –बाँसवाड़ा, चैत्र की अमावस्या से शुक्ल पक्ष की द्वितीया, भीलों का सबसे बड़ा मेला । यहां अर्जुन के धनुष की पूजा होती है।
3. सीताबाड़ी, बांरा जिला–सहरिया जनजाति का मेला, अवधि ज्येष्ठ माह की अमावस्या, लव–कुश का जन्मस्थल।
4. अन्जारी, सिरोही–गरासियों का मेला, अवधि–वैशाख पूर्णिमाध्भाद्रपद शुक्ल की एकादशी, यहां मार्कण्डेश्वर (शिव) भगवान का मंदिर अवस्थित है।
5. गणेश मेला – रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर), त्रिनेत्र गणेश जी (रणत भँवर), गणेश चतुर्थी के दिन मेला लगता है।

**ऋषभदेव का मंदिर**

- 'आदिनाथ जी' भी कहते है।
- काले संगमरमर की मूर्ति से 'कालाजी' कहते है।
- वैष्णव, श्वेताम्बर व दिगम्बर परम्परा से पूजा की जाती है।
- आदिवासियों का कल्पवृक्ष 'महुआ'
- धुलेव भील ने इस मंदिर की स्थापना की।
- मंदिर के गुम्बद में घंटिया बजने की आवाज आती है।

6. दशहरा का मेला– कोटा
7. भर्तृहरि का मेला– अलवर (सरिस्का अभयारण्य), यहाँ चर्म रोग ठीक हो जाता है।

8. कल्याण जी का मेला– डिग्गी (टोंक), यह मंदिर जितना जमीन में है उतना ही बाहर भी है।
9. कुंडालिनी माता का मेला– राशमी गाँव (चित्तौड़)
10. शिवाड़ घुश्मेश्वर मेला– शिवाड़ (सवाई माधोपुर), 12 वां शिवलिंग जो पानी के अन्दर अवस्थित है।
11. मांगलियावास का मेला – मांगलियावास (अजमेर)
12. मचकुण्ड का मेला– (तीर्थों का भांजा)–मंचकुड (धौलपुर), इस पवित्र कुण्ड में सल्फर, गंधक एवं चूने की चट्टानों से चर्मरोग सही हो जाता है, यहाँ शेरशिकार गुरूद्वारा भी अवस्थित है।
13. पाण्डुपोल–अलवर, यहाँ लेटे हुए हनुमान जी का मंदिर स्थित है।
14. मेंहदीपुर बालाजी– दौसा
15. परशुराम महादेव, कुंभगलगढ़ – पाली कार्स्ट टॉपोग्राफी के लिए प्रसिद्ध ।

## प्रमुख मंदिर

1. किराडू के मंदिर (राजस्थान का खजुराहो)–हाथमा गाँव– बाड़मेर

- किराडू को 'जूना बाड़मेर' कहते है।
- 'किरात कूप' इसका प्राचीन नाम था।
- यह परमारों की राजधानी थी।
- नागर शैली/महामारू शैली
- किरात – शिव शिकारी के रूप में

2. ओसिया के मंदिर– ओसियां (जोधपुर)

- नागर शैली के उदाहरण है।
- यहाँ शैव, वैष्णव, जैन व शाक्त व सूर्य मंदिर भी है।
- 8-10 वीं शताब्दी में निर्मित

3. सूर्य मंदिर– झालावाड़ (झालरापाटन)

- इसे 'सात सहेलियों' का मंदिर भी कहते है।
- जेम्स टॉड ने इसे 'चारभुजा मंदिर' भी कहा है।
- 10वीं शताब्दी का बना हुआ है।
- इसे 'पद्मनाथ मंदिर' भी कहते है।

4. अर्थुना का मंदिर– बाँसवाड़ा ।

- परमारों की राजधाानी थी।
- 11वीं व 12वीं शताब्दी में बना है।

- प्रमुख मंदिर–हनुमान जी का मंदिर
- बागड़ का खजुराहो भी कहा जाता है।

5. रणकपुर के मंदिर– पाली ।

- धरणकशाह के द्वारा निर्मित मंदिर
- इसका शिल्पी देपाक था।
- 1444 स्तंभ है, जिनमें से एक स्तम्भ आज भी अधूरा है।
- इसके पास में एक वेश्याओं का मंदिर भी है। (नेमीनाथ मंदिर)
- यहाँ सूर्य मंदिर भी है।

6. देलवाड़ा के जैन मंदिर –आबू

**विमलशाही मंदिर**– चालुक्य शासक सोलंकीध्शासक के सेनापति भीमशाह ने 1301में इसका निर्माण करवाया। वर्ष 1213 में **नेमीनाथ मंदिर** का निर्माण वस्तुपाल व तेजपाल ने करवाया, जो चालुक्य राजा धवल के मंत्री थे। वास्तुपाल व तेजपाल की पत्नियों ने जिद्द करके एक मंदिर बनवाया, जिसे **देरानी जैठानी का मंदिर** भी कहते है।

- इस मंदिर में गुम्बद एवं ध्वजा नहीं चढ़ती है।
- जैन तीर्थंकर आदिनाथ की 108 मन की पीतल प्रतिमा स्थापित करके भीमाशाह ने मंदिर निर्माण करवाया।

7. पुष्कर मंदिरध्ब्रह्मा मंदिर–पुष्कर

- गोकुल चंद पारीक ने इस मंदिर को बनवाया था।
- पास में ही सावित्री माता का एक मंदिर है, जो भारत में एक ही है।
- कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है।
- ब्रह्माजी का दूसरा मंदिर आसोत्रा बाड़मेर में है। (सावित्री माता का मंदिर भी साथ में निर्मित है। )

खेताराम जी महाराज ने इस मंदिर का निर्माण करवाया।

- पुष्कर को 'कोंकण तीर्थ' भी कहते है।
- यहाँ रंगनाथ जी का मंदिर द्रविड़ शैली में बना हुआ है जिसकी शैव सम्प्रदाय पूजा करता है जो यहाँ की अनोखी परम्परा को दर्शाता है।
- छींछ (बाँसवाड़ा) में भी **किरड** नदी के किनारे ब्रह्मजी का मंदिर है, जिसे जगमाल ने बनवाया था।

8. एकलिंग–नाथ जी का मंदिर– कैलाशपुरी (उदयपुर)

- बप्पा रावल ने इसका निर्माण करवाया।

- 8वीं शताब्दी में निर्मित
- मेवाड़ राजपरिवार के इष्टदेव
- इसके समीप ही सहस्रबाहुध्सास बहू का मंदिर भी अवस्थित है।

9. नौ ग्रहों का मंदिर – किशनगढ़
10. सांवरिया जी का मंदिर– मंडपिया (चित्तौड़गढ़)– चोरों का मंदिर
11. हर्षद माता मंदिर– **आभानेरी** (दौसा)
12. नीलकण्ठ महादेव मंदिर– अलवर यहां गणेश जी की नृत्य अवस्था में प्रतिमा है।
13. कपिलमुनि का मंदिर– कोलायत(बीकानेर), कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है।, ये सांख्य दर्शन के प्रवर्तक थे।
14. अंबिका माता का मंदिर– उदयपुर, राजस्थान का 'मिनी खजुराहो' भी कहा जाता है, जो महामारू शैली में बना हुआ है।
15. हर्षनाथ का मंदिर– सीकर
16. कनसुआ का मंदिर– कोटा
17. महामंदिर– जोधपुर
18. सिरे मंदिर – जालौर, यहाँ जालन्धर नाथ की तपोस्थली भी स्थित है।
19. शीतलेश्वर महादेव मंदिर– झालावाड़ में, 689 ई.पू.का मंदिर
20. भांडासर मंदिर – बीकानेर
21. सतीवीभ मंदिर– चित्तौड़ में 11वीं शताब्दी में निर्मित जैन मंदिर
22. कुम्भ स्वामी मंदिर– चित्तौड़, पहले यह शिव मंदिर था जिसे कुम्भा ने बनवाया था।
23. सारणेश्वर मंदिर– सिरोही
24. बाजना गणेश – सिरोही
25. मुछाला महावीर का मंदिर– घाणेराव, पाली
26. खड़े गणेश जी का मंदिर– कोटा
27. भंडदेवरा मंदिर– बांरा (अटरू), 'हाड़ौती का खजुराहो' तथा 'राजस्थान का मिनी खजुराहो' नाम से प्रसि(
28. फूलदेवरा (मामा–भांजा)– बांरा
29. सुंधा माता मंदिर– जालौर
30. तैतीस करोड़ देवी–देवताओं की साल– मंडोर, यहाँ स्थित मूर्तियाँ अभय सिंह ने बनवाई थी।
31. सोनीजी की नसियां – अजमेर, इसे 'लाल मंदिर' भी कहते है। 1864 में मूलचंद सोनी ने बनवाई।
32. चनणी चेरी मेला– बीकानेर (देशनोक)
33. धनोप माता का मेला– शाहपुरा (भीलवाड़ा)

34. विक्रमादित्य मेला– उदयपुर
35. राम रावण मेला – बड़ी सादड़ी (चित्तौड़)
36. सेवड़िया पशु मेला– जालौर (रानीवाड़ा)
37. फूलडोल का मेला– शाहपुरा (भीलवाड़ा)
38. मातृकुण्डिया मेला– हर्षनाथपुरा (चित्तौड़)
39. गौरी मेला – सिरोही
40. गंगा दशहरा मेला– कामां (भरतपुर)
41. कजली तीज– बूँदी
42. बाबा रामदेव मेला– मसूरिया
43. भोजन थाली मेला – कामां (भरतपुर)
44. तीर्थराज मेला– धौलपुर
45. शहीद मेला – खेजड़ली (जोधपुर)
46. अन्नकूट मेला– नाथद्वारा (राजस्थान)
47. मीरा महोत्सव – चित्तौड़
48. गरूड़ मेला– बंशीपहाड़पुर (बयाना के पास),भरतपुर
49. सौरत मेला– मैनाल (भीलवाड़ा), इसे त्रिवेणी मेला भी कहते है।
50. तिलस्वा मेला– मांडलगढ़ (भीलवाड़ा)
51. डोल मेला–बांरा
52. विरात्रा माता–बाड़मेर
53. सुईया कपालेश्वर मेला– चौहटन (बाड़मेर), यहाँ श्रृ(ालु अपनी भुजा पर मठ और मेले की छाप लगवाते हैं।
54. गोतमेश्वर का मेला–अरनौद (प्रतापगढ़)
55. डोलची महोत्सव– दौसा
56. तीर्थों की नानी देवयानी– सांभर
57. लैला मजनूं का मेला– 27A गंगानगर
58. गौतम जी का मेला– सिरोही
59. बसंत पंचमी का मेला–दौसा, यहाँ अच्छी क्वालिटी के मिट्टी के बर्तन मिलते है।
60. जगदीश मेला– गोनेर (जयपुर)
61. सावित्री मेला – पुष्कर
62. थार महोत्सव
63. मरू महोत्सव – सम, जैसलमेर
64. डिग्गी मेला–टोंक

अभद्र मेला जहां भगवान को गालियां निकाली जाती है।

65. विभीषण मेला – कैथून (कोटा), यहाँ होली के दिन रावण का पुतला जलाया जाता है।
66. तुरताई माता (त्रिपुर सुंदरी)–बाँसवाड़ा
67. नाचना गणेश – अलवर
68. बाला पीर – कुम्हारी (नागौर), इनके खिलौने चढ़ते है।
69. हेरम्ब गणपति – बीकानेर
- जूनागढ़ के अंदर स्थित है।
- यहाँ पर शेर पर सवार गणेश जी की प्रतिमा है।

70. अर्बुदा देवी – आबू
- 'अधर देवी' भी कहा जाता है।
- बावन शक्ति पीठों में से एक

71. लक्ष्मण मंदिर– भरतपुर
72. रावण का मंदिर – मंडोर (जोधपुर), श्रीमाली ब्रह्माण पूजा करते है।
73. घोड़ों –गधों का मेला – भावबंध(जयपुर)
74. उफषा मंदिर– बयाना (भरतपुर)
75. भद्रकाली मंदिर– ब्रह्माणी माता मंदिर– पल्लू (हनुमानगढ़)
76. कल्की महाराज– बड़ी चौपड़ (जयपुर)
77. मालेश्वर मेला– महारकलां गाँव में अवस्थित(जयपुर), पाण्डवों द्वारा निर्मित मंदिर
78. मीर दातार की दरगाह– बूँदी
- जहां 41 मजारे बनी हुई है ऐसी मान्यता है कि जब कोटा ने बूँदी पर आक्रमण किया तब मीर दातार अपने शिष्यों के साथ लड़ते हुए शहीद हो गये। बूँदी के राजा राज्याभिषेक होने से पहले यहां आते थे।

80. पावापुरी जैन मंदिर – सिरोही
81. 72 जिनालय – भीनमाल (जालौर), यहाँ भारत के सबसे ज्यादा जैन मंदिर स्थित है।
82 खोड़ा गणेश –अजमेर
83. रोकड़िया गणेश – जैसलमेर
84. सूरजमल भौमियां जी – दौसा
- इनकी प्रतिमा उल्टी लटकी हुई है।

85. मालासी भैरूजी मंदिर– चुरू (मालासी)
86. बूढातीर्थ का सूर्य मंदिर–कोटा
87. शीतला माता मेला– शील डूंगरी , चाकसू (जयपुर)
88. श्री महावीर जी मेला– करौली (श्री महावीर जी)
89. बाण गंगा मेला– विराट नगर (जयपुर)
90. गोमती सागर मेला– झालरापाटन (झालावाड़)

91. चारभुजा नाथ (मीराबाई)मेला –मेड़ता सिटी (नागौर)
92. वीरपूरी मेला– मंडोर (जोधपुर)
93. चुंघी तीर्थ मेला– जैसलमेर
94. सवाई भोज मेला– आसींद (भीलवाड़ा)
95. कपिल धारा का मेला– सहरिया क्षेत्र (बांरा)
96. चौथ माता का मेला– चौथ का बरवाड़ा (सवाई माधोपुर)
97. शिवरात्रि मेला– शिवाड़ (सवाई मोधापुर)
98. खाटूश्यामजी मेला –सीकर
99. महोदरी माता मेला– मोदरान (जालौर)
100. मनसा माता का मेला– सीकर
101. इंद्रगढ़ध्बीजासन माता का मेला इन्द्रगढ़ (बूँदी)
102. सैपउफ मेला– धौलपुर
103. वन महोत्सव – भरतपुर

## पर्यटन विभाग

1- पंतग महोत्सव – जयपुर
2. उफँट महोत्सव –बीकानेर
3. मरू महोत्सव – जैसलमेर
4- हाथी महोत्सव – जयपुर
5- एडवेंचर स्पोर्ट्स – कोटा, बूँदी
6- मत्स्य उत्सव – अलवर
7- मेवाड़ महोत्सव – उदयपुर
8- दशहरा महोत्सव – कोटा
9- बागड़ मेला – डूंगरपुर
10- शेखावाटी महोत्सव – सीकर, चुरू, झुंझुनूं
11- शरद महोत्सव – आबू
12- बूँदी महोत्सव – बूँदी
13- कुंभलगढ़ शास्त्रीय उत्सव– कुंभलगढ़
14- आभानेरी उत्सव – दौसा
15- बेणेश्वर मेला – डूंगरपुर
16- महावीर मेला – करौली
17- चन्द्रभागा मेला – झालरापाटन (झालावाड़)
18- बैलून महोत्सव – बाड़मेर
19- थार महोत्सव – बाड़मेर
20- हिण्डोला महोत्सव – पुष्कर

## प्रमुख मस्जिदे

1- ईदगाह – जयपुर
2. मीठेशाह की दरगाह – गागरोन (झालावाड़)
3. मीरशाह अली की दरगाह – अजमेर
4. मल्लिक शाह की दरगाह – जालौर
5. गुलाब खां का मकबरा – जोधपुर
6. गुलाम कलन्दर – जोधपुर
7. गमता गाजी – जोधपुर
8. इकमिनार – जोधपुर
9. भूरे खां की मजार – मेहरानगढ़ (जोधपुर)

10. काकाजी पीर की दरगाह – प्रतापगढ़ 11. सै यद बादशाह – शिवगंज (सिरोही)

12. जामा मस्जिद – शाहबाद (बारां) 13. उषा मस्जिद – भरतपुर

14. मस्तान बाबा – सोजत (पाली), उदयपुर

15. ख्वाजा बादशाह खुदाबख्श की दरगाह – सादड़ी (पाली)

16. सफदरजंग की दरगाह – अलवर 17. अलाउद्दीन आलमशाह की दरगाह– अलवर (तिजारा)

18. बीबी जरीना का मकबरा – धौलपुर

19. सदरूद्दीन की दरगाह – रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर)

20. नेहर खां की मीनार – कोटा 21. शेख अब्दुल्ला अजीज मक्की की दरगाह – बूँदी

22. रजिया सुल्तान का मकबरा – टोंक 23. जामा मस्जिद – मालपुरा (टोंक)

24. अलीशाह पीर की दरगाह – दूदू (जयपुर) 25. अलाउद्दीन खिलजी की मस्जिद – जालौर

26. गूलर कालूदान की मीनार – जोधपुर 27. नालीसर मस्जिद– सांभर

28. मर्दान शाह पीर की दरगाह – रणथम्भौर (सवाई माधोपुर)

29. सै यद फखरूद्दीन की दरगाह – गलियाकोट (जोधपुर)

30. कबीर शाह की दरगाह – करौली

31. ख्वाजा नजमुद्दीन शाह की दरगाह – फतेहपुर (सीकर)

32. कमरूद्दीन शाह की दरगाह – झुंझुनूं 33. बाबा दौलत शाह की दरगाह – चौमूं (जयपुर)

34. हमीमुद्दीन नागौरी –नागौर 36. दुलेशाह की दरगाह – पाली

37. तारीकीन का उर्स – – नागौर (कादरी सम्प्रदाय)

38. पीर अब्दुल्ला की दरगाह – भगवानपुरा (बाँसवाड़ा)

39. दीवानशाह की दरगाह – कपासन (चित्तौड़), अजमेर के बाद बड़ा उर्स यही लगता है।

40. इमली वाले बाबा की दरगाह (चिश्ती के मामा)तालाधोला – ताला गांव (जयपुर)

41. शेख मौलाना जियाउद्दीन की दरगाह – जयपुर

42. हजरत शक्कर बाबा (इन्हे विष्णु का अवतार माना जाता है) – झुंझुंनू

43. अब्दुल्ला खां का मकबरा – अजमेर, इसके सामने बीबी का मकबरा है, सफेद संगमरमर से निर्मित

44. पंजाब शाह की दरगाह (एक मुसलमान फकीर की दरगाह) – अजमेर (अढ़ाई दिन का झोपड़ा में)
45. अब्बन शाह पीर (हजरत मकदूम पीर) – पीरपीजाल (सांचौर)
46. तन्हापीर की दरगाह – मंडोर (जोधपुर)
47. चलफिर शाह की दरगाह – चित्तौड़
48. के. बी. पीर – जहाजपुर (भीलवाड़ा)
49. फतेहजंग का गुम्बद – अलवर
50. नजमुद्दीन – अलवर
51. अब्दुल्ला पीर – भगवानपुरा (बाँसवाड़ा)
52. फखरूद्दीन चिश्ती की दरगाह – अजमेर (सरवाड़)
53. मदार शाह की दरगाह – अजमेर
54. हिंजड़े की मजार – अजमेर
55. मीरान साहब की दरगाह – अजमेर (घोड़े की मजार)

## हवेलियां

जैसलमेर (पांच जैन भाइयों ने मिलकर 19वीं सदी में बनाई)

1. पटवों की हवेली – जैसलमेरी पत्थर पर नक्काशी के लिए प्रसि(
2. नथमल की हवेली – 19वीं सदी में निर्मित
3. सालिम सिंह की हवेली – 38 झरोखे, 19वीं सदी में निर्मित
4. पोद्दारों की हवेली – मेहनसर (शराब के लिए प्रसि() सोने चांदी की नक्काशी के कारण सोने की दुकान कहते है।
5. गोयनका हवेली – रामगढ़ (सेठान)
6. पौद्दारों की हवेली– नवलगढ़ (सोने के कांच की मीनाकारी)
7. सुनहरी कोठी– टोंक (इब्राहिम अली खां द्वारा निर्मित)
8. राज महल – टोंक
9. मुबारक महल– टोंक (जयपुर)
10. उम्मेद भवन पैलेस – जोधपुर
11. एकथम्बा महल – जोधपुर
12. राइकाबाग पैलेस – जोधपुर
13. सूरसागर पैलेस – जोधपुर
14. अजीत भवन पैलेस – जोधपुर
15. सर्वोत्तम विलास – जैसलमेर
16. बछावतों की हवेली – बीकानेर
17. रामपुरिया की हवेली – बीकानेर
18. कोठारी की हवेली – बीकानेर

19. सुराणों की हवेली (हवामहल) – चुरू
20. रामविलास गोयनका – चुरू
21. सुख महल – बूँदी
22. रंग विलास (चित्रशाला, भित्ति चित्र)– बूँदी
23. गुलाब महल – कोटा
24. अबली मीणी का महल – कोटा
25. अभेड़ा महल – कोटा
26. झाला हवेली – कोटा
27. जगत निवास – उदयपुर
28. जग मंदिर – उदयपुर
29. मोती महल – उदयपुर
30. सिटी पैलेस – उदयपुर
31. बागौर हवेली – उदयपुर (दुनिया की सबसे बड़ी पगड़ी)
32. जोगी महल – रणथम्भौर
33. डीग महल – डीग
34. सावनभादो महल – डीग
35. गोपाल महल – डीग
36. जूना महल – डूंगरपुर
37. बादल महल – डूंगरपुर
38. एक थंबिया महल– डूंगरपुर (गैब सागर के पास)
39. हवा बंगला – तिजारा (अलवर)

Springboard ACADEMY